भूमिका।

पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज, स्थानकवासी जैन ससार के प्रकाशमान सूर्य हैं। कोई विरलाही ऐसा शिक्षित जैन व्यक्ति मिलेगा, जो आपके शुभ नामसे किसी न किसी रूप में थोड़ा बहुत परिचित न हो। जैनसाहित्य की शोभा वृद्धि में आपका एक विशेष स्थान हैं। आपका सबसे बड़ा और सबसे महत्व पूर्ण साहित्य कार्य है, सम्पूर्ण३२ जैनागमोंकेहिन्दी भाषान्तर का। यह अनुवाद माला, भारतमें ही नहीं जर्मन आदि विदेशोमें भी पहुची है और इसे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। किंबहुना, इस शास्त्रोद्धार के लिये जैनसमाज आपका अत्यन्त कृतज्ञ एव चिर ऋणी है।

प्रस्तुत पुस्तक भी आपकी ही कृति है। इसकी रचना सबकी सब पद्य में है और वह है प्राचीन ढालों में। अत. प्राचीन रास पद्धति के प्रेमी सज्जनों और व्याख्याता साधु साधवियों के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। पूज्य श्री की यह रचना बहुत पुरानी है। अतएव भाषा भी कुछ पुरानी ही है, परन्तु ऐसी नहीं कि समझ में ही नहीं आवे। ज़रा-सा ध्यान देने पर, खड़ी बोली के अभ्यासी सज्जनों के भी सहज ही समझ में आसकती है।

श्रोताओं तथा पाठकों के हृदय पट पर, सब से अधिक असर डालने वाले ग्रंथ, चरित्रात्मक होते हैं। बड़ी आसानी के साथ, कथा के रूप में सदाचार का पाठ पढ़ाना, चरित्र ग्रंथों का ही काम है। प्राचीन युग में सैंकड़ों–सहस्रों ऐसे नर रत्न हुये हैं; जिन्होंने पूर्व महापुरुषों की चरित्र कथाओं के प्रताप से ही अपने आपको पवित्र, प्रतापी एवं समुज्ज्वल बनाया और संसार के महापुरुषों की गणना में अग्रस्थान प्राप्त किया। पाठकों के करकमलों में पहुंचने वाली यह पुस्तक भी चरित्रात्मक है। इस में नवम वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के श्रेष्ठ पुत्र श्री प्रद्युम्न कुमार का जीवन चरित्र है। पुण्य क्या वस्तु है? उससे किन किन शुभ फलों की प्राप्ति होती है? सांसारिक सुखोपभोगों का वास्तविक स्वरूप क्या है? पौद्गलिक सुखों के मौजूद होनेपर भी उन्हें छोड़कर मोक्ष के लिये क्यों प्रयत्न करना चाहिये? पुण्य वस्तुतः बन्धरूप होने पर भी, वह मोक्ष प्राप्ति में किस प्रकार सहायक होता है? पुण्यकी उपादेयता कहाँ और किस सीमा तक है? आदि आदि ज्ञातव्य विषयों पर उक्त जीवन चरित्र के द्वारा काफी मननयोग्य प्रकाश पड़ता है। अस्तु चरित्र–प्रेमी पाठकों से आशा है कि वे अवश्य ही प्रद्युम्नचरित्र से कुछ–न कुछ शिक्षा लेंगे और उन्हें अपने जीवन में उतार कर विमल पुण्य के भागी बनेंगे। महापुरुषों का जीवन कुछ पढ़ने लिखने तथा सुनने सुनाने की ही वस्तु नहीं है। वह तो पद पद पर कार्य पथ में सम्मुख रखने की वस्तु है।

यदि यह बात नहीं है तो समझलो जीवन चरित्र व्यर्थ है। व्यर्थ एक प्रकार से त्याज्य है। परन्तु हमें अपने पाठको से ऐसी आशा नहीं है। जो आशा है वह पहले लिखदी है। उसी के द्वारा ग्रथ कर्ता का, प्रकाशक का तथा पाठकों का परिश्रम सफल हो सकेगा।

यहाँ, एक बात और स्मरणीय है। वह यह कि इस पुस्तक का सपादन तथा प्रूफ संशोधन आदि कार्य, श्री मनोहर सप्रदायी वर्तमान जैनाचार्य पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज के प्रशिष्य तथा प० श्री पृथ्वीचद जी महाराज के शिष्य कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज ने किया है। आप श्री सस्कृत प्राकृत के मान्य विद्वान् और कवि एव सुन्दर लेखक हैं। आपकी बनाई हुई अनेक पुस्तकें हैं, जो श्रीमान् लाला जी की ओर से प्रकाशित हुई हैं। आपने अपना बहु मूल्य समय देकर, जो यह साहित्य सेवा बजाई है, उसके लिये हम मुनिश्री के अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

निवेदक—

मंत्री—

ऋषि श्रावक समिति

" गरीयसी वै भुवि मातृ-शक्तिः "

अम्माजी, श्रीमती "भगवती देवीजी" की संक्षिप्त जीवन कथा।

— ० —

आप-पटियाला स्टेट अन्तर्गत महेन्द्रगढ़ नगर के निवासी अग्रवाल वंशावतंस दक्षिण हैदराबाद के बादशाह हि० हा० सरकार महबूब अली शाह के खास खजानदार एवं खास जौहरी, "राजाबहादुर" के प्रतिष्ठित पद से समलंकृत श्री जैनसाधुमार्गी धर्म के स्तंभस्वरूप, श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन कॉन्फ्रेंस का चतुर्थ अधिवेशन अपने निजी खर्चे से कराने वाले, अनेकानेक संस्थाओं एवं सभाओं को सहस्राधिक सम्पत्ति भेंट देनेवाले, जैनधर्म के परमादरणीय बत्तीस सूत्रों के उद्धारक-अमूल्य प्रकाशनका कार्य करनेवाले, श्रीमान् लाला साहब श्री सुखदेवसहायजी की धर्मपत्नी थी। आपका जन्म संवत् १९२० में और लग्न सम्बन्ध-अर्थात् विवाह संवत् १९३२ में हुआ था। आपकी जन्मभूमि शहर नारनौल है जो राज्य पटियाला में ही है और महेन्द्रगढ़ से करीब १० कोस की दूरीपर है।

आप सुशीला, पतिभक्ता सेवाप्रिय और सरल स्वभावी महिला थी। इतनी अधिक लक्ष्मी सम्पन्न होते हुए भी आपकी विनयशीलता आदर्श रूपथी। अभिमानतो आपको छू तक नहीं गया था। आपकी इसी आदर्श संस्कृति का परिचय आजभी आपकी सुपुत्री श्रीमती मनोरमाबाई और पुत्रवर लाला ज्वालाप्रसादजी में प्राय स्पष्टतया मिलता है।

श्रीमती अनारबाई धर्मनिष्ठ और उदार प्रकृति की श्राविका है। आपका रहन सहन और खान
पान सर्वथा सादा है। आपने गृहस्थ धर्म के बारह व्रत धारण किये हुये हैं और उनके शुद्ध पालन के
लिये सदा दत्त चित्त रहती है। धार्मिक साहित्य के प्रति आपका प्रेम बहुत अधिक है और इस
विषय की आपकी जानकारी भी वस्तुतः सराहनीय है। किं बहुना, आप एक विदुषी, दयार्द्र हृदया,
विनम्र बहन हैं।

श्रीमान लाला ज्वालाप्रसादजी, अपने व्यक्तित्व के एक आदरणीय पुरुष हैं। आपका स्व-
भाव सरल शान्त है। छोटे से छोटे व्यक्ति का भी सस्नेह सत्कार करना,—आपकी वह आदरणीय
विशेषता है, जो श्रीमानों में विरल ही कहीं मिलती है। श्रीमान होकर भी निरभिमानी होना—यह एक
आदर्श व्यक्तित्व है। आपका रहन सहन इतना सादा और सादा है कि, आपको देखने वाला व्यक्ति
सहसा आश्चर्य चकित हो जाता है। आप बड़े ही कोमल हृदय के पुरुष हैं। कितने ही असहाय
मनुष्यों का आपकी तरफ से पालन होता है। महेन्द्रगढ में आपकी तरफ से दानशाला लगी हुई है,
जहाँ से अनेक दीन हीन मनुष्य, नित्यप्रति भोजन पाते हैं और आपको हृदय से आशीर्वाद देते हैं।
आपका साहित्य प्रेम प्रशंसनीय है। आजतक सैकड़ों छोटे बड़े ग्रन्थ और जैनधर्म के परममान्य ३२
सूत्र, आपकी ओर से अमूल्य वितरण हुये हैं। अब भी प्रतिवर्ष प्रायः कोई न कोई पुस्तक प्रकाशित
होती ही रहती है। साधु साध्वियों के प्रति होनेवाली आपकी भक्ति अपूर्व है। अनेक दीक्षा महोत्सव
आपकी तरफ से हुये हैं और प्रतापी पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज का महेन्द्रगढ में तथा शास्त्रोद्धारक

" गरीयसी वै भुवि मातृ-शक्तिः "

अम्माजी, श्रीमती "भगवती देवीजी" की संक्षिप्त जीवन कथा।

— ० —

आप-पटियाला स्टेट अन्तर्गत महेन्द्रगढ़ नगर के निवासी अग्रवाल वंशावतंस दक्षिण हैदराबाद के सुप्रसिद्ध हि० हा० सरकार महबूब अली खान के खास सम्राटकार एवं खास चौधरी, "राजाबहादुर के प्रतिष्ठित पद से समलंकृत श्री जैनसाधुमार्गी धर्म के स्तंभस्वरूप, श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का चतुर्थ अधिवेशन अपने निजी खर्च से कराने वाले, अनेकानेक संस्थाओं एवं सभाओं को सहस्राधिक सम्पत्ति भेंट देनेवाले, जैनधर्म के परमादरणीय बत्तीस सूत्रों के उद्धारक-अमूल्य प्रकाशनका कार्य करनेवाले, श्रीमान् लाला साहब श्री सुखदेवसहायजी की धर्मपत्नी थी। आपका जन्म संवत् १९२० में और लग्न सम्बन्ध-अर्थात् विवाह संवत् १९३२ में हुआ था। आपकी जन्मभूमि शहर नारनौल है जो राज्य पटियाला में ही है और महेन्द्रगढ़ से करीब १० कोश की दूरीपर है।

आप सुशीला, पतिभक्ता सेवाप्रिय और सरल स्वभावी महिला थी। इतनी अधिक लक्ष्मी संपन्न होते हुयभी, आपकी विनयशीलता आदर्श रूपथी। अभिमानतो आपको छू तक नहीं गया था। आपकी इसी आदर्श संस्कृति का परिचय आजभी आपकी सुपुत्री श्रीमती मनारबाई और पुत्ररत्न लाला ज्वालाप्रसादजी से आप स्वतन्त्र मिलरहा है।

परसत्कार पृ केवाली योग्य कार्य स्वयं अम्माजी ने ही किये थे और आप खुद भी
उसके प्रतिलेखन, मालिस, प्रतिष्ठापन आदि कार्य स्वयं अम्माजी ने ही किये थे और आप खुद भी
तपस्विनी थीं। नव उपवास तक की तपश्चर्या खुद ने की थी। आपकी उदारता तथा धर्म प्रेम
सराहनीय व अनुकरणीय था। जब लालाजी साहब किसी भी धर्म कार्य में द्रव्य व्यय करते और वह
आपके जानने में आता, तब आप सहर्ष उसकी अनुमोदना करतीं। इतनाही नहीं स्वयभी उदारता
पूर्वक बहुत कुछ दान करती थी। संवत् १९८१ के ज्येष्ठ में स्थविर महात्मा श्रीरत्नऋषि जी महाराज,
शास्त्रोद्धारक श्री अमोलक ऋषि जी महाराज, और पण्डितरत्न श्री आनद ऋषिजी महाराज आदि
ठा० ६ मिरज गाँव (अहमद नगर) में विराजमान थे, तब आप सपरिवार दर्शनार्थ गई थीं। वहां
२१००) रुपये पाथरडो (अहमद नगर) की श्री तिलोक जैन पाठशाला को आपने दिये थे। और
स० १९८५ का चतुर्मास श्री अमोलक ऋषि जी महाराज का मनमाड (नासिक) में था, वहां भी
सपरिवार दर्शनार्थ गई और २५००) रुपये दान धर्म में सद्व्यय किये। तथैव संवत् १९९० के चैत्र
वैशाख में अजमेर बृहत्साधु सम्मेलन के समय, अपने सुपुत्र के साथ पहुंची थी और स्वतंत्र मकान
लेकर सपूर्ण परिवार के साथ वहां रही थी। ऐसे अपूर्व अवसर पर, चौदेही प्रकार के दान की वस्तु
का सग्रह आपके यहां था। सैंकड़ों साधु साधवियों को अढलक भाव से प्रतिलाभकर, अद्वितीय लाभ
प्राप्त करती थीं। उस समय साधु साधवियों ने लालाजी के घर का नाम 'कुतिया वण की हाट'
रक्खा था। अर्थात् जिस समय जो वस्तु चाहिये, उस समय उसी वस्तु का जोग प्रायः लालाजी के
घर से मिलता था। यही नहीं, प्रतिदिन १००–१५० स्वधर्मियों का भोजन भी आपके घर होता था।
अजमेर पधारे हुये चतुर्विध संघ तथा जैनेतर लोग भी कहते थे कि जैसा दान और सेवा का लाभ

पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज का इन्दौर (मालवा) में आचार्य पदारोहण महोत्सव का अगण्य काम आपने उठाया है। गुरुकुल पंचकूला को, आपकी तरफ से मोटी सहायता मिली है। आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में गुरुकुल समाज की तरफ से आपको 'जैन समाज भूषण' की पदवी मिली है। जैसे धर्मनिष्ठ लालाजी हैं वैसे ही उनकी धर्मपत्नी भी धर्मनिष्ठ और उदार हृदया है। आप गुरुभक्ति में इस ओर सभी से प्रशंसित पदमपाती हैं। आप जैसी स्वभाव सुकम ऐसी और नर्म आपमें देखने को नहीं मिलता। आपकी दान धर्मकी वृत्ति, विलक्षण और आदर्श मिलनसारी है। और लालाजी की चतुरता और सुलक्षणपाई दो पुत्री हैं—जो व्यवहार विधा में निपुण, सामायिक प्रतिक्रमण—थोकड़ा—बोल विचार—स्तवन—आदि धार्मिक ज्ञानकी ज्ञाता तथा समस्त स्वभावी मिलनसार हैं। लालाजी के दो पुत्र हैं, चि० माणकचन्द और चि० महावीरप्रसाद। दोनों ही पुत्र 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' के कथनानुसार, निकट भविष्य में ही समाज के कार्य क्षेत्र में अपनी अलौकिक प्रभा फैलाने वाले हैं। लालाजी के मनोज्ञ लाला सम्पतप्रसादजी हैं। आप व्यापारदक्ष, विद्वान् और धर्मनिष्ठ सरदार हैं। इस प्रकार अम्माजी का परिवार सपत्र सब सुविनीत और धर्म कर्म में तत्पर है।

अम्माजी कार्य करने में स्वावलम्बिनी थी। अनेक नौकर नौकरानियों के होते हुए भी प्रायः स्वयं ही काम करना पसंद करती थी। नौकरानियों से भी हुकम मात्र से नहीं, किन्तु साथ लगकर काम कराती थी। जिस समय (सं० १९६१ में) तपस्विराज श्री केवल ऋषिजी महाराज वाल ब्रह्मचारी श्री अमोलक ऋषिजी महाराज, ठाणे २ का चातुर्मास हैदराबाद में था उस समय चार गोत्रवाली सोनाबाई ने मास खमण तप किया था। उसे अपनी हवेली में ही रक्खा था और

उसके प्रतिलेखन, मालिस, प्रतिष्ठापन आदि कार्य स्वयं अम्माजी ने ही किये थे और आप खुद भी तपस्विनी थीं। नव उपवास तक की तपश्चर्या खुद ने की थी। आपकी उदारता तथा धर्म प्रेम सराहनीय व अनुकरणीय था। जब लालाजी साहब किसी भी धर्म कार्य में द्रव्य व्यय करते और वह आपके जानने में आता, तब आप सहर्ष उसकी अनुमोदना करतीं। इतनाही नहीं स्वयंभी उदारता पूर्वक बहुत कुछ दान करती थी। संवत् १९८१ के ज्येष्ठ में स्थविर महात्मा श्रीरत्नऋषि जी महाराज, शास्त्रोद्धारक श्री अमोलक ऋषि जी महाराज, और पण्डितरत्न श्री आनंद ऋषिजी महाराज आदि ठा० ६ मिरज गॉव (अहमद नगर) में विराजमान थे, तब आप सपरिवार दर्शनार्थ गई थीं। वहां २१००) रुपये पाथरडो (अहमद नगर) की श्री तिलोक जैन पाठशाला को आपने दिये थे। और सं० १९८५ का चतुर्मास श्री अमोलक ऋषि जी महाराज का मनमाड (नासिक) में था, वहां भी सपरिवार दर्शनार्थ गई और २५००) रुपये दान धर्म में सद्व्यय किये। तथैव संवत् १९९० के चैत्र वैशाख में अजमेर बृहत्साधु सम्मेलन के समय, अपने सुपुत्र के साथ पहुची थी और स्वतंत्र मकान लेकर सपूर्ण परिवार के साथ वहा रही थी। ऐसे अपूर्व अवसर पर, चौदेही प्रकार के दान की वस्तु का संग्रह आपके यहा था। सैंकड़ों साधु साधवियों को अढलक भाव से प्रतिलाभकर, अद्वितीय लाभ प्राप्त करती थीं। उस समय साधु साधवियों ने लालाजी के घर का नाम 'कुतिया वण की हाट' रक्खा था। अर्थात् जिस समय जो वस्तु चाहिये, उस समय उसी वस्तु का जोग प्रायः लालाजी के घर से मिलता था। यही नहीं, प्रतिदिन १००–१५० स्वधर्मियों का भोजन भी आपके घर होता था। अजमेर पधारे हुये चतुर्विध संघ तथा जैनेतर लोग भी कहते थे कि जैसा दान और सेवा का लाभ

शिष्य पं० श्रीपृथ्वीचन्द जी महाराज, कविराज श्री अमरचन्द जी महाराज आदि के परिवार से स्थिर वास रहे हुये हैं। उनकी वस्त्र, पात्र आहार, औषधोपचार आदि द्वारा यथोचित श्रद्धा भक्ति से सेवा की। इस भाँति अम्माजी ने अपने जीवन का विशेष समय धर्माराधन में, और परोपकार में ही विताया। इसी धर्माराधन का प्रताप था कि जो अवसर महापुरुषों को भी प्राप्त होना मुशकिल है, वह अम्माजी को प्राप्त हुआ। अर्थात् विशेष रोगग्रस्त न होते हुये, अपनी इच्छा से ही पहले सागारी और पश्चात् अनगारी अनशनव्रत (संथारा) किया और अन्तिम समय तक शुद्ध ध्यान पूर्वक परमेष्ठी स्तवन सुनती रहीं। अस्तु, संवत् १९९० का मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदशी की रात्रि में इस नश्वर शरीर को त्याग कर विशिष्ट देवगती प्राप्त की। अम्माजी के जीवन का प्रारभ, जीवन का मध्य, और जीवन का अन्त तीनों ही सुखमय, आनन्दमय एवं मंगलमय रहे। तीनों का सुखमय साम्य किसी विरले ही भाग्यवान् व्यक्ति को मिलता है।

धन्य है, ऐसी आदर्शरूप जैन आर्य माताजी को। गृहस्थ में बैठे हुये भी-भोग विलास के यथेष्ट साधन होते हुये भी, अपने जीवन के ध्येय को त्याग की ओर ही झुकाते जाना, वस्तुतः आर्य माताओं का सर्व श्रेष्ठ आदर्श कार्य है। उन्हीं की पवित्र स्मृति में, यह श्री प्रद्युम्न कुमार का चरित्र लाला जी ने छपाया है और पाठकों के कर कमलों में उपहार स्वरूप अर्पण किया है। पुण्यवान की स्मृति में, पुण्यवान का जीवन चरित्र, पुण्यवान के द्वाराही प्रकाशित होरहा है। कितना सुन्दर एवं सरस संमिलन है।

निवेदक—

मंत्री— ऋषि श्रावक समिति

ॐ

श्री पुण्य कल्पद्रुम

श्री प्रद्युम्न कुमार चरित्र

प्रथम स्कंध ।

॥ दोहा ॥ सकल कुशल दाता प्रभू, प्रणमुं हित धर चरन । जय जय नित जिनवर तणी, आनन्द मंगल करन ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्यजी, उपाध्याय सब साध । लब्धि निधी गौतम गुरू, बक्सो सुख समाध ॥ २ ॥ श्री गुरुदाता ज्ञान के, तरण तारण जग मांय । अज्ञान तिमिर म्हारो हर्यो, प्रणमुं तेहना पाय ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी माँ म्हेर कर, आपो सुद्ध बुद्ध सार । मम इच्छा पूरण करो, सभा मोहन अधिकार ॥ ४ ॥ सर्व सुज्येष्ठ

प्रणमी करी, आंपी मन आनन्द । पुण्यकल्पद्रुम वरणवुं, प्रद्युम्न कुमार समंद ॥ ५ ॥
पुण्ये सब सुख संपजे, पुण्यथी पावे धर्म । पुण्ये होवे निर्जरा, पावे शिवपुर शर्म ॥ ६ ॥
सब ग्रंथे परशासियो, सर्व मंगी सुखदाय । सर्व संपत्ती कारणों, एकही पुण्य देखाय ॥७॥
किस विध पुण्य उपराजियो, किस विध फलियो तेह । प्रद्युम्न कुमार तणी कथा, वरणुं
ई सस्नेह ॥ ८ ॥ श्रोता चित्त लगाय के, सिकथा आलस छोड । पुण्यतणी महिमा सुणो,
आणी अधिकी कोड ॥ ९ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ (निर्मल शुद्ध समकित जिन पाइ—ए देशी) सुणजो श्रोता चित्त
लगाई, भाई पुण्य सदा सुखदाई ॥ टेक ॥ मध्य लोकमां मध्य द्वीप है, जम्बू नाम सुहाई ।
लख योजन को लांबो पोहलो, गिरि नदी क्षेत्रे सोभाई ॥ सु० १ ॥ तिण तणां एकसो ने
नब्बद, खंडे एक खंड मांई । दक्षिण दिश चूल हेम समीपे, भरत क्षेत्र है भाई ॥ सु०,५ ॥
गंगा सिन्धू ने वेताढे, षट खंड रहा बेचाई । बत्तीस हजार देश सिर शेहरो, सोरठ देश
गवाई ॥ सु० ३ ॥ खुद वैश्रवण देव वसाई, देवलोक की नकल बनाई । द्वारावती क्षिति
भूषण नगरी, तिहुं खंड में प्रगटाई ॥ सु० ४ ॥ बारा योजन लांब पणे अरु, नव योजन
चोडाई । सोवन कोट रतन के कंगूरे, सब मनसठ चोलाई ॥ सु० ५ ॥ अष्टापद कर गढ

तस ऊँचो, मोटी बुरज चौडी खाई । दारू गोला तोफ शतघ्नी, पहरादार सिपाई ॥ सु० ६ ॥
चौतरफे बहु बाग़ बगीचा, वृक्ष बेल फल फूल भरचाई । स्वच्छ सुगन्धित जलयुत सरवर,
पशु पक्षी किलोल करें आई ॥ सु० ७ ॥ खण्डत्रयाधिप नृप हरि हलधर, वासुदेव बल
पद पाई । सकल राज लक्षण गुण पूरा, शत्रु रह्या धूजाई ॥ सु० ८ ॥ एक बीस मंजला
महला कृष्ण का, बलजी के मंजल अठाराई । दश दसार के नव मंजलिया, बीजाने सात
मंजलाई ॥ सु० ९ ॥ बत्तीस हजार राणी मुरारी के, बलजी के सहश्र सोलाई । बोहोत्र
हजार राणी वसुदेव के, देखी लाजें अपछराई ॥ सु० १० ॥ साठ क्रोड़ घर गाम के मांही,
क्रोड बहत्तर बाहराई । एक अर्ब बत्तीस क्रोड़ घर की, छटा रही है अति छाई ॥ सु० ११ ॥
महापुण्यवंता लोक बसे तहां, दानी धर्मी श्री पाई । शील संतोप विनय गुण शोभित,
पतिव्रत धर्मरता बाई ॥ सु० १२ ॥ धन धान्यादिक पूर्ण भवन सब, शोभा वरणी न जाई ।
स्वचक्री परचक्री भय नां, सुखी प्रजा सर्वदाई ॥ सु० १३ ॥ आठ पटराणी यादवपति के,
रुक्मणी सतभामाई । जाम्बवती लक्ष्मणा ने सुसमा, गोरी गंधारी पद्माई ॥ सु० १४ ॥
सोक सरीखो वैर जगत में, दूजो नहीं देखाई । दुख साले नित शूली समाणो, ते हिव देवूं
बताई ॥ सु० १५ ॥ गिरिधर मनहरणी शुभवरणी, रुक्मणी अति सुहाई । खान पान शयन

तिण घर, सनमाने तिण ताई ॥ सु० १६ ॥ ते देखी मन सुणीने मामा, अंगे अधि
प्रबलाई । आर्त घ्यावे दुख न समावे, किस आगे न कहवाई ॥ सु० १७ ॥ एक दिन कुरु
जंगल को महीपति, दुर्योधन नाम भलाई । खत लिखीने कासीद भेजा, ते आयो द्वाराई
॥ सु० १८ ॥ पत्र आ मेल्यो सामे मुकवके, जय विजय शब्द बधाई । वांचे कागद प्रेमो-
त्सुक हो, समाचार है कांई ॥ सु० १९ ॥ आप पटराणी अथवा म्हारे, होवे कुमरी कुमराई ।
तो निश्चय आपसमें करणी, तिणरी व्याह सगाई ॥ सु० २० ॥ वांची पत्र हर्पे द्वारापति,
प्रमाण बात हम ताई । पाछे प्रेमपत्र दे दूतने, सन्मानी ने सिधाई ॥ सु० २१ ॥ कौरव
पति ने पत्र दियो जा, ते वांची हरषाई । इमही प्रेम असंखित रहसी, बांटी हर्ष बधाई ॥सु०२२॥
यह बात सांभी सत्यभामा, मन में हर्ष न माई । सही सुत होसे पुण्यवंतो, मोटे घरे
परणाई ॥ सु० २३ ॥ यों अनेक लहरें मनराजा पर, भोली भामा रही माई । पुण्यवंता तो
सब सुख पावें, विना पुण्य कुछ नांही ॥ सु० २४ ॥ पहली डाल रसाल भोता, पुण्य की
करी बढाई । आगे फल तस विनोदकारी, अमोलक ऋषि दरसाई ॥ सु० २५ ॥

॥ दोहा ॥ इम मनोरथ मामाजी, चिंतवत उपनो विचार । सोक दुराचण की भली,
संधी दी कर्तार ॥ १ ॥ हरी हलधर के सामने, रुक्मणी ने बुलाय । होड़ पाहनी पाड़वी,

जिणथी ते दुख पाय ॥ २ ॥ पुत्र पहली परणे जिको, अपर सौक सिर वाल। कापी परण्या मॉ पगतले, पाथरवा ततकाल ॥ ३ ॥ वथकर तनकर हूं बड़ी, मुझने होसे नंद। रुक्मणी ने होसे नहीं, दुर्योधन के समंद ॥ ४ ॥ इम निश्चय मनसूं करी, दासी बुला तत्काल। रुक्मणी लावो बुलायने, कही युक्ते चिंतित हाल ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल २ जी ॥ (बालूड़ा तू संग न जाजेरे–ए देशी) होणहार जैसी मति आवेरे, पुण्यवंत सदा सुख पावेरे ॥ टेक ॥ रुक्मिणी आनंद विनोदमेंरे, बैठी रंगमहल मांय। दासी आई सतभामा की, कर जोड़ी ने शीश नमाय ॥ हो० १ ॥ राणी साहिब पधारिये जी, भामाजी आपने बुलाय। कारण पूछे रुक्मिणी, तब चेटी बात जणाय ॥ हो० २ ॥ जेहनो कुमर पहली परण सी, उर्फ शोक तणा सिरवाल। कापी बिछावा पगतले, यह होड करणी छे हाल ॥ हो० ३ ॥ रुक्मिणी दासी पीठने, ठप कारी दे शाबास। भले चालो होड करां हमें जी, पूरसे जगदीश आस ॥ हो० ४ ॥ मार्ग मांहे रुक्मिणी इम, मनसूं करे विचार। ऊँचा ने नीची बांछना जी, किम उपजे कर्तार ॥ हो० ५ ॥ श्रेष्ठ कुल की बालिका, खल खावा मनमें किम चाय। अनुमाने होणहार है यह, ते विमुख निकले वाय ॥ हो० ६ ॥ आई राणी महल में, सतभामा दियो सन्मान। बरो बरी आसण बैठाय ने, आरोगे फोफल पान ॥ हो० ७ ॥

मामा भति प्रति लायन, मन मांहिली वात जणाय। तुम कहो सो प्रमाण है, हम रुक्मिणी कहे
हर्षाय ॥ दो० ८ ॥ तब हरिहलधर ने मामा, चाकर हाथ बुलाय। होड होवे मामा रुक्मिणी
की, चालो श्री महाराय ॥ दो० ९ ॥ हलधरी बलभद्र कृष्णजी, और केइ जादव परिवार।
आया मामा का महल में, ते आणी कौतुक अपार ॥ दो० १० ॥ मामा जी दरखावियो,
हम बीहने यह छ होड। तनुज पहली परणे तम सोक का, केश कापणा पर कोड
॥ दो ११ ॥ रुक्मिणी ने पूछी ते कहे, म्हारे मामा पुन्यनीक। जो बात यांके मन गम,
त मुझ न लाग ठीक ॥ दो० १२ ॥ कहसे ते महसे सही, मुझने नही कोई फिकर। होणी
जैमी मती उपजे, इम ग्रंथमां लेख पर ॥ दो० १३ ॥ हर्षित बचन इम सांमली, चकित हुवा
सब माय। निज २ स्थाने वाता करंता, गया आदने जादूनाथ ॥ दो० १४ ॥ राते निज २
महल में, दोर्ई सुख शय्या मझार। आनंदे रती मोज में, फिकर न कछु लगार ॥ दो० १५ ॥
स्वर्ग धारमांथी चव्योजी, पुण्यवंत जीव समीप। रुक्मिणी उदरे ऊपनोत, त्रिम मुक्ता फल
सीप ॥ दो० १६ ॥ तब सुपनों अवलोकियोजी, भति उत्तम देव विमाण। ऐरापति इन्द्र तणो
मिथणाग्यो जी अतिही शोभावान ॥ दो० १७ ॥ नमसती उतरयो तदाजी, आनंदे क्रीडा
करत। उवामी लेतो पका मे मुख थी उदरे पेसंत ॥ दो० १८ ॥ ततक्षण जागी सुन्दरीजी, आई

जिहां सूता भरतार। मधुर बचने जगाविया, कृष्ण भद्रासन तब बैठार ॥ हो० १९ ॥ घणॉ विनय कर वीनवे, स्वामी स्वप्न देख्या श्रेकार। देव विमाण हस्ती इंद्र को, मुझ पेठो उदर मझार ॥ हो० २० ॥ मुरारी कहे प्यारी सुणो, थाने होसे पुत्र पुण्यवंत। कुलमें भूषण तिलक समो, सर्व नरोंके मांहे महंत ॥ हो० २१ ॥ सुण रुक्मिणी आणंदी अतीजी, करिया बचन प्रमाण। निज मंदिरे जा सुख में रहे, गर्भ प्यारो जीव समान ॥ हो० २२ ॥ दूषण टाले पाले गर्भ ने जी, सुखे गमावे काल। ऋषि अमोलक वरणवी, अवतार की बीजी ढाल ॥ हो० २३ ॥

॥ दोहा ॥-सुख शय्या सूती थकी, सतभामा सतवंत। स्वर्ग थी पुण्यवंत प्राणीयो, तस उदरे उपजंत ॥ १ ॥ स्वप्ने रविने पेखियो, किंचित बादल छाय। आय जणायो कृष्ण ने, सुणी हरी हर्षाय ॥ २ ॥ पुत्र हो सी सूरज समों, कुल दीपक कुल चंद। सतभामा इम सांभली, उपज्यो परमानंद ॥ ३ ॥ होड जीत जस लेवणो, आशा बंधी मनमांय। कब जन्मे कब परणाय के, लेवूं केश कराय ॥ ४ ॥ तीजे मासे दोयने, डोहला पुण्य प्रमाण। दान शील तप धर्म के, सब पूरे राजान ॥ ५ ॥ साधू सेवा सांचवे, प्रतिलाभे उलट भाव। साधरमी ने सन्मान दे, त्याग वैराग्य ले चाव ॥ ६ ॥ पुत्र ना पग पालणे, शुभ डोहले से जणाय। पुण्यवंत के कमी किसी, पूरे सहू ओछाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ (पोष दशम दिन आनंद कारी—ए देशी) सुणजो सुघड जन पुण्य अधिकारो, पुण्यवंत उपजे वर्ते अपकारो ॥ टेक ॥ महा पुण्यवंती यदुपतिपत्नी, गर्भ तणी करे नित्य प्रतीपारो। किन्तु वधे न उदर तस किंचित, गर्भ रह्योज्यूं बिम्ब सिलकारो ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिवली पेट विलोकत सब ही, शंका धरें मन सोक विचारो। नहीं गर्भ मा झूठी रूक्मणी, प्रपच रच्यो सोगे इमधारो ॥ सु० २ ॥ भामो मुंडाया को डर इण ने लाग्यो, वली अपमान करे मरतारो। तिम थी स्वपन डोहला की लपराई, आणी अब शंका न लगारो ॥ सु० ३ ॥ सुण रूक्मणी जरा नहीं खीजी, पूछे तेह आगे कर ऊचारो। साचाने वो सोच न कांई, सोच करे जे कपटीलगारो ॥ सु० ४ ॥ सांचा को सहाई परमेश्वर, झूठा से विमुख कर्तारो। इम सतोषे उत्तर आप, साची न माने कोई लगारो ॥ सु० ५ ॥ नवा नव मास सुख सुखे वीत्या, भीष्म सुता सुत जायो कुमारो। रात में उद्योत हुयो भवन में जाणे ऊग्यो साग दिन कारो ॥ सु० ६ ॥ शुभलग्न ग्रह नक्षत्र ने जोगे, पुण्यवंत पड़ियो पलने वारो। माता के मन हर्ष न मावे, परण्या से हर्ष हो से अपारो ॥ सु ७ ॥ हर्ष धुरी सेवक ले वधाई हर्ष घर, आया जहां सूता कृष्ण मुरारो। निद्रा में जाणी बैठा पगतल, मगलस्वभाव धरी सुख मंझारो ॥ सु० ८ ॥ भामाजी ने

पण तिणही वेला, जन्म हुयो छे पुत्र पियारो। वधाई ले पुरुष आया भूप पे, पहला बैठा देखी करें विचारो ॥ सु० ९ ॥ आया बधावा मोटी राणी का, किम बैठें पग तले इसवारो। बैठा जाय सिराहने पासे, इम धरी मन में अहंकारो ॥ सु० १० ॥ ठाकर जैसा चाकर होवे, बुद्धी पण तैसी होवे जाहारो। दोनों चाकर दोनों राणी का, देखी लो बैठण परकारो ॥ सु० ११ ॥ एतले जाग्या द्वारिका नायक, रुक्मणी दास जोया तत्कारो। जय विजय हो नफर तब बोले, रुक्मणी जी जायो पुण्यवंत कुमारो ॥ सु० १२ ॥ नंदन नंदनवन सम सुंदर, दर्शण होवे सदा जयकारो। देव वधाई लो स्वीकारी, सुण अति हर्षे यादव सिरदारो ॥ सु० १३ ॥ राज चिह्न का भूषण वरजी, उतारी दिया सब सिणगारो। अवर अनोपम वस्तू बहू आपी, लेइ खुशी घणा हुया कर्मकारो ॥ सु० १४ ॥ एतले पाछल हरी जब देखें, उठ्यो बधायो सतभामारो। पटराणी भामा जी सुत जायो, देव वधाइ श्रेयकर स्वीकारो ॥ सु० १५ ॥ बुला भंडारी तब यदुराजा, दई बधाई खोल भंडारो। ते गयो भामा पे चुगली खाई, दुभाव राखे है नाथ तुमारो ॥ सु० १६ ॥ पहली वधाई दी रुक्मणी दास ने, स्वयं अंग का भूषण उतारो। पीछे भंडार से मुझने दिवाई, भंडारी पासे थोड़ी जवारो ॥सु० १७ ॥भोली भामा खीजी बड़ वड़ी, बुला बलभद्रजी कहे समाचारो। हलधर ठपको दियो

॥ ढाल ३ जी ॥ (पोष दशम दिन आणंद कारी–ए देशी) सुणजो सुघड़ जन पुण्य अधिकारो, पुण्यवंत उपजे घरे अवतारो ॥ टेक ॥ महा पुण्यवंती पशुपतिपत्नी, गर्भ तणी कर नित्य प्रतीपारो । किन्तु बधे न उदर तस किंचित, गर्भ रह्योज्यूं थिम्ब चिलकारो ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिवली पेट विलोकत सब ही, शंका धरें मन सौक विचारो । नही गर्भ या झूठी रूकमणी, प्रपंच रच्यो सोगे इणवारो ॥ सु० २ ॥ मायो मुंडावा को डर इण ने लाग्यो, थली अपमान कर भरतारो । तिण थी स्वपन दोहला की उपराई, जाणी अब शंका न हमारो ॥ सु ३ ॥ सुण रूकमणी जरा नहीं खीजी, पूछे तेह आगे करे ऊचारो । साचाने तो सोच न कांइ, सोच करे जे कपटीलआरो ॥ सु० ४ ॥ सांचा को सहाई परमेश्वर, झूठा स विमुख कर्तारो । इम मंतोषे उत्तर आप, साची न माने कोई लगारो ॥ सु० ५ ॥ सवा नव मास सुखे सुख बीत्या, भीष्म सुता जन जायो कुमारो । रात में उद्योत हुयो भवन में, जाण ऊग्यो साचे दिन कारो ॥ सु० ६ ॥ शुभलग्न ग्रह नक्षत्र ने जोगे, पुण्यवंत पड़ियो पलने धारो । माता के मन हर्ष न मावे, परम्पा से हर्ष हो से अपारो ॥ सु० ७ ॥ हर्ष भरी सपक ले मघाइ हर्ष घर, आया जहां थता कृष्ण मुरागे । निद्रा में वाची बैठा पगतले, मंगलस्वभाव धरी सुख मंझारो ॥ सु० ८ ॥ मामाजी ने

॥ ढाल ४ थी ॥ (बलती देखी द्वारका–ए देशी) रुक्मणी इम रोवे ॥ टेक ॥ तत्-क्षण जागी रुक्मणी रे, कुमर न देख्यो पास । मोह झाल ऊठी हृदये, पड़ी मूरछा आई तासरे ॥ रु० १ ॥ दास्या चमक जागी तदारे, जल ले आई दोड । कांई हुयो महाराणी ने, इम सुखने बोले छोडरे ॥ रु० २ ॥ मुख पे पाणी छींटकेरे, शीतल पवन के जोग । हुई सचेत फिर मुरछा लई, इम साले घणो वियोग रे ॥ रु० ३ ॥ कुमर २ मुख ऊचरी रे. कूटे सिर उर सोय । आंतग्ड़ी कुरले घणी, दीन वचन वदी रही रोय रे ॥ रु० ४ ॥ हे देव तें कियो किशोरे, दया न आई लगार । मुझ नंदन किहां छिपाइयो, बरसे झड़ी ज्यूं आंसू धार रे ॥ रु० ५ ॥ हे अनूपम अंगजारे, अति सुन्दर सुकमाल । जननी झुरती छोड़ने, तूं किहां जाइ वस्यो लाल रे ॥ रु० ६ ॥ कौन वैरी है माहिरोरे, रंग में कीधो भंग । ऊंड़ी ऊठे कुरकली, वली थर २ धूजे अंगरे ॥ रु० ७ ॥ मैं जाणती मुझ सारखीरे, सुखणी न दूजी माय । एक दम यह किहां थकी, पहाड़ मुझ पे पडियो आयरे ॥ रु० ८ ॥ हे वछ मुझने तुझ सारीखोरे, प्यारो नहीं जग और । तुझ दर्शन ने मुझ हीयड़ो, तरसे छे ज्यूं घन मोर रे ॥ रु० ९ ॥ मुझ थी भली जग पंखणी रे, पाले बच्चा चूगो देय । मैं वृथा हुई मनुष्यणी, धिग २ मुझ जन्म छे एह रे ॥ रु० १० ॥ गर्भमाय में ना गली रे, नकटी

हरीन, बीती बीतक कही तब मुरारो ॥ सु० १८ ॥ तव्रवर बुलाइ हुकम फरमाई, ओछव करायो नगर सिणगारो । आठ दिन कर होंमल पंच कीनो, गान तान होवे मंगलाचारो ॥ सु० १९ ॥ सतभामा रुक्मणी के मंदिर, मिलियो सहु आदव परिवारो । गावें नाचें बांटे मिठाई, हप आणी २ हृदय अपारो ॥ सु० २० ॥ याचक जनने दवे उमगधर, धन वस्त्र भूषण अल धारो। तोरण कलश ध्वजा धरगी, बांध नगर में घर २ दुवारो ॥ सु० २१ ॥ ढोल दमामा धामा गरमाई, झालर घंटा और नगारो । बाजा बाजें गगन में गाजें, होय रह्यो तिहां जय २ कारो ॥ सु० २२ ॥ जेती हुंस हूती मन मांही, ते सब पूरी नरनी सिरकारो । आनंद रंग विनोद की तीजी, ढाल अमोलक ऋषि उचारो ॥ सु० २३ ॥

॥ दोहा ॥ कर्म महाबली जगत में, तिण सूं बली न कोय । रंग माहे मग ते करे, हँस तो क्षण में रोय ॥ १ ॥ सोका दुश्मन हरखी, सुभट महा असवार । महल पासे खड़ा किया, नंगी समशेर हुंस्यार ॥ २ ॥ पांच दिन बीत्या सुखे, ऊग्यो छटो दिन कार । दुख आपी दीप्त रवी छिपो, व्याप्यो तिमिर अंधार ॥ ३ ॥ सुख साता की पोढ़िया, गिरधर नींद मझार । निद्रावश रुक्मणी, हुई सुखे त वार ॥ ४ ॥ अशुभ कर्म के जोग से, हुआ पुत्र का हरण । मालुम न पड़ी कोइ ने, सूं करे बलिया घरण ॥ ५ ॥

जनने वंचिया, करी वस्तू पे ममता अपार रे ॥ रु० २१ ॥ प्रेम धरयो निज पुत्र पे, दूजा पे धरयो द्वेष । कपट सहित झूठ बोलियो, कुटुंबे बधायो क्लेश रे ॥ रु० २२ ॥ त्रस जीवों ने मारिया, गहरे पाणी में डूबोय । हांसी करी अंग बुद्धि हीण की, करयो सज्जन को बीछोय रे ॥ रु० २३ ॥ निंद्रा हांसी करी साधू की, करयो धर्मी तपसी को तिरस्कार । कसाई आदि पापी से करयो, देणा लेणा व्योपार रे ॥ रु० २४ ॥ इत्यादि अशुभ कर्म से, मुझपे विपत पड़ी इण काल । दोष नहीं इण में किणतणो, मैं करयो होसी कर्म चंडाल रे ॥ रु० २५ ॥ क्षण रोवे क्षण में जोवही, क्षण दोड़ी झरोखा जाय । किण दिश थी मुझ लाडलो, अभी दर्शन देवे आय रे ॥ रु० २६ ॥ नहीं देख्या थी फिर मूरछेरे, फिर होवे सावचेत । रुक्मणी दुःख थी सहू दुखी जी, ढ़ाल चोथी अमोलक कहेत रे ॥ रु० २७ ॥

॥ दोहा ॥ कोला हल हुयो महेल में, सुणियो कृष्ण नरिंद । धसी ने आयो उतावलो, पूछे दुःख समंद ॥ १ ॥ पुत्र वियोग ने सांभली, ऊठी हीये में झाल । रेअपच्छिया पच्छिया, कुण हरियो मुजबाल ॥ २ ॥ गिरिधर कहें रुक्मणि प्रति, प्रिये मतकर शोक लगार । शीघ्र मिले आके कुंवर, सोई करस्यूं प्रकार ॥ ३ ॥ असवार पायक दोड़ाविया, सोधण ने चहूं दिश । महल नगर में सोधियो, पण किहां न पूगी जगीश ॥ ४ ॥

गाढी आर । पालणो छोडी जरु रोग थी, मुझने देव मारी नाथ रे ॥ ढ० ११ ॥ मैं क्यों वाधी हरी पठरागणी रे, क्यों आयो रूखोनंद । नंद तो मानंद कर गयो, मुझ ने न्हांखी दुःख फंद र ॥ ढ० १२ ॥ मैं मूरखणी माभा वी स, म्यर्थ ही पाडी होड । मुझ अभागन नारकाजी, कोइ न पूग्या कोड रे ॥ ढ० १३ ॥ क्या मैं फोडी पृथ्वी रे, क्या सोस्या मरोवर जल । जल धरने तरफडावीया, क्या वन में लगाई अनल रे ॥ ढ० १४ ॥ अण छाण्या पाणी वापरया, बुझाई पाणी थी आग । लीलनचांपी तोड्या अंकुरा, तिण थी फूट्या म्हारा भाग रे ॥ ढ० १५ ॥ सम्यो धान दीयो ढावडे रे, राख्यो विवेक न कांय । कुत्सित भोजन खावीयो, रांध्यो पीस्यो निर्दय थाय रे ॥ ढ० १६ ॥ जूवां मारी लिखा फोडी रे, राख्यो गोबर राते संघ । कीडी ईंडा उवाड घर फोडिया मैं तो दया न ला थी रंच रे ॥ ढ० १७ ॥ हिरण अजा फीर पींजडी तणा, मैं बाल विछोहा कीध । जलचर पकड पचावीया, तेथी दुःख आयो इण बीच र ॥ ढ० १८ ॥ मम प्रकारया मोमा कोठिया, मोथ्या करडका घर रीस । बापन दाधी पारकी, निद्रा चुगली करी रीस रे ॥ ढ० १९ ॥ हए वस्तु चोरी छीपाई, करयो मती को सील भंग । व्यभिचार सेव्यो दलाली करी, कुआक दीयो दुर नग रे ॥ ढ० २० ॥ क्रोध करणोपर दुःख दियो करियो बडो अहंकार । दगाबाजी थी

जनने वंचिया, करी वस्तू पे ममता अपार रे ॥ रु० २१ ॥ प्रेम धरचो निज पुत्र पे, दूजा पे धरचो द्वेष । कपट सहित झूठ बोलियो, कुटुंबे वधायो क्लेश रे ॥ रु० २२ ॥ त्रस जीवों ने मारिया, गहरे पाणी में डूबोय । हांसी करी अंग बुद्धि हीण की, करचो सज्जन को बीछोय रे ॥ रु० २३ ॥ निंद्रा हांसी करी साधू की, करचो धर्मी तपसी को तिरस्कार । कसाई आदि पापी से कर्‍यो, देणा लेणा व्योपार रे ॥ रु० २४ ॥ इत्यादि अशुभ कर्म से, मुझपे विपत पड़ी इण काल । दोष नहीं इण में किणतणो, मैं करचो होसी कर्म चंडाल रे ॥ रु० २५ ॥ (क्षण रोवे क्षण में जोवही, क्षण दोड़ी झरोखा जाय । किण दिश थी मुझ लाडलो, अभी दर्शन देवे आय रे) ॥ रु० २६ ॥ नहीं देख्या थी फिर मूरछेरे, फिर होवे सावचेत । रुक्मणी दुःख थी सहू दुखी जी, ढ़ाल चोथी अमोलक कहेत रे ॥ रु० २७ ॥

॥ दोहा ॥ कोला हल हुयो महेल में, सुणियो कृष्ण नरिंद । धसी ने आयो उतावलो, पूछे दुःख समंद ॥ १ ॥ पुत्र वियोग ने सांभली, ऊठी हीये में झाल । रेअपच्छिया पच्छिया, कुण हरियो मुजबाल ॥ २ ॥ गिरधर कहें रुक्मणि प्रति, प्रिये मतकर शोक लगार । शीघ्र मिले आके कुंवर, सोई करस्यूं प्रकार ॥ ३ ॥ असवार पायक दोड़ाविया, सोधण ने चहूं दिश । महल नगर में सोधियो, पण किहां न पूगी जगीश ॥ ४ ॥

शून्य हुआ सारा भवन, क्षणभर पड़े न चैन। विलपिले रानी रुक्मणी, दीन कही मुख वैन ॥ ५ ॥ मामा मुत हरसी मणी, मित्र हुयो सुत काम। अब नंदन परणाय ने, केम काणी पूरे हाम ॥ ६ ॥ एक घर हर्ष बधामणा एक घर मच्यरो सोग। अहो भोला जो यो तुम्हें, कम का प्रत्यक्ष भोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ (माभी ने सुंदरी दोनों भाई-ए देखी) तिण अवसर नारद मुनी, महामतवंत ब्रह्मचारी गुणी। विद्या पूरो करामात मणी पावे, भाग्यवान सोई सुख उपजावे ॥ १ ॥ टेक ॥ मही अंतरिक्षे घणा देश फिर, किहां सुख किहां कौतुक करे। सर्ड्ड हांसी रस आणंद लावे ॥ भा० २ ॥ ते तब आया द्वारा पुरी, हयवरी उतरया ज्यां कृष्ण अंतेउरी। कोलाहल सुण अचरज पावे ॥ भा० ३ ॥ कृष्ण सन्मान दियो तिण ठांई रुक्मणी जी पण तम बधाई। दिवे दुःख नेत्र आंसु वहावे ॥ भा० ४ ॥ ऋषि पूछयो सोक नो कारण भाव जमाई हुयो पुत्र हरण। कृष्ण सदा इम फरमावे ॥ भा० ५ ॥ अहो पुत्री फिकर तूं करे मती, भार किम पासरी छ कमती। त्रिखंड पति तुम पति पावे ॥ भा० ६ ॥ हरीतनयी जे पैदा हुयो, त अधूरे आयुष नहीं मुयो। इण में शंका किंचित नाव ॥ भा० ७ ॥ हूं आणू मम मती करी, नहीं नर कोई सुर लगायो हरी।

पूर्व वैर तणे प्रभावे ॥ भा० ८॥ मैं म्हारी कलाथी वाई, थोड़ा काल में पुत्र देखूं मिलाई । तो मुझ नाम नारद कहलावे ॥ भा० ९ ॥ जितनी तुझ शोक हुई छे सुखी, तितनी ते निश्चय होजे दुःखी । यह मुझ वचने कमर न आवे ॥ भा० १० ॥ इम संतोषी चाल्यो गगन गती, सोचे मनमें कहां मिले क्षिती । गिरी कंतार जलधि भटकावे ॥ भा० ११ ॥ किहां पतो तेहनो नहीं पायो, फिरी थकी मेरू गिरि आयो । चिंते मुझ केवली जिन देखावे ॥ भा० १२ ॥ आयो तव महा विदेह क्षेत्र मांही, श्री संदिर स्वामी छे ताही । दर्शन देखी अति हरखावे ॥ भा० १३ ॥ प्रदक्षिणा दे पंचांग नमाई, वंदे जयवता जिन जी ताइ । सफल दिन ते गिणावे ॥ भा० १४ ॥ परिषद तिहां घणी भराई, पट खंड पती तिहां आयाई । नारद ने देखी अचरज लावे ॥ भा० १५ ॥ हाथ लेई देखे तिणताई, किण क्षेत्र को कुण यह जीव थाई । छोटी सी काया घणी सुहावे ॥ भा० १६ ॥ चक्री पूछे जिनराज भणी, कहो स्वामी हकीगत एह तणी । श्री तीर्थेश्वर जव फरमावे ॥ भा० १७॥ यह भरत क्षेत्र को नारद मुनी, शीलवंत विद्यावंत बहुगुणी । द्वारकाथी यह इहां आवे ॥ भा० १८ ॥ द्वारावतीनों वासुदेव पती, तिणरे संपत शोभे अती । रुक्मणी पटनार मनभावे ॥ भा० १९ ॥ रुक्मणी का इसको है हेतघणो, इण व्याव करायो तेथी कृष्ण

तणो। माक मोकना दुःख नावे ॥ मा० २० ॥ मामा रूक्मणीर होइ पडी, दोइने कुमर हुया सुमघडी। आनंद मगल वरतावे ॥ मा० २१ ॥ कम बली छे जगत के मांई, रूक्मणी न अशुभ कर्म प्रगटाइ। छठी रात कुमर हरण थाय ॥ मा० २२ ॥ विपरो शोक तिहां अति छायो, सोक तणो जीव सुख पायो। तिण वला नारद त्यां आवे ॥ मा० २३ ॥ पूछ्यापी वात ममी जणाई, इम जोया वण गिरि कंतार मांई। नहीं मिल्यो निश्चय करण इहां जाय ॥ मा० २४ ॥ जेह जन जहनो पक्ष ताणे, सुख दुःख तेनों तेही आणों। ये हाल पांचमी अमोलक गावे ॥ मा० २५ ॥

॥ दोहा ॥ इम सुणी त विजय पति, पूछे वु करजोड। यह वात सुणवातणो, मुझ मन उपज्यो कोड ॥ १ ॥ इण हरयो कांई कारण हरयो, किहां किणरीते छे बाल। किवा काल ने अवर, मेटसे मा पितु बाहाल ॥ २ ॥ किण रीते इण बांधिया, पडी मां पुत्र ने अंतराय। संशय गलण प्रद तुम, यह छेदो महाराय ॥ ३ ॥ यह अधिकार सुणीसमा, कर्म बंधसे हरपाय। उपकार होसी अति घणो, कृपा करो फरमाय ॥ ४ ॥ श्री जिनेन्द्र कहे नरेन्द्र सुण, सर्व भव्य जन नारद। करणी तणा फल भोगवे, इणमें नहीं रदबद ॥५॥

॥ हाल ६ ठी ॥ (गाफिल मत रह रे मेरी जान-ए देशी) सुणो नरवर जी, नारद

सुणों नरवर जी । नरवर जी कर्म काहाणी, बांधे जैसे भुगते प्राणी ॥ सु० टे० ॥ कौशल नगर का राया, पद्मनाभ गुणे सवाया, गुणवत धारणी राणी पाया । स्वर्ग से आया जीव दोई, जोड़ले जन्म्या हर्ष होई ॥ सु० १ ॥ बड़ा को मधू नाम दीधो, लघु को कैटभ प्रसिद्धो, भाग्य घणो विद्याभ्यास कीधो । योवन वय परणाई नारी, सुख विलसे नित्य ते संसारी ॥ सु० २ ॥ मधू भणी राजापद देई, कैटभ ने युवराज थापेई, भूपत गुरुपे दिक्षा लेई । ज्ञान पढ़ तपस्या बहू कीनी, अल्प काले सिद्ध गती लीनी ॥ सु० ३ ॥ मधू कैटभ दोई दीपे, जाणे रवी चंद समीपे, बलथी अरी तणो बल जीपे । एक दिन हल्लो सुण्यों काने, पूछे चाकर थी बयाने ॥ सु० ४ ॥ तब दास कर जोड़ी बोले, भीमसेन भूप फोजों ले, यह आपणा देशने खोले । गाम बाहर जे मनुष्य पावे, लूट खोस निज ग्रामे ले जावे ॥ सु० ५ ॥ तिणथी त्रासी लोग पुकारे, सुण मधुराय रोस धारे, लेई दल चढ्यो तिवारे । धमक थी धरणी धर्रावे, दुशमन को हृदय कंपावे ॥ सु० ६ ॥ तब भीम लुटारो भाग्यो, नरपति तस केडे लाग्यो, रस्ते वटपुर ग्राम थाग्यो । तिहां को हेमरथ रायो, मधु भूपने लेगयो वधायो ॥ सु० ७ ॥ हेमरथ की इन्द्रप्रभा राणी, अति रूपवती बहु शाणी, तिणथी बोले हेमरथ वाणी । के पधेसो मधु महीप तांई, पुण्य उदय आया अपणे यहांई ॥ सु० ८ ॥ तब

राणी कहे सुन स्वामी यह बात कही नीकामी, भूप की दृष्टी होवे हरामी। तेथी मत करो यह चालो और करो दो इण ने टालो ॥ सु० ९ ॥ मडकी बोलेराय रीस आणी काई मान कर तूं राणी, तुम सम हमरे दासी जाणी। इम कही तिणरे हाथ पुरसावे, रूप देख मधू नृप मोहावे ॥ सु० १० ॥ चाल्यो त्यां थी सेना सजाई, मार्गे मंत्री ने बात जणाइ, मुझने मोहनी दे शीघ्र मीलाई। आय लड़ी मीमने भगायो, राजले जीत नगारो बजायो ॥ सु० ११ ॥ पाछा फिरया मन में बसी प्यारी सेनाने सीधी परोंचारी, प्रधान नृप छन्नी सवारी। चाल्या वट पुर की वाटे भुळाई लेगयो मधी कौशला नगरी घाटे ॥ सु० १२ ॥ कहे राय यह क्या कीनो, मुझने विश्वासे धोको दीनो, ते सुंदरी बिना वृथा जीनो। तब मत्री कहे समझाई, रायजी परनारी दुख दाई ॥ सु० १३ ॥ सब पाप में मोटो पाप, दुर्गति जावे लागे कुछाप, आबरू क्षय होई सब सताप। यह काम तुमने नहीं जोगो भोगो महाराणी संग भोगो ॥ सु० १४ ॥ बोले असनी पति यह साची, पण न लगे टोल ने गांधी मुझ मन तने सहराची। भोगवसुं करिने कोई उपाय, मधिन चुप होई घरजाय ॥ सु० १५ ॥ घनी कल्य मधी तम जाय, इम करतां बसंत ऋतु आय, राय बसत मोछव मडाय। बुलाया हेमरथराणी सार, इंद्रप्रभा चिता में हुई अपार ॥ सु० १६ ॥ राणी पति ने

घणो समझायो, नहीं मानी कौशला पुर लायो, खेली फागने खेल मिटायो। कोई मिस करी इन्द्र प्रभा राखी, हेमरथ ने सीख तदा दाखी ॥ सु० १७ ॥ मधू पटराणी कर तस थापी, भोग भोगवे आनंद व्यापी, सुणीवात हेमरथ आपी। हुयो गहलो मोह वश ते राजा, छोडी राज रीति तजी लज्जा ॥ सु० १८ ॥ प्रिया २ मुखे पूकारे, आयो कौशल्या नगरी मंझारे, घणा बालक फिरें तस लारे। एक दिन देख्यो नारी निज नाथ, बूलायो दासी के हाथ ॥ सु० १९ ॥ पूछे राणी फिरो क्यूं राया, मैं पहली घणां समझाया, नहीं मान्या तो इता दुःख पाया। हिवे कुण नारी कुण स्वाम, मत भमो जावो निज ठाम ॥ सु० २० ॥ अब ज्यादा जोर नहीं करना, जरा मधूराय से डरना, नहीं तो भांड होय पड़सी मरना। नेह रहित नारी बचन कहियो, राजा सुण क्रोधातुर भइयो ॥ सु० २१ ॥ कहे मेरी इज्जत कांई गमावे, रांड तेरी बदनामी थावे, मरद को किंचित नहीं जावे। इम कही क्रोध बसे होगइयो, किणही वने तापस ते थइयो ॥ सु० २२ ॥ मधू नृप इंद्र प्रभाराणी संग, अती आसक्त हो भोगे रंग, क्षण मात्र नहीं ते चाहे भंग। इंद्र प्रभा तिण ने घणो समझायो, कामी किंचित न माने वायो ॥ सु० २३ ॥ एक दिन तलवर जार बांध लाया, राय फांसी का हुकम फरमाया, इंद्र प्रभा पूछे अहोराया। कांई अन्याय इण कीधो,

तिण ई कठोर हुक्म दीधो ॥ सु० ॥ २४ ॥ राय कहे मोन्गे करयो अकाज, काम निलज कीधो आज, लीनी इम परनारी की लाज । सतर पाप में मोटो एह, तिण थी फांसी इण देह ॥ सु० २५ ॥ तब राणी कहे सुणो महाराजा, आप कांई ने करयो अकाजा, मैं पर की नारी थावां । पर अवगुण देखें घणा जग मांई स्वयं का देखो थे राई ॥ सु० २६ ॥ इम मधू सुणी वैराग्यो, धिग मुझ कुलने दाग लाग्यो ततक्षण तिणरो संग त्याग्यो । तिण ऊपटने छोड्यो, प्रम जिनधर्मथकी जोड्यो ॥ सु० २७ ॥ एतले मुनि वेरण ने आया, निर्दोष आहार वेहरासा, मोग पुण्य तिहां उपजाया । सफल दिन आज थयो म्हारो, इम शुभ भाव भाया वधारो ॥ सु० २८ ॥ मुनिराज ठीकाणे सीधाया, राजा फिर वंदन आया, ऋषीश्वर उपदेश फरमाया । वैराग्य आयो भ्रात दोय तांई, घर आ जेष्ट पुत्र ने राज्य ठाई ॥ सु २९ ॥ मधूकैटभ संजम लीधो, ज्ञान तपस्या प चित दीधो, आलोई मथारो कीधो । बारमे कल्प दोई उपज्या, करणी प्रमाणे सुख निपज्या ॥ सु० ३० ॥ इन्द्रसमा पण दीक्षा लीधी कपट घर करणी कीधी, तिहां देव पणे पाई बहु रिद्धी । ढाल छट्ठी यह गाई, अमोल एव मथ दरसाई ॥ सु० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ मधू नर पति को जीव्हजे, स्वर्ग तणां सुख भोग । रुक्मणी कूंखे ऊपट्यो,

पूर्व पुण्य संयोग ॥ १ ॥ ऋषी दान परसाद थी, पामसे वस्तु उदार । आखिर संजम आदरी, तिरसे घोर संसार ॥ २ ॥ कैटभ जीव किता काल फिर, जांबवतीनी कूख। पुत्र होसे मित्र एहनो, बध से पुण्य फल रूंख ॥ ३ ॥ इंद्रप्रभा को जीव जे, विद्या धर श्रेण मांय। यम संबर खगपति प्रिया, कनकमाला सुखदाय ॥ ४ ॥ हेमरथ क्रोध वसे मरयो, फिरयो घणो संसार । तापसहोकर ते हुयो, धूमकेतू असुर सरदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ (कपूर होवे अती ऊजलोरे–ए देशी) धूमकेतू एक अवसरे रे, सैल करण बैठ वीमाण । फिरतो आयो रुक्मणी महलपेरे, थंभ्यो वीमाण ते ठाण ॥ १ ॥ चतुर नर सुणो, आयुबली नो अधिकार ॥ टेक ॥ तब चमक्यो चिंता में पड्यो रे, कुण विद्या मुझ हर लीध । कोण अरी यहां जागियोरे, के कोई सती साधू सिद्ध ॥ च० २ ॥ ज्ञान करी तब जोइयोरे, मधूराजा को जीव। रुक्मणी उदरथी ऊपनो जी, हिवेपाडूं इण में रीव ॥ च० ३ ॥ क्रोध वशे अती पर जल्यो रे, भाले शल नेत्र लाल । पूर्व वैर विचार ने ते, कोप्यो जाणों काल ॥ च० ४ ॥ मुझ प्यारी हरी इण पापिरे, दुःख दीयो घणो मुझ संताय । हिवे वश पड़ियो माहिरे रे, दुःख देवूं हिवे सवाय ॥ च० ५ ॥ एमविचारी अदृश्य होयके, रुक्मणी पासे जाय । चोरी लेई भाग्यो कुमर ने ते, किण ही जाण्यो नाय ॥ च० ६ ॥

नम माग जाता कहे ते, रे हुए जो सुम स्याल । पहली तो तू समपयोरे, हिव ई छं तुम फल ॥ ध० ७ ॥ वैताढ गिरीनी मेखलारे, महाझाडी ऊंची साड। वावन हाथनी मोटी शिला चलेर, दवायो तिण ने गाड ॥ ध० ८ ॥ धारा करिया ईं मोगजेरे, बीस चोसा ना फल एह । एम कही निर्झर गयो रे, भवी आनंदित देह ॥ ध० ९ ॥ पुण्यवंत पूर्णायु जेरे, विनरो वैरी कांई करंत । वाल न वांको करी सकेर, जो करतार रखंत ॥ ध० १० ॥ धर्मशरीरी प्राणियो रे, ओछे आयू न मरंत । ते शिला फूल समहुई रे, नीचे किलोल करत ॥ ध० ११ ॥ श्वासोश्वासना योग थी रे पुहवी हाले ते वार । ते चले तस पुण्य योग थीरे, माया तिहां रखवार ॥ ध० १२ ॥ रजतगिरीनी दक्षिण श्रेणमेंरे, मघ कूटपुर नाम । एम संवर राजा तेहनोरे, कनक माला तस धाम ॥ ध० १३ ॥ नैम विमाण दंपती रे, सैल करवाने काम । फिरता फिरता आवियारे, तिण अटवी मां ताम ॥ ध० १४ ॥ दूर से शिला हालती रे, देखी अचरज पाय । कोण हलावे इण मणी रे, जोवण तिहां चोडी आय ॥ ध० १५ ॥ उपाडी अलगी करीरे, दीठो ताम कुमार । रूप मनोहर काम ओरे, करे क्रीडा अनेक प्रकार ॥ ध० १६ ॥ खेचर अति हर्षित हुयो रे, अहो २ रूप उदार । उठाई हृदय लगाइयोरे, जाग्यो अति ही प्यार ॥ ध० १७ ॥ श्याम कोमल

पतला घणारे, दक्षिणावर्त सुकमाल। शिखर परे सिर ऊपरे रे, शोभत हैं सिरवाल ।।च० १८।। अष्टमी शशी सम भाल छे रे, भौंह स्याम नमी ज्यों कबाण । कर्ण फूल ज्यूं कदंबकारे, कमल पत्र ज्यूं नेत्र जाण ।। च० १९ ।। नाक कीर ज्यूं सरल सुतिक्षण छेरे, मुख पुनम केरो चंद । दांत दाडिम कण पंक्ति हुसेरे, होंट रक्त सुवंद ।। च० २० ।। ग्रीवा कंबू उन्नत छाती रे, बाहू लंब उरस्पष्ट । हरी कटी जंघा करी सूड ज्यूं छे, नहीं कोई अंग अनिष्ट ।। च० २१ ।। सुवर्ण वर्ण मनोहर रे, मक्खन ज्यूं नर्म गात । कामदेव सागे ऊपज्यो रे, शोभा वरणी न जाय ।। च० २२ ।। सर्व गुणे पूर्ण भरयो रे, खोड़ नहीं किंचित । दैत्य हरण कुल जय करण यह, देमी वस्तु चिंतित ।। च० २३ ।। अति हेजथी उदरे रे, कंठे लेवे लगाय । कपोल शिर ने चूंमतारे, तृप्त नहीं मन थाय ।। च० २४ ।। कनक माला से राजा भणेरे, यह ले पूत सपूत । सर्व सोकोंना पुत्र सिरेरे, एहथी वध से घरको सूत ।। च० २५ ।। मुख तंबोल थकी रच्योरे, तिलक शोभित तसभाल । युवराज थाप्यो अरण्यमेंरे, राणी हरखी तत्काल ।।च० २६ ।। चिंतामणी रतन की परेरे, राणी लियो कुमार । प्राण थकी प्यारो खरो रे, पामी चैन अपार ।। च० २७ ।। गुप्त राखी तस घर आवियारे, प्रपंच रच्यो तिणवार । गूढ गर्भणी राणी जण्योरे, शुभजोगे राजकुमार ।।च० २८।।

यह बात प्रसिद्ध करीरे, उत्सव मांड्यो फरमाय। बदीवान छोड़ाविया रे, दान बहुत दराय ॥ च० २९ ॥ चन्द्रकला ज्यूं दिन २ बधेरे, मोद करी ने साल। सज्जन नो मन रंजणोरे, मोहनगारो बाल ॥ च० ३० ॥ बारवें दिन परवार ने जी, जिमाया नाम थापण काज। शत्रु परने दमन करज्यो यह प्रद्युम्न नाम सुसाज ॥ च० ३१ ॥ षोडष वर्ष ने अतरेरे, षोडष लाभ ने लेय। भिलमी मात पिता भणी त, नीशानी दस एह ॥ च० ३२ ॥ सुखा सर भर से स गरे, कमल भ्रमर गुंजार। सुखा भय हरया हुसरे, बिन ऋतु फल फूल भार ॥ च ३३ ॥ कफी नृत्य पिक बोलें सदारे, गूगा वाक्य अघ आंख। कुरूप सुरूपता पामसीरे, सर्व सुखी होस मास ॥ च० ३४ ॥ पय पयोधर जननी तणारे, भरसे कुमर ने दस। ये लक्षणआवा तणारे आणो ऋषि चाकी शेष ॥ च० ३५ ॥ इम सुणी दिन वाणी न र, भवी पाम्या प्रतिबोध। आपस में खमावियारे, टाली वैर विरोध ॥ च० ३६ ॥ धन २ स्वामी भीमदिरार, रवि सम संशय तम नाश। सुणी सबध प्रद्युम्न कुमारकारे पाम्या घणा उलास ॥ च० ३७ ॥ ढाल सातवीं यह हुई रे, खबर पाई नारद। अमोल ऋषि कहे आगे सुणो जी, पुण्य फैलण समंद ॥ च० ३८ ॥

॥ दोहा ॥ नारद मुनि सुण यह चरी, दखण भणी कुमार। आतुर होकर कोस मी

उड़ी गयो तेवार ॥ १ ॥ गिरी बैताड़े यम संवर घरे, कनक माला पे आय । ऋषि देखी रामा उठी, प्रणमी लुल २ पाय ॥ २ ॥ पूछे बाई तूं गूढ गर्भ थी, जायो ते नंद बताय । मुनि जी तुम परमाद थी, चरणे दियो गुड़ाय ॥ ३ ॥ लक्षण व्यंजन देखने, हरख्यो घणों ऋषिराय । चीरंजीव मात आसा पूरो, आशीश दे हिये लगाय ॥ ४ ॥ झट उड़ आयो द्वारिका, हरी रुक्मणी के पास । पूर्व भव थी लगाय ने, सब बात करी प्रकाश ॥ ५ ॥ दंपती सुण आणंदिया, सुण सुत का अवदात । आश धरी मन मिलण की, सोल वर्ष गिणे हाथ ॥ ६ ॥ आशा जीवन जगत में, आशा थी सुख होय । आशा लुब्धी रुक्मणी, आनंद में रहे सोय ॥ ७ ॥

॥ ढ़ाल ८ मी ॥ (इण सरवरियारी पाल—ए देशी) तिण काले तिण समय, मेघ कूटनो पती हो पुण्यवंत मेघ० । यम संवर राजान, रिद्धी सिद्धी अती, हो० पु० रिद्धी० ॥ कनक माला लघुनार, प्यार तिण पे घणो, हो० पु० प्या० । प्रद्युम्न तेहनो कुमार, अती सुहामणो, हो० पु० अ० ॥ १ ॥ प्राण से प्यारो अधिक, वधे हाथों हाथ ते, हो० पु० व० । तिणरे पुण्य प्रताप, वधे राज आथते, हो० पु० व० ॥ हय गय वधिया अनेक, नम्या आई दुर्जना, हो०पु० न० । देखी कुमर का पुण्य, खुशी होवे मज्जना, हो०खु० ॥ २ ॥ पांच

पाय करें प्रतिपाल, बचे शक्त शशी परे, हो० व० । बाठ वय हुई युक्त, समस्त वस्त्रा संचरे, हो० स० ॥ कला आचारज पास कला सीखावह, हो० क० । बोहा काल के मांय, प्रवीन ते थाय‌ई, हो० प्र० ॥ ३ ॥ पुरुष तणो कला बहोत्र, चौंसठ महीला तणी, हो० चौं० । राज नीति धर्म नीति, सीख्या नृप घर घणी, हो० सी० ॥ धनकला धनुत्राण, हाण शत्रु तणो, हो० हा० । लीपि अठारा जाण, और सीख्या घणो, हो० और० ॥ ४ ॥ आयो योवन वयम, कामम मन हरण की, हो० का० । शरीर महा घोर, हुयो आपे परण की, हो० हु० ॥ कहे पिता से करजोड़ सेना मुझदीजिय, हो० से० । आउं दिग निभय काम अनुज्ञा कीजिये, हो० अ० ॥ ५ ॥ वात छता जे पुत्र, दखाडे कला आपणी हो० दे० । तेनो सफल अवतार, यह मुझ छ हूं न घणी, हो० य० ॥ कहे नृप अहो कुमरेश लघू अमु तू अछे, हो० ल० । देश साधण दुष्कर काम, ते तू करजे पछे, हो० त० ॥ ६ ॥ कहे कर जोड़ी प्रद्युम्न, घण करी हूं छूं नानो, हो० घ० । आपकी कृपाकरी, बुद्धि घी छु दानो, हो० बु० । दखो हजूर अमी आप, नमाउं मोमिया, हो० न० । सर श्रेणी करूं थय, तो मुझ माय जन्मियो, हो० तो० ॥ ७ ॥ हरखाई कहे खगेश, शीघ्र सिद्ध कीजिये, हो० शी० । गज वाजी रथ सुभट, मन मान्या लीजिये, हो० म० ॥ तेहस करी वात बचन

सेनापति बुलाइयो, हो० से० । फोज सजण को हुकम, कुमर फरमावियो, हो० कु० ॥ ८ ॥ करी स्नान अन्न पान, इच्छा तृप्त करी, हो० इ० । मुहूर्त शुभ देखाय, प्रयाण करे हर्ष धरी, हो० प्र० ॥ जय २ कार बोलंत, चाल्यो ते दल तदा, हो० चा० । गज करें गुल गुलाट, हयवर हींसे जदा हो० ह० ॥ ९ ॥ रथ करे झणणाट, जयकार पायक बोले, हो० ज० । अवनी रही थर राय, बजन थी ते झोले, हो० ब० ॥ रजथी ढांक्यो सूर्य, सरोवर जल सोषिया, हो० स० । जे नम्या तम आय तेने संतोषिया, हो० ते० ॥ १० ॥ जे रह्या करडाई धार, रूठ्यो प्रद्युम्न तेहपे, हो० रू० । दूत भेजी जणाय, नीती मारग जेहपे, हो० नी० ॥ के करो भक्ति आय, नहीं तो शक्ति कीजिये, हो० न० । मत राखो मन में हूंस, आश पूरीजीये, हो० आ० ॥ ११ ॥ जबर जंग आवे दल लेय, ते जावे तिणपे धसी, हो० ते० । विद्युत परे लपकूद, तिण पे चलावे असी, हो० ति० ॥ हे माधव को बीज, कमी किम होवई, हो० क० । सूर वीर साहसीक, शत्रुदल खोवई, हो० श० ॥ १२ ॥ देख अरी कुमर तेज, अचरज अति पावइ, हो० अ० । यह बालक जुझ की झाल सूं जोर जगावई, हो० सू० ॥ कितेक ने लिया बांध, कितेक पगे आपड्या, हो० कि० । कितेक अभिमानी सूर, काल हाथे चढ्या, हो० का० ॥ १३ ॥ सीमाड़ीया सब साध्या,

पाप करें प्रतिपाल, बने शक्ल भ्री परे, हो० प० । बाल पण हुए युक्त, समस्त वद्या सचरे, हो० स० ॥ कला आचारज पास कडा मीलावइ, हो० क० । थोड़ा काल के मांय, प्रवीन ते थायई, हो० प्र० ॥ ३ ॥ पुरुष तणो कडा बहोत्र, चौसठ महीला तणी, हो० चौ० । राज नीति धर्म नीति, मीख्या पूंथ पर घणी, हो० सी० ॥ दशकला धनुबाण, हाथ शत्रु तमो, हो० हा० । लीपि अठारा आप, और सीख्या घणो, हो० ओर० ॥ ४ ॥ आयो योवन वयस, कामम मन हरण की, हो० का० । घरवीर महा धीर, हुयो जाये वरण की, हो० दु० ॥ कहे पिता से करजोड़ सेना मुझ दीजिये, हो० से० । जाउं दिग विजय काज, अनुज्ञा कीजिये, हो० अ० ॥ ५ ॥ तात छता जे पुत्र, दखाडे कला आपणी हो० दे० । तेनो सफल अवतार, यह मुझ छे हंस घणी, हो० प० ॥ कहे नृप अहो कुमरेश लघु अछु तूं अठे, हो० ल० । देस साधण दुष्कर काम, ते तू करज पछे, हो० ते० ॥ ६ ॥ कहे कर जोड़ी प्रद्युम्न, बय करी हूं छुं नानो, हो० व० । आपकी कृपाकरी, बुद्धि थी छुं वानो, हो० बु० । दखो हजूर अभी आप नमाउं मोमिया, हो० न० । सब भेणी करूं वश, तो मुझ माय प्रमियो, हो० तो० ॥ ७ ॥ हरखाई कहे खगेश, शीघ्र सिद्ध कीजिये, हो० शी० । गज वाजी रथ सुभट, मन मान्या लीजिये, हो० म० ॥ सहस करी तव चयन

सेनापति बुलाइयो, हो० से० । फोज सजण को हुकम, कुमर फरमाविया, हो० कु० ॥ ८ ॥ करी स्नान अन्न पान, इच्छा तृप्त करी, हो० इ० । मुहूर्त शुभ देखाय, प्रयाण करे हर्ष धरी, हो० प्र० ॥ जय २ कार बोलंत, चाल्यो ते दल तदा, हो० चा० । गज करें गुल गुलाट, हयवर हींसे जदा हो० ह० ॥ ९ ॥ रथ करे झगणाट, जयकार पायक बोले, हो० ज० । अवनी रही थर राय, बजन थी ते झोले, हो० ब० ॥ रजथी ढ़ांक्यो सूर्य, सरोवर जल सोषिया, हो० स० । जे नम्या तम आय तेने संतोषिया, हो० ते० ॥ १० ॥ जे रह्या करड़ाई धार, रूठ्यो प्रद्युम्न तेहपे, हो० रू० । दूत भेजी जणाय, नीती मारग जेहपे, हो० नी० ॥ के करो भक्ति आय, नहीं तो शक्ति कीजिये, हो० न० । मत राखो मन में हूंस, आश पूरीजीये, हो० आ० ॥ ११ ॥ जबर जंग आवे दल लेय, ते जावे तिणपे धसी, हो० ते० । विद्युत परे लपकूद, तिण पे चलावे असी, हो० ति० ॥ हे माधव को बीज, कमी किम होवई, हो० क० । सूर वीर साहसीक, शत्रुदल खोवई, हो० श० ॥ १२ ॥ देख अरी कुमर तेज, अचरज अति पावइ, हो० अ० । यह बालक जुझ की झाल सूं जोर जगावई, हो० सूं० ॥ किताक ने लिया बांध, किताक पगे आपड्या, हो० कि० । किताक अभिमानी सूर, काल हाथे चढ्या, हो० का० ॥ १३ ॥ सीमाड़ोया सव साध्या,

साध्या महाजोरावरू, हो० सा० । वर्तोवी बाप की आण, वृद्धि करी आबरू, हो० वृ० ॥ रिद्धो चढ़ा बधाय बधाई फोज आपणी, हो० ब० । पाछा फिरया तेवार, फीराई आण्या बापनी हो० फी० ॥ १४ ॥ जीत नगारा बजाव, नगरी पासे आविया, हो० न० । बाप सुणी समाचार अती हरखाविया, हो० अ० ॥ छीपा मोतीयोंसे बधाय, गाम ने मांयने, हो० गा० । देखें मदन कुमर तेज, प्रससे गायन, हो० प्र० ॥ १५ ॥ बीजा जन खुशी होवे, तो मापितुनों कांई केवो, हो तो० । पुण्ये स्वपर स्थान, आदर अधिको लेवो, हो० आ० । प्रत्यक्ष पखे तब राय इच्छे युवराज देवो हो० इ० । देखी तेज बल करामात, भूप सुख इछेरो, हो० भू० ॥ १६ ॥ अती आडंबरे ताम, युवराज पाठे स्थापीयो, हो० यु० । राज तणों कार मार, तस हाथे आपीयो, हो० त० ॥ मधुर मन करयो दान, याचक में जस फेलीयो, हो० या० । आठमी ढाल अमोल, ऋषि पुण्य यश लीयो, हो० ऋ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥ रूप तेज बल दान की, फैली महिमा पुरमांय । जगह जगह जाचक सुजन, मदन कुमर गुणगाय ॥ १ ॥ सौकों माता पांच से, पांचस तसपूत । ते सब जन मुख थी सुणें, मदन कुमर यश खूत ॥ २ ॥ मायी मन में ईर्षा, हम पुत्र की न पिछाण । कनक माला सुत मदन क, सर्व करें गुण गान ॥ ३ ॥ निज २ स्थान बुलाइया, मथने निज २ पुत

कहें देखो प्रद्युम्न ने, जेहना पुण्य प्रभूत ॥ ४ ॥ सिंघणी एक ही पुत्र से, निरभय पामे सुख । रासभीनो बहु पुत्र थी, न मिटे गोणी दुःख ॥ ५ ॥ धन कनक माला धन मदन, सफल तस अवतार । धिक २ छे हम तुम भणी, निर्फल जाय जमार ॥ ६ ॥ थोड़ा दिन के मांयने, हुइ बैठा युवराज । ते निश्चय भूपत हुसे, थे दास सम कीजो काज ॥७॥

॥ ढ़ाल ९ मी ॥ (कुमार अभय बुद्धनो भंडारी–ए देशी) सुणो भवी पुण्य तणी कहानी, शत्रू करे छे दुःख उपाय, तस होवे सुख दानी ॥ सु० टेक ॥ सर्व कुमर निज माता मुख थी, सुणी एहवी वाणी । आक्रोश अभिमान धरि ने बोले, सुणो बात म्हाणी ॥ सु० १ ॥ प्रद्युम्न मम हीया मांही, साले माल समानी । शीघ्र मार तुझ मुंह दिखावां, तो ओलाद राजानी ॥ सु० २ ॥ इम कहीं सब आया मदन पे, होई ने गुमानी । ऊपर मीठा मनमें चीठा, कहें सुणों दिलजानी ॥ सु० ३ ॥ अहो बंधव हम स्वामी समाना, अहो बुद्धि बलखानी । हम सब तुम चाकर समाना, रखजो मेहरबानी ॥ सु० ४ ॥ सब बंधू रहें कुमर साथे, करें घणी मिजमानी । जो हुकम २ करता फिरे, नित्यजाणे सागे सहलानी ॥ सु० ५ ॥ गुप्त पणे भोजन पानमें, जहर दे मिलानी । ताल पुटादि घोल करिने, पावे भांग पानी ॥ सु० ६ ॥ ते सब अमृत होई प्रगमें, न किंचित दुःख दानी । निद्रा मांहे

बहु भाव भाले, ते होवे फूलवानी ॥ सु० ७ ॥ मंत्रोपचार न चाले तिमचे, न बाधा होवे विभ्रनी । तेज पुण्य दखी ने भागा, भूत प्रेत डाकनी ॥ सु० ८ ॥ जे जे करेंते दुःख उपाय, त होवे धूल धानी । सब माक्या अपरज पाया, मन आण्यो पुण्य निधानी ॥ सु० ९ ॥ वोपण ते अविचार न छोरें, परि जोर शुभानी । कहे गोपुर गुफा में इन न मेलो, जहां राक्षस राजधानी ॥ सु० १० ॥ दुखी खेलण मिस थे स्यां आया, सभी सग समानी । एक कानी छे मदन एकला, पांचसे एक कानी ॥ सु० ११ ॥ मारी दंड की पड़ी जा गोपुर, सब बोले लाचानी । जाती प्रद्युम्न लागो गेंदने रासी ने ईमानी ॥ सु० १२॥ कुमर दोड़ तब गुफा में आयो, राक्ष से तमजाणी । अरराट पाड़तो वालकूटतो, आयो कुमरकानी ॥सु० १३॥ तब महासुर प्रद्युम्न सामे, हुयो ठोकी मुख आंधानी । मीड़ी पड्यो त सुर की साथे, रज पूती मदठानी ॥ सु १४ ॥ भुज बल विद्या बल पुण्य बल थी, पाड़यो राक्षस प्रानी । कहे मुझ छोड़ो कृपा करीने, मैं हूं दास थानी ॥ सु० १५ ॥ कुमर सहने छोड़यो ततखिण, ते हर्षचित आनी । मंत्र मण्डार मुकुट राजा को, आभरण दीया आनी ॥ सु० १६ ॥ लेय दबी ने अपूर्व वस्तु, आयो जहां मित्राणी, सब देखी अचरज बहु पाया, हां हां गुण खानी ॥ सु० १७ ॥ इम प्रपंची दूवी गुफा मां, भेजी तिण मानी । सुरदानी वस्तु पानी,

ते सुणो स्थिर कानी ॥ सु० १८ ॥ छत्र भलो ने चामर जोड़ो, खड्गज राजानी । सदा खिले रहें कुसुमकावस्त्र, लायो ते ठानी ॥ सु० १९ ॥ तीजी गुफा में भेज्यो कपटी, मारण नीशानी । ते आयो त्यां पेखी नागसेज्या, नाग फूक ज्वालानी ॥ सु० २० ॥ तेह आयो जाणी जाग्यो नागेंद्र, फूंक्यो क्रोधानी । चर्म शरीरी पुण्य पोरसो, रह्यो अखंड ज्यानी ॥ सु० २१ ॥ जाणी भाग्यवंत तूठ्यो नागा सुर, आप्यो सिंहासानी । वस्त्राभूषण बहू मोला दीधा, विद्या सुख दानी ॥ सु० २२ ॥ मंदिर भलो बनावन केरी, अने सेन्या रक्षानी, युग विद्या ले आयो हर्ष सूं, जिहां कुमर खेलानी ॥ सु० २३ ॥ चौथी वार नाख्यो वापी में, तिहां जाली पेखी जावानी, मांहे पेठो दीठो मकरध्वज सुर, जोया पुण्य छानी ॥ सु० २४ ॥ तिण मकर चिह्न की ध्वजा दीधी, तेसुं हुये मकरध्वज नामानी । प्रगट हुया भाई देखी, चमकी रह्या ते मानी ॥ सु० २५ ॥ एक गिरी में अग्नी कुंड छे, गया त्यां खेल वानी । हारे ते वह्नि कुंड में पड़वो, एह करी प्रतिज्ञानी ॥ सु० २६ ॥ हारी कुमर पड़ियो तस भीतर, तूठ्यो सुर सानी । कनक वस्त्र जोड़ो तस दीधो पहरचा न लागे वह्नी ॥ सु० २७ ॥ छठी बार मेपाकार कूट विच, राखी धीरज मर्दानी । तिहां गया हारी तिण विच में सूं, निकल्या साहस आनी ॥ सु० २८ ॥ पूर्ण शीघ्रता देख सुर हरख्यो, दी

, छोड़ी कुंडलानी । तिण विध निकली भायो मित्र पे, ते आश्चर्य रमा यानी ॥ सु० २९ ॥ सातवी वार देव नेमी आंवापे, चढ़्या ते हिम्मत ठानी, देव हारी नें दई खड़ाऊँ । गगन में उड़जानी ॥ सु० ॥ ३० ॥ आठमी वार कपिदल तणे वन, तोड़े साकर झाड़ानी । गज रूपे सुर ने कुमर हरायो, दिया वचन प्रविक्षानी ॥ सु० ॥ ३१ ॥ क्रम पञ्चा याद करया थी, आई गयो ते निज स्थानी । नवमी वारे पर्वत चढ़ी न, भुजग सुर से भीड़्यानी ॥ सु० ३२ ॥ जीत्या तुष्टी दीयो अश्व रत्न कवच तन रखानी । जगत मोहनी मुद्रा आपी, ले आया मावानी ॥ सु० ३३ ॥ दशमी वार भावमुख डूगर, हरायो सुरानी । कंठी कन्दोरो रत्न का पायो, आया फिर हरखानी ॥ सु० ३४ ॥ एकादशमी वार मशान गय, पुष्प धनुष प्रसो पानी । जय ध्वंस अरी दल गंजयो, मिल्यो त राजानी ॥ सु० ३५ ॥ बारमी वार पंकज वन मांहे, देख्यो विद्याधर बंधानी । तस छोड्या तिण कन्या परणाई, रूप जो इन्द्रानी ॥ सु० ३६ ॥ दो विद्या वली दीधी कुमर न, एक रूप पलटानी । हार पहरया धारे जो रूप, दो उपगारी जानी ॥ सु० ३७ ॥ तरमी वार काल वन में, दैत्य की जय कीनी । फूल तणो धनुष बाण दीयो, पर और वस्तु पंचानी ॥ सु० ३८ ॥ मदन मोहन ताप ने शोषण उनमादन वानी, जन मोहन युवती उन मादन, लीया विद्या पानी ॥ सु० ३९॥

तिण थी रूप मदन सम हुयो, प्रगट्यो जग मांनी। मदन कुमर ए नाम बुलायो, सब जग पहचानी ॥ सु० ४० ॥ चौदमी वारे भीम गुफा में, प्राप्त पुष्प शय्यानी। फूल तणो छतर भलो मिल्यो, कीरती गजानी ॥सु० ४१ ॥ नवमी ढाले पुण्य रसाले, चौदे वस्तु मीलानी। अमोल ऋषि कहे संग्रहो सुकृत, जो सुख की चाहानी ॥ सु० ४२ ॥

॥ दोहा ॥ अहो श्रोता जन देखिये, पुण्य फल प्रतक्ष। रिपु भेजे दुःखस्थाने, ल्यावे लाभ समक्ष ॥ १ ॥ विपिन वन्ही जल निधि विषे, पुण्य एक रखवाल। जिण संचो सुकृतसिरे, तिणथी डर पे काल ॥ २ ॥ नित्य प्रति लाभ नवा नवा, लावे मदन कुमार। देखी अरी हृदये अती, उपजे दाह विकार ॥ ६ ॥ जेहनो पूर्ण आयू छे, तिण पे न चाले जोर। चर्म शरीरी विचनां मरे, करतां काम कठोर ॥ ४ ॥ दुष्ट न छोड़े दुष्टता, आणे रीस अपार। बली छलवा प्रद्युम्न ने, करेंते सुणो प्रकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल १० मी ॥ (सोकड़ली रोसा म्हाने खारो लागे जी–ए देशी) महा पुण्यवंत मदन, पुण्य थी संपत पावे जी ॥ टेक ॥ बज्रू मुख नामे भाई मोटो, ते करे मदन से अरदास। तुम हो भाई महा पुण्यवंता, खूब करया पुण्य प्रकाश ॥ पु० १ ॥ जिहां २ जावो तिहां लाभ उठावो, धन २ तुम अवतार। पंदरमी वारे खेलण चाल्या, लेइ भाइ परिवार

॥ पु० २ ॥ विपुल वन गिरां भयानक, तिण पासे आया चाल । जे गया पहली तिण वन में, ते सब पाम्या काल ॥ पु० ३ ॥ वडी उवाई देखंता ही । दोड्यो प्रद्युम्न तस ठार । साहसिक धीर पण गया उस वन में, भय नहीं लाया लगार ॥ पु० ४ ॥ नगाजयती सरिता कांठे, द्रुम अती सुविशाल । तस तले पणशिलापट ऊपर, बैठी ध्यानस्थ बाल ॥ पु० ५ ॥ जोबन झलती रूपेसागे, रती इंद्रको मन हरनार । गौर वर्ण मुख चन्द्रबिम्ब सम, मस्तक छूटा बार ॥ पु० ६ ॥ श्वेत स्फटिक शिलापर बैठी, श्वेतवसन सब अंग । स्फटिक रत्न मालकी सुमरण करे, दीठा आगे अनंग ॥ पु० ७ ॥ सर्व सरीरे शोभती रमणी, गमणी दमणी मदन । कुमर देखी पंचमरथी विंधाणो, वेशुद्ध हुयो निरख आनन ॥ पु० ८ ॥ एतले विपुलपंत एक खग, आई ऊभो करी प्रहार । मदन सरमाई दृष्टी आडी सोचे, विचाधर बोले विनयार ॥ पु० ९ ॥ हो सुकृत निधि थे मत सरमावो, ए छे तुमरे काज । प्रद्युम्न कहे ते कारण बतावो, ई कर रही यह ध्यान ध्याज ॥ सु० १० ॥ नगपुर पति सगराय प्रभंजन, वायुदेवी पटनार । रती माला ए कन्या जाई, प्रत्यक्ष रती अनुहार ॥ पु० ११ ॥ एक दिन राजसभा में आया, अष्टांगनिमित का जाण, भूपत पूछ्यो कुमरी को वर, ते बोल्यो इम वाण ॥ पु० १२ ॥ विपुल वने प्रद्युम्न मनोहर, आवसी गेंद खेलंत ।

तिथी वार वखत ए लक्षण, बतलाया बुद्धवंत ॥ पु० १३ ॥ तिण कारण यह पति की इच्छा, धर ध्यावे स्थिर चित ध्यान । इण पुण्ये ते लक्ष्य प्रमाणे, पधारया थे बुधवान ॥ पु० १४ ॥ हिवे पधारो प्रभंजन पुर, कृपा करी ग्रहो एह । इम सुण प्रद्युम्न गया तिण साथे, धरी अधिको स्नेह ॥ पु० १५ ॥ पीछे वाट जोई अति कुमरां, नहीं आया प्रद्युम्न जिवार । सब्बी जणा अति हरखित हूया, आया नगर मंझार ॥ पु० १६ ॥ वात जणाई निज २ माता ने, ते पण अती हरखाय । इतने दिन की मेहनत सफल भई, दुशमन को क्षय थाय ॥ पु० १७ ॥ कनक माला इम सुणी वार्ता, मुरछाई पड़ी धरणी तल। प्रद्युम्न२ करी ने तड़फड़े, जिम मछली बिन जल ॥ पु० १८ ॥ यम संवर नृप तब दोड़ी आयो विश्वासी कहे एम । महा पुण्यवंत मारयो नहीं जावे, निश्चय धरो तस खेम ॥ पु० १९ ॥ आशा धर ते रस्तो जोवे, दर्शन ने तरसे मन । श्रावण मेघ तणी परे जोवे, युग सम जावे क्षन ॥ पु० २० ॥ नगपुरे पधारया मदन जी, देखी हरख्यो परवार । लग्नोत्सव अती मंड़ाई, परणाई घर प्यार ॥ पु० २१ ॥ कामदेव ने रती तणी, मिली पुण्ये जुगती जोड़ । कुमरी जनक जननी के मन का, पूग्या वांछित कोड़ ॥ पु० २२ ॥ पीछा फिरता तिण ही बन में, विश्रामो लीयो तिण वार । ते अटवी पति सुर तब कोप्यो, शकटा नामे उदार

॥ पु० २३ ॥ जीत्यो कुमर हरख्यो ते देवत, देखी महा गुण खान। प्रेम भाव से देइने दवे, वस्तु दो परधान ॥ पु० २४ ॥ काम धेनु दूध पीवान दीधी, पुष्प को रथ शोभनीक। मदन रती तिय मांहि विराज्या, जोग मिल्यो सब ठीक ॥ पु० २५ ॥ इत्यादिक सोले लाभ थी शोभे, ज्यूं भरत सरदार। अपनी नगरी बाहिर आई, ऊतारयो सब परवार ॥ पु० २६ ॥ हाल सुठमी पृथिवी विषे सी, प्रद्युम्न पुण्य फेळाव। अमोल कहे असो भवी जना तुम, मठव करो ओछाव ॥ पु० २७ ॥

॥ दोहा ॥ मदन तदा निज मैत्रिने, भेज्यो तात ने पास। ते कमसंभर पे आई, दियो वृत्तांत प्रकाश ॥ १ ॥ सुणी मदन पुण्य वार्ता, हरख्या सभा परधार। वो मांपितु को करयो किमो, जेहनों कलसंगार ॥ २ ॥ दुशमन सुण मुरझाइया, पडियो शोक अपार। चोर कदु धारे नहीं, जिनरा पुण्य भंडार ॥ ३ ॥ कुमर बधाई लायगो, सबी धरे मन कोड। हयगय रथ पायक भणी, सिण गारे होडा होड ॥ ४ ॥ नगर सबी सिणगारियो, नगर नारी गहगाट। वाजिंतर गरजारते, चाल्या सब कर ठाठ ॥५॥ कुमर सामे सब आइया, मदन ऊठी तिणवार। मात पिता ने पगे पड़यो, सब को कियो जुहार ॥ ६ ॥ शोभ ऋद्धि प्रद्युम्न की, देखी सब विस्माय। धन २ जननी जनक ने, रत्न अमोल

जनन्याय ॥ ७ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ (आज आनंद घन जोगीश्वर आये—ए देशी) महानन्द पद पुन्याइ से पाई, सब करें कुमर बड़ाई रे लो । शुभ मुहूर्त पुष्प रथ के मांई, बैठा मदन रती आई रे लो ॥ महा० १ ॥ खेचरी सुंदरी चमर सिर ढोलें, एक बनिता छत्र धराई रे लो । किसीने ली झारी फूल चंगेरी, पानदानी तंबोल ठाई रे लो ॥ महा० २ ॥ मुख आगे छडीदार चोबदार, जय विजय बोलें बधाई रे लो । सब भाई चाकर सम चालें, मन में अति मुरझाई रे लो ॥ महा० ३ ॥ नगरी में चाल्या मध्य बजारी, सुणी समाचार नर नारी रे लो । कामनी कौतुक जोवाने आई, तरुण बाल बृद्ध सारी रे लो ॥ महा० ४ ॥ शुद्ध नहीं तन वस्तर केरी, अबला सबला पेरी रे लो । घाघरी तो न्हांखी सिरऊपर, ओढ़णी कमर टेरी रे लो ॥ महा० ५ ॥ कंदोरो गला मांहे बांध्यो, हार कटी लटकाणा रे लो । झट पट थी तूट्यो हार मोतिन को, भागतां बिखरया दाणा रे लो ॥ महा० ६ ॥ आंखे कुं-कम भाले काजल, नहीं चोली अंग मांही रे लो । कितीक नांगी जोवाने भागी, छोड़ सरम सगाई रे लो ॥ महा० ७ ॥ पतिजीतो जीमताही रहीया, बालक रोता छोड़ीरे लो । घर दुवार तो छोड्या उघाड़ा, एक २ ने आगे दोड़ी रे लो ॥ महा० ८ ॥ सुसरा जेठ पती

देभर की खबर न पड़े तिम मोही रे लो। ठाठ बण्यो बाजार में आई, मोहिनी पूर्व पुन्याई रे लो ॥ महा० ९ ॥ एक२ नें ऊपर पड़ती, भाड़ी जावे तिम भी लड़ती रे लो। केई गोरड़ी शृंगार मोरड़ी, देखण मेळें गोख चढ़ती रे लो ॥ महा० १० ॥ केई मजें घन रती ने ठांई, करमेवो कंठ ते पाई रे लो। केई करें घन मदन कुमर ने मिसी सुरी सम लुगाई रे लो ॥ महा० ११ ॥ रस्ता गली गोख आकाशी मोही, नर नारी ठठ्ठ भरयाइरे लो। मपोन्मेप जोवे दृष्टि लगाइ, केई प्रेमला कामवस पाई रेलो ॥ महा० १२ ॥ इम ठाठ थी आया राज दुवार, उतरया कचेरी मंझार रेलो। पिता सिंहासन ऊपर बैठा मदन करे नमस्कार रे लो ॥ महा० १३ ॥ छाती थी चांपी चुंबन लीधो, चिरंजीवो आशीष दीधोरे लो। माता वन्दन उमायो आ यो, लुलि लुलि नमस्कार कीधोरे लो ॥ महा० १४ ॥ कनक माला हरखीने उठायो, तत्क्षण छाती लगायोर लो। चुंबन ले इक बार बेठायो, कर चोड़ी बेठ्यो तिगठायो रे लो ॥ महा० १५ ॥ अचूक दृष्टी कनक माला लगाई, जोवे कुमर मदन के तांइ रे लो। रूप अ नूपम नव योवन तन, वस्त्र भूषण अती शोभाई रे लो ॥ महा० १६ ॥ कृष्णवर्ण सिर मोरमुकुट धर, कमल पम ज्यूं युग नेणो रे लो। कंबू गीवा चंद्रानन दिपे, मीं-कमाण अधर भरूयो रे लो ॥ महा० १७ ॥ दंतावली मुक्तावली सेजे, सूक्ष्म मूंछ बाल निरखे रे लो।

दीप शिखा कीर सम नासा, भासा मधुर ईखू रस खेरे लो ॥ महा० १८ ॥ पोहलो हृदय लंब हाथ रक्त नख, करी सूंड सम उरू चोड़ी दोरे लो । पुष्ट जंघा सर्वतन सुवर्ण मय, सागे छबी छे चित्र सोरे लो ॥ महा० १९ ॥ इम परशंसे मन में कुमर यह, साक्षात दीसे अनंगोरे लो । सुमती थी चित हुयो भंग, बीचार उपज्यो नंगोरे लो ॥ महा० २० ॥ धन ते नारी सफल अवतारी, इण थी पूरे निज इच्छारी रे लो। रमण गमण मन हरण संभोग को, मनोरथ मनमां बिचारीरे लो ॥ महा० २१ ॥ वींधी मनमथ पंचवाण थी, मुख उतरचो तिणवारो रे लो । कपोल कर धर दृष्टी मही पर, नेत्र नीर टपकारो रे लो ॥ महा० २२ ॥ ऊंडा २ नीश्वासा न्हांखे, नेत्रे ललाई छाईरे लो । माता रूप मदन देखीने, चित विस्माय तस थाई रे लो ॥ महा० २३ ॥ अहो माता इम कांई करोछो, तब ते कटाक्षे जोवेरे लो । कारण जाण्यो कांई शरीर को, ते तिहां थी अलगो होवे रे लो ॥ महा० २४ ॥ उठ आयो निज महल उछरंगे, भोगवे सुख प्रिय संगे रे लो । ढाल एका-दशमी पुण्य प्रसंगे, अमोलक ऋषि कहे सुचंगे रे लो ॥ महा० २५ ॥

॥ हरीगीत छन्द ॥ श्री प्रद्युम्न कुमार अपरनाम मदन गुण थी थयो । पूर्व भव को समंद श्री जिनेंद्र नारद आगे कह्यो ॥ नारी हरण संयोग इहां वियोग तेथी मा पितु नों भयो ।

दान संयम परशाद ऋद्धि अथाग पाय अमोलक जयो ॥ १ ॥

इति पुण्य कल्पद्रुमे ऋद्धि प्राप्त नामकः प्रथमस्कंधः समाप्तः ।

अस्मिन् स्कंधे ढाळ ११, दोहा ६९ ।

द्वितीय स्कंध ।

॥ दोहा ॥ प्रणमूं सिद्ध साधु मणी, सिद्ध करें मन काज । द्वितीय स्कंध रचवा मणी, सुबुद्धि दो महाराज ॥ १ ॥ काम महाबली जगत में, कनक माला न लाग्यो काम । कुल लज्जा मरयाद तज, कीयो काम निकाम ॥ २ ॥ मदन गया थी तेहने , अंगे उठी झाळ । तड़फ जळ विन मत्स्य जिम, यामों काळो म्याळ ॥ ३ ॥ मन ही मन में झुरती,

दुःख किणसे न कहाय । रात न आवे नींदड़ी, दिवसे नाहीं सुहाय ॥ ४ ॥ रुची न जागे खाण की, पाणी की नहीं प्यास । बैठत ऊठत नांखती, ऊंड़ा उश्वासनिश्वास ॥ ५ ॥ नेत्र रक्त तन उष्णता, जंभाईनों नहीं पार । वस्त्र भूषण ऊतारिया, निर्लज्ज फिरे ज्यूं गॅवार ॥ ६ ॥ उन्हालाकी बनवेलीज्यूं, नित्य २ सूखीजाय । बावन चंदन लेप थी, शीतलता नहीं थाय ॥ ७ ॥ क्षण घरमें क्षण बागमें, क्षण वापी आकाश । चैन जरा न पड़े कहीं, लागे सर्व उदास ॥ ८ ॥ अति प्रिय राणी तणा, यम संवर जाण्या हाल । घबराई बुलाई-या, राजवैद्य तत्काल ॥ ९ ॥

॥ ढ़ाल १ ली ॥ (मोटी या जग मांहे मोहनी-ए देशी) काम महाबली जगत में, तस संगे हो जनम खुवार । धन जे मोह फंद नहीं पड़े, ते तिरेंहो शीघ्र गती संसार ॥ का० १ ॥ राज्य वैद्य घणा आविया, घणा जाण कार हो औषध शास्त्र परवीन । परीक्षा अष्ट प्रकार की, तिण कीधी हो गुप्तार्थ चीन ॥ का० २ ॥ मल मूत्र नेत्र ने गंध की, वस्त्र जिह्वा हो जल नाड़ी ए आठ । जोया पण समझा नहीं, किण दुःख थी हो यह पोढ़ी खाट ॥ का० ३ ॥ औषध कोई लागे नहीं, मंत्र जंत्रादी हो नहीं चाले उपचार । महनत वस्तु निष्फल जावे, वैद्य घरे गया हो होईने लाचार ॥ का० ४ ॥ एक दिन मदन कुमार

मणी बोलावी हो कहे विद्याधरराय। माता दुःखी अती तुम तणी, अहोरात्री हो कल्प सम जाय॥ का ५॥ तूं तो मगन निज सुख में नहीं पूछया हो जननी का समाचार। माता पूछण आयो नहीं, दासे नहीं हो कोई सुख प्रकार॥ का० ६॥ पुत्र कपुत्र न हो इस भव जाई हो करो तेहने आराम। कुमर मवे कर जोडीन नहीं सुझन हो यह खबर स्वाम॥ का० ७॥ माता सम तिहुं लोक में, उपगारी हो दूजो नहीं दसाय। गर्भ जनन पोषण पालन, दु:ख महीने हो पाले तनुज सवाय॥ का० ८॥ इम कही शीघ्र ते आवियो, जिहां बैठी हो कनक माला नार। अती दुःखणी दखीकरी, तिण ने नम्यो हो व्यापो सोच अपार॥ का० ९॥ नग नीर वरमावतो, बोले त हो अती दीन वचन। हा दैव मुझ मावी तणो, यह केहवो हो दीसे खलो वन॥ का० १०॥ मुझ आधार तात मातको, तिम दूह न हो नमन आधार। मैं अभी गमाऊं दुष्ट रोगने, मंत्र देई हा देई औषध सार॥ का० ११॥ विचक्षण पण कर हाथ ग्रही, श्री आंगुलीसो दे नाडी न जाग। देखे विचारे उपयोग द, नहीं लागे हो कांई रोग का लाग॥ का० १२॥ उष्ण नहीं शीत पीत नहीं, न कफवारी हो त्रिदोष लगार। आतंक किंचित दीस नहीं, कांई होस हो चरित्र अनुसार॥ का० १३॥ तब पूछे नर्म मधुर वचन थी कहो माता जी हा थाने कांई दु:ख। किन

बोल्या समझाय नहीं, कृपा करीने हो प्रकासो स्वमुख ॥ का० १४ ॥ सा कहे अहो सर्व देखतां, मुझ दुःख की हो कथा नहीं कही जाय । सब जन ने अलग करो यदी, दाखूं हो जे थी मुझ दुःख थाय ॥ का १५ ॥ कुमर जी सब ने ततक्षणे, कीधा हो तिण घर थी दूर । कोई नेडा राख्या नहीं, दोई रह्या हो तब दीप्यो राणी नूर ॥ का० १६ ॥ विकल हुई तज लाजने, मोड़ी अंगने हो मोटी ऊबासी खाय । कटाक्ष सांधी देखे सामने, अती हेत थी हो मनकी बात जणाय ॥ का० १७ ॥ अहो प्राणेश थारा बिना, मुझ तन में हो उपज्यो घणो ताप । भला पधारया पावन करी, मैं दासी छूं हो साहिब छो आप ॥ का० १८ ॥ हरण कियो मुझ चित्त ने, कामण गारा हो पूर्व भवका कंत । तिणथी तुम पर माहिरो, मन लागो हो अतरथी अत्यंत ॥ का० १९ ॥ महल मालिया नहीं गमें, वस्त्र गहणा हो लागें भार समान । सुद्ध बुद्ध सब विसरी गई, तुमने देखी ने हो ठाम आया प्रान ॥ का० २० ॥ निश दिन तुम संग रेहवसूं, नित करसूं हो नवा २ बिलाश । अबला की वांहा साहीने, प्यारा पूरो हो शीघ्र दासी की आश ॥ का० २१ ॥ मुझ सरीखी सुंदर कामनी, तुम सरीखो हो भोगी भमर पुण्यवंत । लाहो लेवो इण अवसरे, भोग नीरथी हो मुझ तन करो शांत ॥ का० २२ ॥ मैं मयंगली मोह मदे चड़ी, तुम माहवत हो राखो

लाईठाम। घणी खेंच नहीं कीजिये, झट बोली हो उपजावो आराम ॥ का० २३ ॥ एह वचन मदन सुणी, दोई अंगुली हो घाली कान के मांय। आंख्या मीची इम कहे, धिक तुमने हो कांई भाल थाय ॥ का० २४ ॥ तू माता तीरथ समी, मैं तो छूं तुम नंदन बाल। था बुद्धि किम ऊपजी, कुल लज्जा तज हो किम हुई विकराल ॥ का० २५ ॥ सा कहे मैं तुम माता नहीं, मुझ पुत्र हो तूं निश्चय नाय। जङ्गल में मिलियो इम मणी, इम पोस्यो हो तुम पुण्य पसाय ॥ का० २६ ॥ मैं बोया अमृत फल मैंही चखू, ते वेला हो आई इण वार। सरोवर रस जल तीरथां, कांई करो हो बुद्धवंत विचार ॥ का० २७ ॥ छोडो चिंता मन तणी, मुझ वचन ने हो करो झट स्वीकार। नहीं तो तुम विरहवकी, मुझ प्राणज हो जास इण वार, ॥ का० २८ ॥ प्रद्युम्न कहे कर जोड़ ने, माताजी हो थारो कुल की लाज। अयोग्य काम अति निंदक, किम कीजे हो मोटो अकाज ॥ का० २९ ॥ इण लोक में इण थी मद होवे, परलोक में हो आवे नरक मझार। गज अंकुश थी वश होवे, तिम ज्ञान थी हो वश करो मन मार ॥ का० ३० ॥ इत्यादि घणां उपदेश थी, नहीं समझी हो मोह वश हुई नार। ऋषि अमोलक दूजा संहनी, सब समझ हो कही पेहली ढाल ॥ का० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ जभी मदमाती माननी, आणी मदन कुमार। उठ चाल्यो तब त्यां थकी,

विन देता सत्कार ॥ १ ॥ चिंते मारग चालतो, धिग २ काम बिकार। धिग २ नारी निर्लज्ज ने, मोह वश हुवे गॅवार ॥ २ ॥ बनिता भाव वेली समा, ऊंच नीच नहीं जोय। लिपट जाय झट जेहथी, कुल लज्जा तज सोय ॥ ३ ॥ जिम जल गमन अधोगती, नारी बुद्धी तेम। पंकज हंस भ्रमर पे, धारे सरीखो प्रेम ॥ ४ ॥ एक माने एक नयन में, एक वचन एक वयण। एक ने भोगे सेज में, कोण तेहनो सयण ॥ ५ ॥ मूषक थी डरे सिंहने ग्रहे, पडै देहली थी चढ़े पहाड़। पुरुष भाग्य नारी चरित्र को, कौन पूर्ण जाणे ताड़ ॥ ६ ॥ इम अनेक विध निंदता, नारीने मन मांय। ग्रामवाहिर उद्यान में आया पुण्य प्रगटाय ॥ ७ ॥

॥ ढ़ाल २ जी ॥ (हे पियू पंखीड़ा–ए देशी) अहो सुणो श्रोता जी-तिण अवसर ने मांय जो, आर्य ऋपि मुनि चरण करण गुणथी भरया रे लो। अहो सुणो श्रोताजी-स्फटिक शीला पे ताम जी, धर्म ध्यावा ने कायोत्सर्ग करया रे लो ॥ १ ॥ अ० श्रो० प्रद्युम्न आयो तेथ जो, देखी मुनिवर रोम २ अति हुलस्या रे लो। अ० श्रो० कियो लुलि २ नमस्कार जो, तस मन में बस्या रे लो ॥ २ ॥ अहो सुणों मुनिवर जी-आर्य ऋष ध्यान ने पारजो, बोले देवाणू प्रिय दया पालिये रे लो। अहो सुणों कुमरजी-छोड़ी अनीति आचार जो, जिम सुख होवे तिम सुमारग चालिये रे लो ॥ ३ ॥ अहो सुणो मुनीवरजी-कुमार कहे

करजोड़ जो राम्यो कृपानिधी कृपाकर मुझ पाव ने रे लो। अहो सुणो मुनिवर जी, मुझ तन रूप न दुख जो, इच्छा किम करनी म्हारी मावने रे लो ॥ ४ ॥ अ० कृ० पूर्व भव की वात जो बहुला मधुराजा मद मोहथी भरयो रे लो। अ० कृ० हेमरथ नृप की नार जो, इन्दुप्रभा नो शील भंग जबरी थी करयो रे लो ॥ ५ ॥ अ० कृ० ते हुइ पट्ट कनक माल जो, पूर्वकर्मे मोहिनी तने करजी र लो। अ० कृ० दान संयम प्रताप जो, पोडश लाभे ऋद्धि तुमने नीरजी र लो ॥ ६ ॥ अ० कृ० कृग मुझ सातन भातजी, कुल धाम ठाम मैं किहां थी आवियो र लो। अ० कृ० सोरठ दुआरका मांय जो कृष्ण वासुदेवनी रिद्धी सब दर भावियो रे लो ॥ ७ ॥ अ० कृ० तस रुक्मणी पटनार जो, तम नंदन तूं हेमरथ जीव हरण कियो र लो ॥ अ० कृ० ॥ शिला नीचे दबाय जो, लायो यम संबर घट तुम विरतंत थयो रे लो ॥ ८ ॥ अ० कृ० किम करमें विजोग जी, माता नो मुझ हुयो ते फरमावियो रे लो। अ० कृ० कोसंबी नगरी नाथजो, महीधर नामे राणी थी मोहनावती रे लो ॥ ९ ॥ अ० कृ० मति आपस में हेतजो, सार्थे खेलें छे लाहो घन जुवानी नो रे लो। अ० कृ० बसंत ऋतु तब आयजो, मुरायो मेल करण मती हुई भवानी रे लो ॥ १० ॥ अ० कृ० तब स राणी राय जो क्रीड़ा करवा रथ में बैठी मंचरया रे लो। अ० कृ० मनोरम

नामें बाग जो, तिण में आई मन गमता भोजन करवा रेलो ॥ ११ ॥ अ० कु० होद में रंग भराय जो, खेल्या राणी राजा दोई रंगमां रेलो । अ० कु० फिर करमें कर जोड़ जो, चाल्या फिरवा वन भूमी उमंगमां रे लो ॥ १२ ॥ अ० कु० तिण बगीचा मांहे जो, मोरड़िये परसव्या ईंड़ा एकांतमां रे लो । अ० कु० दंपती आता देखजो, भय पामी ने केकी कूके आतंकमा रे लो ॥ १३ अ० कु० देखी विस्मय पाय जो, आया चाल्या तिण सारगी सामने रे लो । अ० कु० तब मयूरी तेहजो, उड़ बैठी वृक्ष ऊपर भय अति पाम ने रे लो ॥ १४ ॥ अ० कु० युगल इंड़ा पासे आयजो, राणी इंड़ा उठाया अति उछरंग सूं रे लो । अ० कु० हाथ को रंग तस लाग जो, मूल रंग बदली बद रंग हुवा कर रंग सूं रे लों ॥ १५ ॥ अ०कु० तब मयूरी अति अरड़ाय जो, दया लाई मेली इंड़ा ते पाछा गया रे लो । अ० कु० मयूरी तिण पास आय जो, ओलख्या नहीं इंडा रंगे मन भरमाया रे लो ॥ १६ ॥ अ० कु० सौले घड़ी ने मांय जो, मेघ सघन घन बरस्याथी इंडा धोया रे लो । अ० कु० तब मयूरी निकट आय जो, अति प्रीती थी इंडा औलखी ने जोया रे लो ॥ १७ ॥ अ० कु० सोले घड़ीनों अंतराय जो, तुझ माता बांधी तिहाते सेज में रे लो । अ० कु० सुख भोगवता काल जो बीतिया, त्यां पूर्व पुण्य ना हेजमें रे लो ॥ १८ ॥

अ० कु० विमल मती गुरुणी पास जो, दीक्षा लीधी करणी कीधी आकरी रे लो । अ० कु० अन्त आलोया मंथार जो, एक मास को कर पारखें स्वर्ग अवतरी रे लो ॥ १९ ॥ अ० कु० त्यांथी पूर्ण आयु पाय जो, हुई पटरानी कृष्ण घरे ते सुंदरी रे लो । अ० कु० कर्म भुगत्यां विना न छुटत जो, तुमन अंतर सोलह वर्ष लियो इहां सरी रे लो ॥ २० ॥ अ० कु० इम आपी भव बांधो कर्म जो, जो परम सुख निश्चय थी तुमने चाहिये रे लो । अ० कु० दूजे हुलासे दूजी ढाल जो, रुक्मणी पूर्व भवनी अमोलक गाइये रे लो ॥ २१ ॥ अ० कु० ॥

॥ दोहा ॥ कहे मुनिवर सुणो मदन जी, अब कनक माला के पास । रोहणी प्रज्ञप्ती उभय, विद्या ग्रहो सुविलास ॥ १ ॥ ते छें तुमरे भाग्य में, चिंतत कारज थाय । मोहवश थाने देव से, साची यह मुझ वाय ॥ २ ॥ पद प्रणमी मुनीराय का, कहे कुमर जोड़के हाथ । मठो मंज्यो संशय माहिरो, हे अनाथ के नाथ ॥ ३ ॥ वंदना करिने चालियो, धरतो मन आनंद । आयो कनक माला कन, ऊभो देखे मुखचंद ॥ ४ ॥ नमस्कार कीधो नहीं, नहीं दीधो सनमान । बैठो पासे भावने, लेवा विद्या प्रधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ (जोबन धन पाहुणा दिन चारा—ए देशी) देखोरे भाई चरित्र कर किम नारी त पुण्यवंत फंद ना फस्यारी ॥ टेर ॥ देख मदन को विकसित चेहरो,

॥ दे० १ ॥
हरषी कनक मालारी । यह आया मुझ रूपे मोहित हो, पूरसी इच्छा म्हारी ॥ दे० १ ॥
तब कहे सुणो हे पुरंदर, मुझ पावन करी पधारी । यह तन मन धन तुमारे अर्पण, करसूं
कहणी तुम्हारी ॥ दे० २ ॥ कुमर कहे यह बात प्रगट्यां, बदलसे सब परिवारी । तब मैं
बालक कांई करूंगा, ते पहली देवो बतारी ॥ दे० ३ ॥ ते कहे दो वस्तु त्रिभुवने दुर्लभ, ते छे
पासहमारी । मुझ मन तुम्हा थाने दूंगी, तुम होगे सब से भारी ॥ दे० ४ ॥ कहे कुमर तम
नाम फरमावो, ते भेद सहित उचारी । रोहणी थी रूप विचित्र बनावे, प्रज्ञप्ती करे सेनारी
॥ दे० ५ ॥ विद्या लेवाने मदन बुद्धवंता, सुघडाई थी मीठा बोल्यारी । तुम आज्ञा न
उलंघी आजलग, मैं तुम किंकर समारी ॥ दे० ६ ॥ दो विद्या तुम कहणी करसूं, योगा
योग विचारी । तुम हुकम थी नहीं मैं अलगो, यह मुझ बचन पकारी ॥ दे० ७ ॥ कामांध
हुई तब ते कामनी, तक्र दुग्ध समधारी, संतुष्ट हो विधी सहित दो विद्या, दीधी कर
कृपारी ॥ दे० ८ ॥ कुमर कहे साधन करिने, आस्यूं पास तुमारी । हुकम प्रमाणे चाकर
होई, करसूं सेवा थारी ॥ दे० ९ ॥ झट एकांत जा विद्या साधी, शीलवंत महा भाग्य
धारी । ततक्षण सिद्ध हुई युग विद्या, अल्प ही देर मंझारी ॥ दे० १० ॥ खग पती
आतुर बेठी थी, मदन थी करवा जारी । सिद्धी विद्या हरषी कुमरजी, आया जिहां मातारी

॥ द० ११ ॥ पाय प्रणमी कहे हुकम दो, ते करूं पूर्ण अवारी । सा कहे दासी ने पग कांई लागो, मैं छु तुम्हारी प्यारी ॥ द० १२ ॥ कहे प्रद्युम्न मात तात निज, नजरे नहीं दी ठारी । तिम पी तुम मुझ जनक जननी सम, बोलो बोल विचारी ॥ दे० १३ ॥ व्याकुल हो दोनों कर जोडी, बोले नरमाई नारी । बोल्या बोल ने पाळो प्यारा जी, बदळो मतना अगरी ॥ द १४ ॥ बोल निभाया रामचन्द्र श्री, बनवासे ते गया री । कान्ताभ्रात नो दुःख वज रोपा, विभीषण वाक्य समारी ॥ द० १५ ॥ उत्तम नर की परीक्षा इणपर, जो पाले वाचारी । अब वादा रोंचो न प्रीतम, सत्रो प्रयक उठारी ॥ दे० १६ ॥ मदन कहे मैं वाक्य न चदलूं मत दो कलंक लगारी । अयोग काम कदापि न करूं, यह सही मुझ मतिक्षारी ॥ द० १७ ॥ अहो इण में कांई अयोग काम छ, योग्य मानी समीने यारी । इन्द्रचन्द्र गुरू मना कीधी, तुम इमनी कांई विचारी ॥ द० १८ ॥ कहे मदन तमफल तुम देखो, इन्द्र न महम छिन्नारी । चन्द्र कलंकी गुरू मान भंग्यो ब्रह्म का स्वर मुख कब्बारी ॥दे०१९॥ रावण आदि गया दुर्गति में, तीण भी अती अयोग्य कामारी । इण भव अपयश परभव दुर्गती, त कहु शस्त्र अनुमारी ॥ दे० २० ॥ पहली तो तुम माता म्हारी, पण पान थे करायारी । हवी हिवे तुं हुई मम गुरुणी विद्या दो दातारी ॥ दे० २१ ॥ तिण थी मैं तुम

चरण का चाकर, बालक तुझ खोलारी, इण कारण यह बात न बोलो, कहुं करजोड़ अम्मारी ॥ दे० २२ ॥ सुण बचन खेचरी उकलाई, अंग २ व्यापी ज्वालारी । हो मद मातो विकराल वाघणी मम, लागी बलात्कार करवारी ॥ दे० २३ ॥ आई कुमर कने पक ड्यो पल्लो, निर्लज्ज पणो मन धारी । छोड़ाई पल्लो जुहार करीने, कुमर निकल्या घरवारी ॥ दे० २४ ॥ निज भवने आई रह्या सुख में, ढाल तीजी ने मंझारी । शील सुरंगो मदन २ जय, अमोलक ऋषि ऊचारी ॥ दे० २५ ॥

॥ दोहा ॥ मदन ने नाठो देखने, धरनी पडी तत्काल । बूम पाड़े अति जोरसे, रोवे सा असराल ॥ १ ॥ हाथ घसे हियो कूटे, आथड़े धरणी शीश । हा हा दैव इम ऊचरे, मोटी पाडे चीस ॥ २ ॥ पछतावे मन में घणी, धिग २ मुझ अवतार । मैं ठगाणी ठगना ठग्यो, खोई विद्या सार ॥ ३ ॥ पण विपते पाडूं तेहने, करूं चरित्र अवार । तो मुझ मन संतोष हो, मरे जो काम कुमार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ (रे लाला बीछीयो म्हारो वाजणो-ए देशी) जोजो नारी चरित्र ने ॥ टेक ॥ रे भाई आक्रंद सुणी पटराणी को, दोड़ी आया दास दासी परवार रे भाई । सोका पण आई घणी, पूछे बारं बार विचार रे भाई ॥ जो० १ ॥ फंदो त्रिकट नारी तणों,

सुगुण। मत फँसो इण फोयरे माई। नारी श्वानी सर्मी रीस्यां फाटे, ते सीज्या भी मरे भस्फोपर माइ ॥ जो० २ ॥ रे० सब समझावें अती घणो, ते तो रोवंती ना रहंत रे०। दासी दोड़ी गई राय प, राणी को वृतांत कहतरे० ॥ जो० ३ ॥ रे० सुण भूप शीघ्र आयो तिहां, तेहनो दुःख देखी दुखीयो होयरे०। पूछे धीरज देयने प्यारी किम कारण तूं रोय रे ॥ जो० ४ ॥ रे० सा कहे सुम छीनो मती, मैं छूं तुम पुत्र की नार रे०। घणा छोरू सिर चढ़ाविया, अभी मुज भी करयो बलात्कार रे० ॥ जो० ५ ॥ रे नारी कुण पुत्र किम इज्जत लही, झट बतावो तेहनो नाम रे नारी। त निर्लज्ज महा दुष्ट की, खाल उतरावूं इण ठाम रे नारी ॥ जो० ६ ॥ कहे रामा परदेशी मानती, ते कदी नही दूजा का होय हो पती। पाळी पोसी मोटो कियो, तिणरा फल यह होय हो पती ॥ जो० ७ ॥ प्राणेश्वर तुम प्रसाद थी, सुमसील को नहीं हुयो भंग हो पती। मैं अबला कांई कर सकूं, ते तो गुमानी में चढ्यो मनग हो पती ॥ जो० ८ ॥ ऐसे दुष्ट कुगम का, हरण करो झट प्राण हो०। तो सीन तो सुम नो मलो, नहीं तो मरी सुम जाण हो० ॥ जो० ९ ॥ सुण सम मचर सम मरीखो, क्रोध वश हो धम धमाय र माइ। हा हा दुष्ट की दुष्टता, किण कर्म भी जणाय रे माई ॥ जो० १० ॥ यह बात यदी परगट हुवे, तो आपकी निंदा थाय रे नारी। गुस पणेही

मरावसूं, इम कही भूप पुत्रोंपे जाय रे नारी ॥जो० ११॥ रे० पॉचसोने एकांत में, बोलाई नृप कहे एम रे पुत्र। मारो मदन कला केलवी, कोई जाणन न पावे जेमरे पुत्र ॥जो०१२॥ रे० सर्व सुणी अचरज हुआ, ते वचन कियो प्रमाण रे भाई। हर्षित होकर मन में चिंतवें, किण विध हरवा प्राण रे भाई ॥जो ० १३॥ रे० सब आया प्रद्युम्न कने, कांई सेवा करें धग प्रीत रे भाई। वार २ प्रशंसे पुण्य ने, ते वणिया कपटी मीतरे० ॥ जो० १४ ॥ रे० कुमरां तणी कपट कला, विद्या देवी कही विस्तार रे भाई। मदन सुणी सावधान हुयो, करे तिण कहणी अनुसार रे० ॥ जो० १५ ॥ रे० खेलण आया अंधवावीपे, आपस में कियो संकेत रे०। मदन ने न्हांखणो इण खाड में, तेनो मदन भेद लहंत रे० ॥ जो० १६ ॥ रे० दूजो रूप बणायने, आप गुप्त रह्यो एकंत रे०। ते तब चड्या मोटा झाड़ पे, वावी में कूदी पडंत रे० ॥ जो० १७ ॥ रे० सर्व कूवा में झीलता, मदन ने मारण काम रे। जोवें पण लाधें नहीं, तेना नीर खाड़ा जोया तमाम रे० ॥ जो० १८ ॥ रे० तिणरा कर्म तिण ने जणाव वा, मदन महा बलवंत रे०। शिला विक्रवी वावी जेतली, पुष्करणी पे ढांकंत रे० ॥जो० १९॥ रे० विद्या जोग सब भाई तणा, शिला ने पग चेंटाय रे भाई। लटकाया वागल की परे, दुःख थी अती अरड़ाय रे भाई ॥ जो० २० ॥ रे० एक छूट्यो सो भागीने, रोवत तातपे

आय रे माई। गजब हुयो अनर्थ हुयो, छोडो बापजी करो झट सहायरे माई ॥ जो० २१ ॥ रे० पूछो तेने विश्राम दे, कांई हुयो किम घबराय रे० । कांई गजब हुयो ते कहो, किहां छे तुम माय रे० ॥ जो० २२ ॥ रे० तिण वीतक बात सब कही, माई ने दबोया मदन रे०। ऊपर शिला मोटी ढांकी त मांही करें छे रुदन रे० ॥ जो० २३ ॥ रे० खग पति कोपी कहे अधम, थयो विद्याधी चढ्यो पूर रे० । दुष्ट मारे गरीब माई मयी, कांइ इतनी आइ मगरूररे० ॥ जो० २४ ॥ र पीठा अब तुझ पुण्य खूटया, रूठया तुझपे विद्यानाथ रे०। खाल चोपी दूजा खडकी , सुखों अमोल सदा पुण्य साथ रे० ॥ जो० २५ ॥

॥ दोहा ॥ सेनापती बुलायन, हुकम कर खगराय। चतुरंगी सेना सजी, शीघ्र खडी करो ठाय ॥ १ ॥ शस्त्र सस्त्र सजी करी, मयंगल चढ़ राजान। मागध भाट्ण सोमठ, सरा साथे सुलतान ॥ २ ॥ सभी रणांगण आविया, बोले नृप पुकार । क्यों छिपिया विपापली, अर अनाचारी गंवार ॥ ३ ॥ कांइ मारे तू बालने , जो छें गरीब कुलवंत । आवो म्हारे सामने, पूरूं मन की खंत ॥ ४ ॥ च्यार्यू दूध इसी मान को, तो मुझ नाम छे ठीक । इवे पुण्य खूट्या बापरा, हो माथ निर्भीक ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ (राधव मानिया हो–ए देशी) गुणुणा सांभलो हो, मांन ने नहीं

आंच ॥ टेक ॥ सुण बचन अति हीन पिता का, प्रजल्यो प्रद्युम्न कुमार। अहो अनाचारीना भीड़ उद्धारक, कांई करो अहंकार ॥ सु० १ ॥ विद्यावले तब मदन महाबली, करी सेना तइयार। हाथी घोड़ा रथने पायक, महा बलवंत जुझार ॥ सु० २ ॥ काला श्याम घटा सरीखा, मातंग महा मदवंत। सुवर्ण होदा विजली चमके, घंटा गरजारव करंत ॥ सु० ३ ॥ अति उत्तम जातवंत घोड़ा, सजी पलाण हुस्यार। थई २ मही पे नृत्य करंता, सूरा बैठा हुस्यार ॥ सु० ४ ॥ रथ संग्रामी अतिही नामी, जोतरिया गोपूत। झण झणाट करती घुंघरमाला, शस्त्र भरया वेसूत ॥ सु० ५ ॥ पायदल महा सूर मद माता, सज्या बखतर अंग। खड्ग आदि शस्त्रास्त्र लेईने, डोलें वीर छकंत ॥ सु० ६ ॥ अश्व थी अश्व गज थी गज बल, रथ थी रथ मीलाय। पायक २ जूझतां, सिंधूरागे बाजा बजाय ॥ सु० ७ ॥ ॥ सु० ७ ॥ रक्त प्रणाल आमिष कादव, हुयो तिहां विकाल। कायर की तो छाती धूजे, सूरा होय उजमाल ॥ सु० ८ ॥ थोड़ी बारमें यम संवर को, कटक घटायो कुमार। पकड़ण चाल्यो बाप ने, ते भाग्यो गाम मंझार ॥ सु० ९ ॥ आवियो कनक माला पासे, कहे घबराइ एम। दे दोई विद्या झट मुझने, जो तूं वांछे खेम ॥ सु० १ ॥ महा धूतारो मदन हरामी, काटी म्हारी सैन्य। दे विद्या अभी तेने मारी, पार पाडूं वेन

॥ सु० ११ ॥ रानी अति विलखाई बोली, ते न रही सुत पास । नृप पूछे ते किण ने दीधी, झट द नाम प्रकाश ॥ सु० १२ ॥ धूजती कहे पूतो मदन, ठगली सुझने स्वाम । राय सुधी न सुस्तो हुयो, करयो अविचारयो काम ॥ सु० १३ ॥ प्रद्युम्न महा पुनवंत वह मागी, शील संतोष भंडार । ते कर्म कदी करे न खोटो, गुणवंत न मोह कार ॥ सु० १४ ॥ यह नारी व्यभिचारणी, देखी मोटी पुत्र रूप । काम वश हो विगाड़ई, कीधो चरित्र विरूप ॥ सु० १५ ॥ हारया भी अपमान होवे, जीत्यो तो नहीं लाभ । इम अनेक चिंतवन करतो, आयो कटक ने मांय ॥ सु० १६ ॥ मदन पिता में किम सामे हुयो, किया कर्म अविचार । तात पूजनीक सब रीत, तिण थी तो मली हार ॥ सु० १७ ॥ जो सब अंग की करे शोभा, धार्मेन्द्री छ श्रेष्ठ । तोपन रहे ते मस्तक नीचे, इम ही में छै कनेष्ट ॥ सु० १८ ॥ शुभ तज आयो पिता पास, चरणे दीधो शीश । पुत्र में कुपुत्र हुयो मापितुने न करणी रीस ॥ सु० १९ ॥ संवर वचन छोड़ोया, गया ते आपा जिहां भुपाल । कहे आज पीछे मदन से, इम रहसां दूरा पास ॥ सु० २० ॥ सब सगा सजन मिलिया, गया गाम में वधाय । खावे पीवे रंग में रहवे, मन को मेल न जाय ॥ सु० २१ ॥ लोक प्रशंसा कर मदन की विद्या भलियो विनीत । हराया माई बाप ने, तिम सेव करे धर चित ॥ सु० २२ ॥ मदन

कीर्ती निज अप कीर्ती, सुण मात पिता मुरझाय । प्रद्युम्न घर में जावत आवत, किहां आदर नहीं पाय ॥ सु० २३ ॥ फट्यो मन तब कुमर केरो, गमे नही खान पान । सब वस्तु लागे अलखामणी, ध्यावे आरत ध्यान ॥ सु० २४ ॥ हिवे तिणरा पुण्य जोग से, सच्चा सजन को मिलाप । होवे ते भवी सांभलो, ढाल पंचमी अमोल कही आप ॥ सु० २५ ॥

॥ दोहा ॥ एक दिन श्रीमदन जी, अति चिंता तुर होय । आर्ति करे बेठा बाग में, मुझ वारिस नहीं कोय ॥ १ ॥ नारद ऋषि नभ जावतां, जोयो थो संग्राम । लख्यो अली रुक्मणी तनुज, पायो घणो अराम ॥ २ ॥ ते फिरता आया बागमें, मदन कुमर के पास । अहो वत्स फिक्र करो किसी, मुझने दो प्रकाश ॥ ३ ॥ हरख्यो मदन ऋषि देखने, ढुली कर्यो नमस्कार । कर जोड़ी इण पर भणे, मेरो न कोई संसार ॥ ४ ॥ माय बाप वैरी हुया, भाई ताकें नित छल । बिन आदर श्रेय मरण छे, धिग २ मुझ रूप बल ॥ ५ ॥ मुनी कहे बछ मुंहथी, इम किम बोले वाय । तुझ सरीखो सोभागियो, तीन भुवन में नाय ॥ ६ ॥ महा पुण्य को तूं पोरसो, सब छें तुझ संसार । थारे रिद्धी जेह छे, किंचित करूं उच्चार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ (हूं तुझ आगल स्यूं कहूं कन्हैया—ए देशी) महा पुण्यवंत तूं

॥ सु० ११ ॥ राणी अति विलखाई बोली, ते न रही मुझ पास । नृप पूछे ते किम ने दीधी, झट दे नाम प्रकाश ॥ सु० १२ ॥ पृथवी कहे धूतो मदन, ठगसी मुझने स्वाम । राय सुणी न सुखो हुयो, करयो अविचारयो काम ॥ सु० १३ ॥ प्रद्युम्न महा पुनवंत बड भागी, शील संतोष भंडार । ते कर्म कदी करे न खोटो, बुद्धवंत न मोटे कार ॥ सु० १४ ॥ यह नारी व्यभिचारणी, देखी मोही पुत्र रूप । काम वश हो विपादई, कीधो चरित्र विरूप ॥ सु० १५ ॥ हारया थी अपमान होवे, खीस्यो तो नहीं जाय । इम अनेक चिंतवन करतो, आयो कटक ने मांय ॥ सु० १६ ॥ मदन चिंते मैं किण सामे हुयो, किया कर्म अविचार । तात पूजनीक सर्व रीते, तिण थी तो भली हार ॥ सु० १७ ॥ सो सब अंग की करे शोभा, प्राणेंद्री छे श्रेष्ठ । तोपण रहे ते मस्तक नीचे, इम ही मैं छूं कनेष्ट ॥ सु० १८ ॥ सुत तब आयो पिता पासे, चरण दीधो शीश । पुत्र मैं कुपुत्र हुयो, मापितुने न करणी रीस ॥ सु० १९ ॥ चंचर चंचन छोड़ीया, मच ते आया जिहां भूपाल । कहे आज पीछे मदन से, हम रहमां सूरा चाल ॥ सु० २० ॥ सब सगा सज्जन मिलिया, गया गाम में वधाय । खावे पीवे रंग में रहवे, मन को मेल न जाय ॥ सु० २१ ॥ लोक प्रशंसा करे मदन की, विद्या बलियो विनीत । हराया माई बाप ने, तिण सब करे घर चित ॥ सु० २२ ॥ मदन

पृथ, हो पू० । आपण विमाणे वेसी चालसा म०, कृष्ण रुक्मणी जेथ हो पू० ॥ महा०
९ ॥ मदनआयो झट तातपे म; पूणमे लुल २ पाय हो पू० । नेत्र नीर वरसाव
तो म०, इण परे बोले नरमाय हो पू० ॥ महा० १० ॥ कुपुत्र मैं आपको पिता जी,
दीधो घणो दुःख हो मावित्र आप। ते अपराध कृपा करी पिताजी, खमी उपजानो सुख
हो मावित्र आप ॥ महा० ११ ॥ माता ने चरणे पड़्यो म०, कहे करजोड़ी इम हो पू० । मुझ
इच्छा सब पूरवी, माताजी, मैं उरिण हो सूं किम हो मा० ॥ महा० १२ ॥ तात मात तुम
सारीखो मावित्र, उपगारी त्रि भुवने नाय हो मावित्र आप। पर्वत शिलाथीकाढ़ने मावित्र, मोटो
करयो सुख मांय हो मा० ॥महा० १३॥ आप प्रशादे मृत्यु थी बच्यो मा०, पायो प्रवल रिद्ध
हो मावित्र आप। सर्व पूरी म्हारी मनरली मा०, थयो मनोरथ सिद्ध हो मा० ॥महा०
१४ ॥ हिवे जावूं निज कुल विषे मा०, नारद ऋषिने साथ हो मा० । कुरले घणो
मम काल जो मा०, छोड़ता पालक नाथ हो मा० ॥ महा० १५ ॥ मां बाप लगावो मुझ
छातीए मा०, चूंबन ले सुख उपजाय हो मा० । जन्मवीछोवो एत से मा०, तेथी जीव
दुःख पाय हो मा० ॥ महा० १६ ॥ इम सुण यम संवर रायजी मदन जी, कनक माला
पटनार हो पू० । अती विलखा हुया तदा म०, आंसू पड़ें चोधार हो पू० ॥ महा०१७॥

कुमर छे मदन जी, तुम सम त्रिलोक नाथ हो प्रद्युम्न लाल। स्वर्ग सरीसी दीपती मदन जी, द्वारिका नगरी शोभाय, हो प्रद्युम्नलाल ॥ १ ॥ महापुण्यवंत तूं कुमर छे ॥ टेक ॥ वासुदेव छे कृष्ण जी म० ते तुम तात कहवाय, हो प्र० । बत्तीस हजार राण्या में बड़ी म०, पटराणी रुक्मणी माय हो प्र० ॥ महा० २ ॥ दादा जी वसुदेव छे म०, दादी बहोत्र हजार र प्र । दश दशार छें महाबली म०, बलभद्र काकाजी सार, रे प्र० ॥ महा० ३ ॥ पांच सेतो महावीर छें म०, साठ हजार दुरदंत रे प्र० । गजरथ अश्व महभ वेतालीस म०, क्रोड़ अड़तालीस भटत रे प्र० ॥ महा० ४ ॥ और मा़द्दिषी अती घणी म०, छप्पन क्रोटी परवार रे प्र० । यह तिण आगल तुच्छ छे म०, कांई तूं इण में मोसार र प्र० ॥ महा० ५ ॥ चालो निजघर शीघ्र थी म०, पर घर कांई मानो मोज हो प्र० । मैं आयो थानें बुलावणा म०, अवसर मोटो खोज हो पू० ॥ महा० ६ ॥ अवसरे आदर पाइये म०, यह अवसर मत गमाय हो प्र० । अवसर कारज सिद्ध होव म०, अवसर चूक्या गोता खाय हो प्र० ॥ महा० ७ ॥ मदन कर जोड़ी इम भणे ऋषिश्वर, विन पूछ्यां वात मात हो मुनिवर राय । किम आवाये कहो दुवारका ऋ०, जे उपन्यां उत्तम जात हो मुनिवरराज ॥ महा० ८ ॥ मुनि कहे म्हें पूछो मायने म०, शीघ्र आवो पाछा

पहुँचावण भणी त्यां मील्या म०, सब सज्जन तिण वार हो पू० ॥ महा० २६ ॥ मध्य बजारे चालीया म०, पुरजन अचरज पाय हो प्र० । कुण मात तात पुण्यवंत का म०, किण नगरी यह जाय हो पू० ॥ महा० २७ ॥ घणो संघ आयो गाम बाहिर म०, पूछे ताम प्रधान हो पू० । कुण मात छे आपकी म०, गाम किसी जात ठीकाण हो पू० ॥ महा० २८ ॥ नारद कहे सब सांभलो खेचरो, दुवारा नगरी ना यदूनाथ हो विद्याधर लो । कृष्ण वसूदेव इण ना पिता खेचरो, रुकमणी मात रिद्धि घणी साथ हो वि० ॥ महा० २९ ॥ मात तातने पगे लाग्या म०, सब ने वंदन कीध हो पू० । करजोड़ी कहे कृपा राखजो सब जन, सब कहें करो कारज सिद्ध हो पू० ॥ महा० ३० ॥ नारद मुनि के विमाण में म०, बैठी उड़्या जिम कीरहो प्र० । ढाल छठी अमोलक भणी श्रोताजी, चाल्या मदन सागे पीर हो श्रोताजन ॥ महा० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ सब सज्जन उर्ध्व देखतां, अदृश्य हुयो कुमार । प्रेम उमड्यो विरह भर्‍यो, छूटी आंसूधार ॥ १ ॥ गुण संभारत सब फिर्‍या, दीसे सूनों साथ । गली बजार घर महल में, सब करें मदन की काथ ॥ २ ॥ महल कचेरी खाली दीसे, शून्य मदन विन रिद्ध । नाक विना जिम देहड़ी, लूण विन भोजन विध ॥ ३ ॥ चंद्र विना रजनी परे, नीर

आसिर पर थे पर थयाम०, छोडी चाल्या हम भवन हो प्र० । हम मरुधर छोडिने मदन जी, कियो मान सरोवर गमन हो पू० ॥ महा० १८ ॥ पांच से माता ने जुदी २ म०, कीधी ढलि २ प्रणाम हो प्र० । अपराध मर्व खमाइयो म० कमो निज घर जाया काम हो पू ॥ महा० १९ ॥ माइ न पण मंतोपीया पू०, मामत अने मंत्रीस हो पू० । अवगुण खमी कृपा राख जो पू० इम कही नमायो शीश हो पू० ॥ महा० २ ॥ आशीश दीयो पीरंवीयो पू०, जावानी सुधी बात हो पू० । छाती फाट दीयो उमग प्र०, गुण हृदय यार आव हो प्र० ॥ महा २१ ॥ नाना मोटा दाम दासी ने पू०, मिल उपजाया प्रम हो प्र० । विनय थत सघने चालो प्र०, मघ कहे रखजो प्रेम हो पू० ॥ महा० २२ ॥ कामनी पास आविया प्र०, कई रह जो सुख मांय हो प्रमला नार । नहीं मुहाव तो पीहर आ जो कामनी, करजो थारी ज्यूं इच्छाय हो प्र० ॥ महा० २३ ॥ म निज मात तावन मिली का०, लई सम ने गुलाय हो प्रे० । चिन्ता कुछ करजो मती का० शीघ्र मीलाप आपणो थाय हो प्रे० ॥ महा० २४ ॥ नेत्रे नीर वरसावती का०, कह मत भूल जो भरतार हो प्राणेश्वर स्वाम । झट दर्शन दीजो दासी ने प्रीतम जी, हमने आपको आधार हो प्राणेश्वर स्वाम ॥ महा० २५ ॥ प्रेम वचने सम संतोप ने पू०, आया महलन पधार हो प्रभु० ।

पञ्चर वेदी करी चहूं कानी, छज्जो झूलो दीपावे ॥ हर्ष० १५ ॥ वृषभ कुरंग सर्प गज गाजी, अष्टापद शार्दूल मंडावे ॥ हर्ष० १६ ॥ आंब जांब केल कचनार अशोक, पलास सरसूंदी चित्रावे ॥ हर्ष० १७ ॥ राम लक्ष्मण दशकंधर को जुध, नाना मनुष्य वणावे ॥ हर्ष० १८ ॥ हंस सारस कीर मोर मैना कोकिल, घणा पक्षी युग्म बैठावे ॥ हर्ष० १९ ॥ शिखर मध्य गुमट चउबाजू, पंचमणी कलश जमावे ॥ हर्ष० २० ॥ ध्वजा पता का घूघर माला, झांजा झणण झणणावे ॥ हर्ष० २१ ॥ गद्दी तकिया दरी गलीचा, अती सुखमाल बीछावे ॥ हर्ष० २२ ॥ खान पान सोवण बेठण का, जुदा २ भाग वेहचावे ॥ हर्ष० २३ ॥ कहे कर जोड़ बाबा जी स्वीकारो, देख नारद हरषावे ॥ हर्ष० २४ ॥ दोनूं विमाण में सुखसे बैठ्या, विद्या बल थी चलावे ॥ हर्ष० २५ ॥ जाणे दूजो रवि चाल्यो नभ में, सहस्र किरणे झल झलावे ॥ हर्ष० २६ ॥ हलवे चालतो देखी विमाण ने, ऋषि जी तिण ने चेतावे ॥ हर्ष० २७ ॥ क्यों बछ धीरा धीरा चालो, शीघ्र तब सगम दौड़ावे ॥ हर्ष० २८ ॥ गुड़ी पड़या नारद फूट्यो माथो, दांत पड्या मुंह चावे ॥ हर्ष० २९ ॥ डंड कमंडल गुड़ने लाग्या, मदन के हांसी न समावे ॥ हर्ष० ३० ॥ कर साही बैठाय मुनि ने, विमाण तब थंभावे ॥ हर्ष० ३१ ॥ मुनि कहे भाई तुझ मरजी प्रमाणे, वांहण

बिना दरियाव । तम मदन कुमर बिना, सूनो सब ओछाव ॥ ४ ॥ बिगर नहीं धण एक
सब, यादू आय आंख आय । सज्जन को मिलवो भलो, बिछड़वो न सुहाय ॥ ५ ॥
॥ ढाल ७ मी ॥ (डर रे लाग्यो उमदिन को ए देशी) सज्जन दर्शने मदन जाने
हुए घर ॥ टेक ॥ नारद ऋषि मदन तेज देखी, अती आनंद मन पावे ॥ हर्ष० १ ॥ पुण्य
बता न निधान पणे २, ते यह प्रत्यक्ष दिखावे ॥ हर्ष० २ ॥ स्व घर आदर मनही पावे, पर
घर पुण्यवंत शोभावे ॥ हर्ष० ३ ॥ विमाण झीर्ण देख मुनी को, मेद तव मन माहि लावे
॥ हर्ष० ४ ॥ ठाव मठारे मारग फेरा, खंडो खंड करावे ॥ हर्ष० ५ ॥ माता जी एसो
विमाण थें राख्यो, हांसी न हृदय मावे ॥ हर्ष० ६ ॥ कद ऋषि माग में तूटो पूटो, तें
वयानी जोर मणाय ॥ हर्ष० ७ ॥ धन तन निधावल में पूरो, क्यों न कर ने मन भाव
॥ हर्ष० ८ ॥ अहो ऋषि वर यान इण मारण थी, शोभा किण विध आवे ॥ हर्ष० ९ ॥
अरे अभी तो काम सटकाया, कम पणे जे मन भावे ॥ हर्ष० १० ॥ माप प्रमाद आप
चाहो जैसो, हुकम पालक धणारे ॥ हर्ष० ११ ॥ इम कही शीघ्र विधान-योग, रम्य
विमाण बनावे ॥ हर्ष० १२ ॥ तलो मजबूत सुराठो निगामय, पवन्या भी भंग न पावे
॥ हर्ष० १३ ॥ सुरम थंभ मणी रम जड़ीयो, हार पूतली थी शोभाव ॥ हर्ष० १४ ॥

सुणो कुमरजी, जादव कुल का चंद सुणो थे मदन जी ॥ १ ॥ तस बड़ी भामनी भामा छे सु०, रूप अपछरा अनुहार सु० । पण अभिमान छे अतीघणो सु०, करे पर को तिरस्कार ॥ सु० २ ॥ एक दिन गर्भ रह्यो तेह ने सु०, तब यह गज पुर राय सु० । तस राणी युग जीवी हुइ सु०, कृष्ण इण ने प्रीती सवाय ॥ सु० ३ ॥ इण दूत भेज्यो दुवारका सु०, इण विध जणाई बात सु० । मुझ कुले जो पुत्री होवे सु०, तुम राणी ने पुत्र थात ॥ सु० ४ ॥ तो सग पण करस्यां तेह नो सु०, आपां आपस माय सु० । यह वाक्य गोपाल मानीयो सु०, कह्यो भामा ने जाय ॥ सु० ५ ॥ भामा फूली घणी मन में सु०, मुझ सम त्रीखंडे नाथ सु० । पुत्र होसी मुझने सही सु०, मोटा घरे देसूं परणाय ॥ सु० ६ ॥ सोक को द्वेप धरती मन में सु०, तुझ माता ने बुलाय सु० । सब जादव ने देखतां सु०, होड़ करी आपस मांय ॥ सु० ७ ॥ जस नंदन पहली परणे सु०, दूजी सोक सिर वाल सु० । काटी पगतले बिछाववा सु०, इम करी सुखे हाल ॥ सु० ८ ॥ छठे दिन तुम हरण हुयो सु०, मोटा हुवा विद्याधर घेर सु० । तुम वियोगे तुम मायड़ी सु०, रुदन कियो बहूतेर ॥ सु० ९ ॥ सोक तणे मन भावती सु०, हुई ते टाणे होणहार सु० । जेहना पुण्य सहाई छे सु०, तेनो सहायक करतार ॥ सु० १० ॥ तुम आयू बल प्रताप थी सु०

रूपों न पलाव ॥ हर्ष० ३२ ॥ तुम हांसी मुम सफल होवे, तूं हंस २ ऊघो भावे ॥ हर्ष० ३३ ॥ रुकमणी प्रम ना पुण्य प्रभावे, नारद ने क्रोध नहीं आवे ॥ हर्ष० ३४ ॥ रूपा मठ उठथी आया मम भूमे, सदिरा अटवी देखावे ॥ हर्ष० ३५ ॥ शिला मगाई धरि थी तिहां तब असुर त्यां तुमने दमावे ॥ हर्ष० ३६ ॥ आगे मनगिरी किंनरी सरिता, विविध भूप्रशात दम्भाव ॥ हर्ष० ३७ ॥ हाल सातमी मा पितुके दर्शन, अमोल भवन मन भावे ॥ हर्ष० ३८ ॥

॥ दोहा ॥ इम आनंद पालथा, नीचे जोवे मदन। दीठो दल भल सामठो, हय गय नर वाहन ॥ १ ॥ मोटा २ रावजी, कुमर शूर सुलतान। वाजित्र गगन गरजारवे, देख्या शोभायान ॥ २ ॥ पूछे कुमर कर जोडने, बाबाजी कहो बात। महाराज मोटी सैन्य ले, किम कारण किहां जाय ॥ ३ ॥ देखी सैन्य पेसा राजेंद्र, जोया न खेचर भाय। भूचर पति दल देखिन, मुक्ष मन अति हुलसाय ॥ ४ ॥ कहे नारद वछ सांभलो, भली विचारी बात। आदि अंत कहुं तुम भणी, जिम तुम हित कुछ थाव ॥ ५ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ (आठ कुंवा नव बावड़ी परदेशी रेलो–ए देशी) द्वारिका नगरी का धणी, सुणो कुमरजी, वासुदव कृष्ण नरिंद, सुणो थे मदन जी। वे तुम ताव शिरोमणी

॥ सु० २० ॥ मदन सुणी सूरो थयो सु०, ढाल आठमी मांय सु० । अमोलक कहे आगे
सांभलो सुणो श्रोता जी, कौतुक बात सुख दाय सुणो थे श्रोताजी ॥ २१ ॥

॥ दोह ॥ नारद बचन सुनी करि, हरख्यो मदन कुमरेश । समर्थ छे कुण अवनी में,
तो मैं जायो मुझ मांनो ले केश ॥ १ ॥ चमत्कार बताऊं इण भणी, पाडूं त्रिपता पूर ।
निज मात को, तारूं इण को नूर ॥ २ ॥ कहे मुनि सूं करजोड़ ने, सुण बाबाजी बात ।
मुझ स्वभाव कुतूहल तणों, तेह बिन कुछ न सुहात ॥ ३ ॥ आप इहां रही देखिये, बाल
कांई करे ख्याल । नचाडूं सब भूपने, तो मुझ नाम मदनलाल ॥ ४ ॥ लावूं उदधी
कुमरी ने, आप दर्शन ने काज। यह मुझ इच्छा आप अनुग्रहे, पूर्ण करूं महाराज ॥५॥
नारद मूल कुतूहलियो, परदुःख घणो सुहाय । हां बछ कर देखूं मैं इहां, तूं विद्या वलि-
यो सवाय ॥ ६ ॥ नारद आज्ञा पाम ने, हरख्यो घणों प्रद्युम्न । किण विध कौरव ने
छले, सुणजो सभा के जन ॥ ७ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ (श्री रामजी नार न पाई हो—ए देशी) मदन हर्ष धर विद्या ना
बल थी, वैक्रिय रूप वणाई हो । वस्त्राभूषण नारद आगे, मेली विमाण बाहर आई हो
॥ १ ॥ श्री मदन कौतुक दरसाई हो, मुनि नारद हरखाई हो ॥ टेक ॥ महारण्य

चिरंजीव रमा सुख मांय सु० । रिद्धी सिद्धी पाम्या घणी सु०, अब मावा न देवो दुख साय ॥ सु० ११ ॥ जिण राते तुम जन्मीया सु०, तिण राते मामा नह सु० । पुत्र प्रसव्यो अती दीपतो सु , धरती प्रथिको स्नह ॥ सु० १२ ॥ जन्म महोत्सव कीधो घणो सु०, आयो बारमो दिन सु० । मानू स्वाम अनुमार थी सु०, नाम मानु कुमर स्थापिन ॥ सु० १३ ॥ चंद्रकला ज्यूं वे बधे सु०, दुखी जननी हरषाय सु० । तुम मां रहती उदासणी सु , तब मैं गयो तिण ठाम ॥ सु० १४ ॥ वृतान्त तुमहारो त मणी सु०, यथा तथा दीयो हरसाय सु० । सुणी हरखी अती रुक्मणी सु०, निरवर तुमने ध्याय ॥ सु० १५ ॥ मानू हुयो तुमजेट सो सु , मगाई हुइ थी गर्भ मांय सु० । हिवे ब्याहन कारण सु०, दोई घर मांझा ओछाय ॥ सु० १६ ॥ उदधी नाम कुमरी सु०, रूप सुरांगना समान सु० । सिणगारी मजी पालखीय ठई सु०, ते पण अती हरखाय ॥ सु० १७ ॥ मामो होलो लेइने सु०, कौरव गजपुर स्थाम सु० । हाथी घोड़ा स-। रुजी सु० दुर्योधन हरखत जाय ॥ सु० १८ ॥ तुम माता सोक नो टीकरो सु०, मानू परणे हाल सु० । मामा ल स रुक्मणी तणा सु०, हरखी कापी थिर थाल ॥ सु० १९ ॥ तुम मैय्या तुम मात ने सु०, होणो न चाहिये दुख सु० । नारद कलह लगावणो सु०, इम पोल्यो तब मुख

कोईने आगे जावा न देवे, मांगे दाण देवो चुकाई हो। घणा लोक ममझावे न समझे, तब ते कौरव आई हो ॥ श्री० १२ ॥ किम् भीलाधिप हमने अड़िया, कारण कांई कहो भाई हो। ते कहे म्हारी इहां छे चोकी, दाण दे आगे जाई हो ॥ श्री० १३ ॥ कौरव पति कोपीने बोले, कांई म्हांने बणिक जाण्याई हो। कांई थैली बांधी ने लाया, थांने अभी काढी देस्याई हो ॥ श्री० १४ ॥ हट २ पाछो हट वेगी तूं, हमने दे जावाई हो। भोले भावे हमने रोकया, ते तो माफ कराई हो ॥ श्री० १५ ॥ वनचर कहे मुझ कृष्ण नरेसर, सगलो देश भोलाई हो। जे निकले रास्ता के मांई, जाजे तूं तिण पासाइ हो ॥ श्री०-१६ ॥ सर्व वस्तु में जे श्रेष्ठ वस्तु ते, तू लीजे छीनाइ हो। जो न देवे तो मरजी प्रमाणे करजे तूं शिक्षाई हो ॥ श्री० १७ ॥ कहे दुर्योधन कृष्ण की साथे, थारे सूं मित्राई हो। तिण थी तुझ यह हुकम समरप्यो, विदित करो हमताइ हो ॥ श्री० १८ ॥ तुम नहीं ओलख्यो मुझने ताइ, मैं कृष्ण पुत्र सुखदाई हो। इम सुणी ने हस्या सब जन, गम्मते इम बोल्याइ हो ॥ श्री० १९ ॥ तुझ सरीखा जादव नाथ ने, कहो किता छें बेटाइ हो। ते कहे मुझ सरीखो तो मैं ही छूं, चंद ज्यूं तारा मांही हो ॥ श्री० २० ॥ सब कहें शाबास २ तुझने, साचा बोल बोल्याइ हो। हरीवंशे तूं रत्न सरीखो, कुण तुझ होड़

धन के भील राय को रूप कुरूप ते थाइ हो। कालो छुलो अति ही ऊचो, तन फाट्यो कोपला माई हो ॥ भी० २ ॥ ओछा विखरया पीला धोला, केश छें माथा मांई हो। भाल कपाल त्रयांगुल सल भर, वाल पड़्या तिण पे आई हो ॥ भी० ३ ॥ कापरी भौंह झंवा रोमसर, नाक चपटो सेढो धरवाइ हो। ऊंडा कपोल दोई कूप समाना, सलमल पी ते भराई हो ॥ भी० ४ ॥ आंख्या राती गींद भरयोडी, तिणमेंथी परणी वाहाई हो। होठ जाडा स्याम तव धर फरता, लाल रही छे भराई हो ॥ भी० ५ ॥ मोटी लटकती बिखरी कावरी, दाढीमूंछ लगाई हो। ग्रीवा बांकी नसा धीपणी, छाती आई उपराइ हो ॥ भी० ६ ॥ युगल कान जाण सेंपड़ी लटके, भाली पीतल नी पाई हो। पावला टूका युगकर श्याम नख, कांले कक्ष लंघाई हो ॥ भी० ७ ॥ ऊंडो फुदो पट इ ठोबर, कमर टूटी नमाई हो। जाडी जंघा रोम थी नंगा, लगोट ताणी कस्याइ हो ॥ भी० ८ ॥ गोडा मोटा हाडकी निकली, पींड्या की पतलाई हो। फण्या चपटा अंगुली लमी मांसी इम पर तन ओमाई हो ॥ भी० ९ ॥ सिर पर चिंदी फाटी बांदी, कटिप लाल कंदोराई हो। गाती काठी खेंच कर बांधी, धणी धरतो गुमराई हो ॥ भी० १० ॥ धनुष जूनो तांणी धाल्यो कांधे में, दो चार बाण धोधाई हो। तिण सना ने आगल आई, ऊभो रयो अडाइ हो ॥ भी० ११ ॥

कोईने आगे जावा न देवे, मांगे दाण देवो चुकाई हो। घणा लोक समझावे न समझ, तब ते कौरव आई हो ॥ श्री० १२ ॥ किम भीलाधिप हमने अड़िया, कारण कांई कहो भाई हो। ते कहे म्हारी इहां छे चोकी, दाण दे आगे जाई हो ॥ श्री० १३ ॥ कौरव पति कोपीने बोले, कांई म्हांने बणिक जाण्याई हो। कांई थैली बांधी ने लाया, थांने अभी काढी देस्याई हो ॥ श्री० १४ ॥ हट २ पाछो हट वेगी तूं, हमने दे जावाई हो। भोले भावे हमने रोक्या, ते तो माफ कराई हो ॥ श्री० १५ ॥ वनचर कहे मुझ कृष्ण नरेसर, सगलो देश भोलाई हो। जे निकले रास्ता के मांई, जाजे तूं तिण पासाइ हो ॥ श्री०-१६ ॥ सर्व वस्तु में जे श्रेष्ठ वस्तु ते, तू लीजे छीनाइ हो। जो न देवे तो मरजी प्रमाणे करजे तूं शिक्षाई हो ॥ श्री० १७ ॥ कहे दुर्योधन कृष्ण की साथे, थारे सूं मित्राई हो। तिण थी तुझ यह हुकम समरप्यो, विदित करो हमतांइ हो ॥ श्री० १८ ॥ तुम नहीं ओलख्यो मुझने तांइ, मैं कृष्ण पुत्र सुखदाई हो। इम सुणी ने हस्या सब जन, गम्मते इम बोल्याइ हो ॥ श्री० १९ ॥ तुझ सरीखा जादव नाथ ने, कहो किता छें बेटाइ हो। ते कहे मुझ सरीखो तो मैं ही छूं, चंद ज्यूं तारा मांही हो ॥ श्री० २० ॥ सब कहें शाबास २ तुझने, साचा बोल बोल्याइ हो। हरीवंशे तूं रत्न सरीखो, कुण तुझ होड़

कराइ हो ॥ श्री० २१ ॥ हां हां हूं चिंतामणी रत्न छूं, तुम क्यों न करो अवाई हो। ऐसो हरी कहे दूजो न मिलसी, पड़ो तुम ने पायाई हो ॥ श्री० २२ ॥ हां रे हां तुम वश करां अब, पद्रसफ थी पूजाई हो। तुम सिर साज पहीवो मागा, क्यों रसा से पोमाई हो श्री० २३ ॥ छोटे मुंडे मोटी वातां, कहे किम शामा पाई हो। रे मीलक्षा यह बीमदला तुमने कुण आइने सीखाई हो ॥ श्री० २४ ॥ बस २ वाहा मत कर यह २, मनचर हमने आगाई हो। सरक एक तर्फ वावा दे हमने, अभी रहेगा गमस्ताई हो ॥ श्री० २५ ॥ चिंते मदन यह कुल्या गम्मते, पापी छें निर्लज्ज सदाई हो। पण में इनकी आंस उघाई, कोई चमत्कार बताई हो ॥ श्री० २६ ॥ मर्म बात थी यह दुख्या से, इम धारणा मन माई हो। दूजा स्कंध की नोमी ढाल यह ऋषि अमोलक गाइ हो॥ श्री० २७॥

॥ दोहा ॥ कहे प्रद्युम्न रीसे भरी, रे रे कौरव धीठ। म्हारी साच कोई मांग सो, मैं जाणूं थाने धुरपीठ ॥ १ ॥ ममक्षणा अब मैं नीती बचन, ठाकर करदा दोष। तो निज माड जमा करे, नरमें खोवे मोष ॥ २ ॥ महा कपटी थे कपट थी दास्या पांडव ने फंद। अंध तात ना पुत्र अंध, राज भजे मतिमंद ॥ ३ ॥ पाण्डू छोड्या द्या करी, ते

गुस्सो मुझ माय। अब तुम गर्व उतारसूं, तो मारूं नाम कहवाय ॥ ४ ॥ बड़ी मात व्यभ-चारणी, तिणरा थे कुल जात। जैसा का जैसा हुया, जैसी काढी बात ॥ ५ ॥ तिमिर कुरंग बल जिहां लगे, भानू हरी ने प्रगटाय। तां लग तुम मदमत्त छो, जां लग हम डंडाय ॥ ६ ॥ यदपि बादले रवि छाइयो, तदपि करे प्रकाश। हिव देखूं तुम जोरने, किस्यो करे छे नाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० ॥ (जात्रीडा जात्रा निन्याणूं करिये रे—ए देशी) मदन राय है जी महा विद्या वलीयारे, ते किण थी न जावे छलिया ॥ टेक ॥ इम सुण कौरव सुस्ता होवेंरे, कहो भाई थाने काई जोवे रे, इम बोली बोल कांई खोवे ॥ म० १ ॥ लेवो घोड़ा हाथी मदमाता रे, जे थारा मनमें भाता रे, बोल और कांई चित्त चाहता ॥ म० २ ॥ कांइ करूं मैं घोड़ो हाथी रे, इण पे मुझ मालकी थाथी रे, मैं लेसूं चोखी चाहती ॥ म० ३ ॥ पहली सब मुझ माल बतलावो रे, मुझ संगे थे सेना में आवो रे, पूरो म्हारा मनको उम्हावो ॥ म० ४ ॥ फिरी सैन्या सगली देखी रे, शृंगार करी कन्या पेखीरे, बोले हरखी भील विशेखी ॥ म० ५ ॥ आछी थी आछी घणी आछी रे, कुमरी मुझ मन मां जाची रे, ये आपो मुझ पे राची ॥ म० ६ ॥ इम सुणी भील की बाणी रे, खीज्यो दुर्योधन राणों रे,

रे भाई बोले इम अनाणो ॥ म ७ ॥ तब मील कहे परीब लेखं रे, प हठ स्तो कर
वेर्स रे, कुमरी लई आवासी लेसू ॥ म० ८ ॥ छानो कन्या वेगी दीजे रे, भूपा फजीती
नहीं कीजे रे, ना कपा पी दुस भुगतीजे ॥ म० ९ ॥ सुप दूर्योधन अकुलायो रे, ऐसो
गुस्सो मनमें आयो रे, रे रे धीठा सुं बोले मायो ॥ म० १० ॥ निळज्ज पणो थे धारयो
रे, जात रूप बळ नाही बीचारयो र, आखिर गंवार ने गंवार उचारयो ॥ म० ११ ॥
मोड देखी ने पांव पसरणारे, माग्य दखी ने विचार करणा रे, झुठ न नहीं आ
घरणा ॥ म० १२ ॥ नाना मुंडा धी मोटी वाचारे, बोले तेतो साचे तमाचा रे, फ्यो
इवरचा मावा कालु राचा ॥ म० १३ ॥ आंव ऊंचो ने कस्यो मारी रे, सामन चिते
तोडी सावारी रे, तिम पुण्याई नहीं छे थारी ॥ म० १४ ॥ पतंग दीप शिखा माली
रे, मावे मोनो लटप तिणपे चाली रे, न्हांसे आपणी काया प्रजाली ॥ म० १५ ॥ इम
बहु विध करि समझावे रे, पण मील के मन नहीं भावे रे, रस्तो छोडी न आगो यावे
॥ म १६ ॥ तब कौरव कहे सना मणी रे, इहां ऊभा देर हुइ घणी रे, चालो इम ने
छाव थी हणी ॥ म० १७ ॥ केतो सहाई न्हांसो इम ने हणे रे, नहीं तो रण धी करो
चक चूरो रे, इमरो आउसो हुयो पूरो ॥ म० १८ ॥ पछ पामर करसे कांई हो, रह

से खापर ज्यूं चबदाइ हो, खोटा की खोटी गत थाइ ॥ म० १९ ॥ इम सुण ने दल चलतो थातो हो, तिण आड़ी कीधी लातो हो, तिणरा धक्कों थी न सरकातो ॥ म० २० ॥ चालत सेना थोवाणी रे, तव सुभट अती रीस आणी रे, तम मारण हुया अगवाणी ॥ म० २१ ॥ कोई असी तीर चलावें रे, कोई जंबूरा तोव गड़डावें रे, कोलाहल घणो त्यां मचावें ॥ म० २२ ॥ जिम भादव केरी झडीया रे, तिम शस्त्र कुमर पे पड़ीया रे, पण तन ने ज़रा नहीं अड़ीया ॥ म० २३ ॥ तव मदन धनुष्य कर साह्यो रे, ठणकारथी दल थररायो रे, विद्या बल थी वाण चलायो ॥ म० २४ ॥ एक का सहस्र वाण थइया रे, लाग्या केई ना प्राण तव गइयारे, केई अंग उपांग हीणा थइया ॥ म० २५ ॥ जिम हिरण भेला घणा होवे रे, तव केसरीसिंह ने जोवे रे, भागी जावे वामतां तोवे ॥ म० २६ ॥ तिण सुभट सूरा भगाया रे. पाछे कुमर ते पर्वत डिगाया रे, कूंट टूटी पड्या ते ठाया ॥ म० २७ ॥ हा हाकार हुयो तव भारी रे, पण दव्यो नहीं कोई तिण मंझारी रे, लोक विखराया तिण वारी ॥ म० २८ ॥ तव उदधी कुमारी ने तांई रे, लीनी भील पालखी थी उठाइ रे, रूप देख अति चिल्लाई ॥ म० २९ ॥ पण कोई कने नही आवे रे, भील उड़ी गगन में जावे रे, सब देखे दूरा ऊभा ठावे ॥ म० ३० ॥ भीलको कारज थयो सिद्धी रे, ढाल दशमी

अमोलक कीधी र, मदन वचने उदधी लीधी ॥ म० ११ ॥

॥ दोहा ॥ नारद देखी खुपाल मइ, तन मन अति हरषाय। हा हा यात करामाती, आदर कने प्रगगाय ॥ १॥ एतले नारद ऋषि कने, कन्या लायो तेह। मेली एक दवनिमाण में, नाखाजी मू फेह ॥ २ ॥ मुनिवर तुम प्रशाद थी, कने करयो ए काज। लाडी लायो रूवडी, सोई कौरव ठाज ॥ ३ ॥ इम कही मस्तक भरयो, नारद थापी पीठ। शागम हरी कुल में तिलो, आज करामात नयणे दीठ ॥ ४ ॥ तिम ही रूपे बेठिया, उदधी दखत रूप। हर हरे मन में घणी, रोवे बैठी शोक स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ (तावडा धीमो सो पडजे-ए देशी) पुण्य थी वस्तु शोभावे रे, शोभनीक वस्तु पुण्य सजोगे पुण्यवत पावे ॥ टेक ॥ नारद हरखी दखी कुमरी, अती घणी समझावे। पण तम मन धैर्य धरे नहीं, विलखी घणी थावे ॥ पु० १ ॥ तब मुनी जी कहे मदन कुमर ने, अब रूप पलटावो। जिम इम कुमरी ने धीरप आवे, मूलगे रूप थावो ॥ पु० २ ॥ निज रूपे हुआ तत्क्षण कामजी, सागे इंद्रा साह। चमत्कार अति उदधी पामी, दखी हरसाइ ॥ पु० ३ ॥ करजोडी पूछे नारद से, आप कुण किहां जावो। किण कारण मुझन इहां लाया, कृपा कर फरमावो ॥ पु० ४ ॥ ऋषी कहे यह यादव

करवा आनंदन ॥ पु० ५ ॥ तूं टीको, कृष्ण रुक्मणी नंद । मिलवा जावे निज परने, करवा आनंदन ॥ पु० ५ ॥ तूं
बाई कांई डरे मन में, तुझ इच्छा जिम थासे । तेही सुण ने राज़ी हुई, मन में बेठी घर
हुलासे ॥ पु० ३ ॥ बात विनोद कुतूहल कुमरजी, करे नारद मुनि के संगे । गगन गती
चालता आगे, देखे उछरंगे ॥ पु० ७ ॥ जाणे स्वर्ग पुरी थी छिटकी, पड्या बिमाण घर-
ती । सागे देवलोक सी दीखे, झल २ आकृती ॥ पु० ८ ॥ सुवर्ण कोट अष्टादश हाथ को,
उतंग अति दीपे । रत्न कांगुरा बहु रंग का, तेजे जोतषी जीपे ॥ पु० ९ ॥ मोटा मोटा
बाग बगीचा, वृक्ष फल फूले शोभे । पशु पक्षी सरोवर सुंदर, देखत मन लोभे ॥पु० १०॥
मोटा २ महल यादव का, साठ क्रोड़ मांही । चार वर्ण का ग्राम ने बाहरे, बहोत्र कोड़ी
साही ॥ पु० ११ ॥ आकीर्ण धन धानथी भरी छे, घणी करी रोमनाई । देखण उमंग
धरी प्रद्युम्न, तब ऊठ्या हर्ष लाई ॥ पु० १२ ॥ नारद पूछे किम ऊठ्या बछ, कहो कांई
लेहर आइ । ते कहे नगरी देखण जावूं, मन में घणी सुहाइ ॥ पु० १३ ॥ इम सुण नारद
आड़ो फिरियो, नहीं जावा देसूं । हाथ पकड़ नीचो बैठायो, मर्म बात कहेसूं ॥पु० १४॥
क्यों न जावा दो कारण कांई, बाबा जी बोलो । मुझ मन में अती शहर देखण की, अंतर
पट खोलो ॥ पु० १५ ॥ कहें नारद बछ तूं चंचल घणो, निचलो नहीं रहेसी । इण शहर में

यमोलक लीधी र, मदन सपने उदधी लीधी ॥ म० २१ ॥

॥ दोहा ॥ नारद देखी कृपाल यह, तन मन अति हरषाय। हा हा बाल करामाती, आदर करे अगगाय ॥ १॥ पतले नारद ऋषि कने, कन्या लायो तह। मली एक दलविमाण में, वावाजी मूं केह ॥ २ ॥ मुनिवर तुम प्रशाद थी, करे करयो ए काम। लाडी लायो रूपड़ी मोई कोरव लाज ॥ ३ ॥ इम कही मस्तक धरयो, नारद धापी पीठ। शाबास हरी कुल में तिलो, आज करामात नयणे दीठ ॥ ४ ॥ तिम ही रूपे बेठिया, उदधी दुखत रूप। डर धूरे मन में घणी, रोवे पैठी शोक कूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ (तावड़ा धीमो सो पड़जे-ए देशी) पुण्य थी वस्तु शोभावे रे, शोभनीक वस्तु पुण्य संजोगे पुण्यवंत पावे ॥ टेक ॥ नारद श्रुती देखी कुमरी, अवी घणी धमसावे। पण मम मन धैय घा नहीं, विलखी घणी थावे ॥ पु० १ ॥ तब मुनी जी कहे मदन कुमर ने, अब रूप पलटावो। जिम इण कुमरी ने धीरप आवे, मूलगो रूप बावो ॥ पु० २ ॥ निज रूपे हुवा तत्क्षण कामजी, सागे इंद्रा सार। चमत्कार अति उदधी पामी, उम्ही हरखाई ॥ पु० ३ ॥ करजोडी पूछे नारद से, आप कुण किहां आयो। किण कारण मुझने इहां लाया, कृपा कर फरमावो ॥ पु० ४ ॥ ऋषी कहे भद मानन

तृतीय स्कंध ।

॥ दोहा ॥ जय २ अरिहंत सिद्ध साधू जी, प्रणमूं पंचांग नमाय । तृतीय खण्ड हिव वरणवूं, शुद्ध बुद्ध दो महाराय ॥ १ ॥ महा पुण्यवंत प्रद्युम्न जी, विद्या चले प्रसिद्ध । माता ने मिलण उम्हाइयो, कौतुक करे नाना विध ॥ २ ॥ तिण अवसर भामा तनुज, भानु महा पुण्यवंत । रूपे नल कूवर समो, चढ़ती वये दीपंत ॥ ३ ॥ अश्व उत्तम सिणगारियो, तिण पे हुवा अश्वार । केशरियो जामो जरी भरयो, पेहरण छे श्रेयकार ॥ ४ ॥ मंदिल तूररो किलंगीवर, झल २ दीपे आनन । उपरणो कटी बंधणो,रूमाल धोती जरीतार ॥ ५ ॥ काने कुंडल हिये हार वर, कंठी गलमें सार । मुद्रा कंदोरो करमें कड़ा, रतजड़ाव झलकार ॥ ६ ॥ थइ २ तुरंग खिलावतो, बहुसाथे सरदार । पेखी मदन कुमर जी, हर्षित हुया अपार ॥ ७ ॥ पूछे करणपिशाची सूं, यह कुण इनमें आवंत । सा कहे भामा पुत्र यह, बंदोला खावग जावंत ॥ ८ ॥ इण को शौक किण बात पे, देवी दो फरमाय । सा कहे तुरी रमाड़वा, यह हुसियार मवाय ॥ ९ ॥

मैं उ मात्र करया छे, तू फिर दुःख लेसी ॥ पु० १६ ॥ महाबळी बलभद्र कृष्ण सी, इहां का छे राजा। जादवबथो छे ओर घणेरो, सरदार गुणे श्राजा ॥ पु० १७ ॥ तिण कारण आपण दोई मिलने चालां रुक्मणी पास। मातसे पहली मिळने, फिर पूर जे आश ॥ पु० १८ ॥ मदन कहे पहली जोइ ने नगरी, अभी पाछो आवुं। फिर मिल ध तुम संगे, सब ही पहली पुरी में आवूं ॥ पु० १९ ॥ इम कही उठ्यो शीघ्र कुमर, बात नहीं माने। ना ना कहतां चाल्यो त्यां भी, छोडी ने विमाने ॥ पु० २० ॥ विमाण सरकण पावे नहीं त्यां भी, विचाळे थांभो। शीघ्र गती उतरया गगन थी, कौतुक सांधो ॥ पु० २१ ॥ गुप्त रूप करी आगे चाल्यो, मदन महा पुण्यवंतो। किण विध कौतुक करसे आगे, सुणजो भरी संतो ॥ पु० २२ ॥ पुण्य कल्पद्रुम प्रद्युम्न चरित्र, द्वितीय पुळास। एकादश ढाल यह सुख दाता, अमोल ऋषि प्रकाशे ॥ पु० २३ ॥

॥ हरिगीत छंद ॥ श्री प्रद्युम्न कुमार आर्य अणगार पुण्य श्री भेटीया। मात पुत्र पूर्ण अधिकार सुणियो सार शीझे स्थिर युग विधा लीया ॥ समपति ध फर जीत नारद सू प्रीतकर स्वदेश गमन किया। कौरव सु उदधी लीय द्वारिका देखे ऋषि अमोलक धन जीया ॥ १ ॥

इति पुण्य कल्पद्रुम प्रथ प्राप्त द्वितीये स्कन्धः समाप्त। ॥ अस्मिन स्कन्धे ढाल ११ दोहा १७ ॥

कहो मोल इण गाजी को, कांई वुधवंत। मूंडे मांग्या टका लेवो, जो तुमने चाहंत ॥ श्री० १३॥
कोड़ सुनइया इणरा लेसुं, सुणों सरकार। पहली परीक्षा करीने, पाछे आप जो दीनार
॥ श्री० १४ ॥ इम सुण अश्वारूढ़, भानू हुया ताम। चावुक कर में साही, लीनी पकड़
लगाम ॥ श्री० १५ ॥ घोडो उड्यो गगन में, विस्मित हुया लोक। अहो अव भानू जी
को, कांई होसी थोक ॥ श्री० १६ ॥ अश्व देखी सूर्य चिंते, यह इसका या मुझ। अन्योक्ती
कविनी एहवी, समझो गुझ ॥ श्री० १७ ॥ वक्र सीधो उर्ध अधो, नाचे घणो सोय।
उछल २ पड़े, थंभे नहीं कोय ॥ श्री० १८ ॥ भानू पड्यो सोच मांही, करणो अव कांय।
इज्जत जावाकी वखत, आई यह इण ठाय ॥ श्री० १९ ॥ थाम्यो तो थंवे नहीं, ढ़ीला
किया हाड़। सिर पेच पगड़ी तेहनी, नीचे दीनी पाड़ ॥ श्री० २० ॥ एतले अवसान
चूक, पड्या तत्काल। सव लोक अचंभे हुई, हंसीने देवे ताल ॥ श्री० २१ ॥ सोदागर
त्रासी कहे, अचरज एह। वासुदेव पुत्र सेती, घोड़ो रह्यो न एह ॥ श्री० २२ ॥ पाटवी
कुमार वाजो, आप वुधवंत। तुरंग खेलावण कला मांहे, छो महंत ॥ श्री० २३ ॥ घोड़ा ने
नहीं राख सक्या, किम राखोगा राज। तुम सरीखा पुत्र होई, खोवे कुलकी लाज ॥ श्री०
२४ ॥ इम सुणी भानू को, सरमिंदो हुयो मन। खीजाणो चाढी ने, इम बोलीयो वचन।

॥ ढाल ९ वी ॥ (उमसनकी लली-ए देशी) श्रीप्रद्युम्न कुमार, भानू ने ठगे छे देखो विधाने प्रकार ॥ टेक ॥ इम सुणी देवी वाक्य हरख्या मदन । भानू ने ठगवा, करे रूप घोला सिरका धार ॥ श्री० २ ॥ दांत नहीं मूंहडा मांही, धर २ धूजे सिर । कांपी रया कमर वांकी फिर ॥ श्री० ३ ॥ मीम सिया थी घमायो, सर्व सुरगे सिरदार । लाल वण हुए घणो, लबोदर सार ॥ श्री० ४ ॥ ऊंचो संघ लघु करण, माल तिलक दीप । रोम मृदु सूक्ष्म अंग पे, अरी लेव सीप ॥ श्री० ५ ॥ पूंछे लम्बे बाल शोभें, पग लंबा अति नग । सूरी मली लक्षण व्यंजन, शोभे सर्व अंग ॥ श्री० ६ ॥ पलाण सोनाको नगसे जड़ियो, धई बाजू मोती गुच्छ । गज गाव पावड़ा शोभ, गहणा घणा सुच्छ ॥ श्री० ७ ॥ पहर तेहने नचावत, कपावत निज शीश । आशा भानू सामन, तिम ऊपनी जगीश ॥ श्री० ८ ॥ भानू हयरत्न देखी, पामियो हुलास । इण घरि न व्योपारी, बुलायो निजपास ॥ श्री० ९ ॥ पूछ मदनसे कोण छां परदेशी, करां घोड़ा को व्यापार । किम काम इहां आया, यह अश्व किम साथ ॥ श्री० १० ॥ हम तुम, कांई तुम्हारी बात । इण सेठाणामें चातुर सुण्या, श्री भानू कुमार ॥ श्री० ११ ॥ तिम काज यह लायो, छै हयवर रत्न । मन माना दाम लेसूं ते करस जतन ॥ श्री० १२ ॥

पाटी देवे चक्री फीरावे, नचावे बहू पेर। दोई पग पे खड़ो करे, क्रीड़ा बहुतेर ॥ श्री०-३८ ॥ भानू आदी राज पुत्र, अती रंजाणा देख। वाह वाह अश्व सवार दोई, कला टोही विशेख ॥ श्री० ३९ ॥ इम देखतां उड्यो गगने हुयो अदेखाव। पाछो ते तो आयो नांहीं, देखता रह्या राव ॥ श्री० ४० ॥ सर्व चमक्या मन के मांही, हुयो यह प्रपंच। कोई देव तमासो कीधो, भासे इम संच ॥ श्री० ४१ ॥ केई लंगड़ा लूला हुया, कई रुधेर वमंत। भानू को सब अंग टीचाणो, तेई दुःख पावंत ॥ श्री० ४२ ॥ सर्व निज २ घरे आई, करें सुख उपचार। तीजा खण्ड की पहली ढाले, अमोलक कौतुक उचार ॥ श्री० ४३ ॥

॥ दोहा ॥ मदनराय अती खुश हुया, ठगियो भानू कुमार। रूप पलटि आगे चल्या, देखण शोभा बजार ॥ १ ॥ आगे जातां आवियो, बाग बड़ो मनुहार। फल फूल पत्रे शोभतो, सर्व ऋतु में सुखकार ॥ २ ॥ पूछे कर्ण पीशाचिका, एह छे किण रो बाग। सा कहे भामा की मालकी, इण पे छे महाभाग ॥ ३ ॥ अश्व रूपे सब खाइयो, हरियो भरियो घास। शूकर रूप धर खोदियो, झाड़ बेली को करयो नास ॥ ४ ॥ माली त्रास्यो मारतो पण लाग्यो घाव। तिहां थी निकल आगे चल्या, धरता घणो ओछाव ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ (सुकृत नहीं कियो जिंदगानी में—ए देशी) कौतुक करे हांरे,

॥ भी० २५ ॥ र सूड़ा तूं विना कामे, खीम करे केम । पर दुख्से खीखड हुवा, किम होवे खेम ॥ भी० २६ ॥ चड़ घोड़े चतुर चमे, देखूं थारो साहस । घोड़ो फेरी कुशल, रहवे तो शाबास ॥ भी० २७ ॥ वो म्हारी अब चढन की, सक्ती हुवी स्याम । तो इण ने कुण वेची, संभरी सेंतो दाम ॥ भी० २८ ॥ वो पण मैं तुरंग खेलावण, छूं घणो हुंसि यार । कोई मुझने ऊपर चढावे, तो बतावूं चमत्कार ॥ भी० २९ ॥ पांच सात जना मिलने सूड़ा ने उठाय । धारा सरीसो बोझ करयो, मस्रो नहीं राहाय ॥ भी० ३० ॥ उठाई ऊंचो लीयो तम, आप छोड्या अंग । आप पड़ी ठोकोंने पाड्या, फोड्या तिणरा अंग ॥ भी० ३१ ॥ बीजी वारे दूखा उठायो, तिम हीत पर्यंत । केई का खोपरा फोड्या, केई का पाड्या दंत ॥ भी० ३२ ॥ तीजी वारे तिण ने चढावण आयो मानू चाल । चढता पाड्यो पड्यो, जाण पड़ियो काल ॥ भी० ३३ ॥ इण रीस खाई कहे, मवजणा न इम । यादव को माल खाई, पोठा कीया किम ॥ भी० ३४ ॥ मैं वो शूरवीर, जाण्यो जादव परवार । पाटवी में ऐसा दीसो, दूखा को कोई विचार ॥ भी० ३५ ॥ घसलाइ मानू, छाती पे पग दे तीवार । घोड़ा पे उछल करी, हुयो असवार ॥ भी० ३६ ॥ कमर कसी बेठ्यो बमी, खेंची तुरी लगाम । तरुण मनुष्य तणी परे, हय खेलावे ताम ॥ भी० ३७ ॥

पाटी देवे चक्री फीरावे, नचावे बहू पेर । दोई पग पे खड़ो करे, क्रीड़ा बहुतेर ॥ श्री०-
३८ ॥ भानू आदी राज पुत्र, अती रंजाणा देख । वाह वाह अश्व सवार दोई, कला टोही
विशेख ॥ श्री० ३९ ॥ इम देखतां उड्यो गगने हुयो अदेखाव । पाछो ते तो आयो नांहीं,
देखता रह्या राव ॥ श्री० ४० ॥ सर्व चमक्या मन के मांही, हुयो यह प्रपंच । कोई देव
तमासो कीधो, भासे इम संच ॥ श्री० ४१ ॥ केई लंगड़ा लूला हुया, कई रुधिर वमंत ।
भानू को सब अंग टीचाणो, तेई दुःख पावंत ॥ श्री० ४२ ॥ सव निज २ घरे आई, करें
सुख उपचार । तीजा खण्ड की पहली ढाले, अमोलक कौतुक उचार ॥ श्री० ४३ ॥

॥ दोहा ॥ मदनराय अती खुश हुया, ठगियो भानू कुमार । रूप पलटि आगे च-
ल्या, देखण शोभा बजार ॥ १ ॥ आगे जातां आवियो, बाग बड़ो मनुहार । फल फूल
पत्रे शोभतो, सर्व ऋतु में सुखकार ॥ २ ॥ पूछे कर्ण पीशाचिका, एह छे किण रो बाग ।
सा कहे भामा की मालकी, इण पे छे महाभाग ॥ ३ ॥ अश्व रूपे सब खाइयो, हरियो
भरियो घास । शूकर रूप धर खोदियो, झाड़ बेली को करचो नास ॥ ४ ॥ माली त्रास्यो
मारतो पण लाग्यो घाव । तिहां थी निकल आगे चल्या, धरता घणो ओछाव ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ (सुकृत नहीं कियो जिंदगानी में—ए देशी) कौतुक करे हांरे,

कौतक कर मदन रूप धरके ॥टेक॥ आगे आतों भेमबगीचो, शोभे वन भीकरके ॥ कौ०
॥ आंबा जांबु लींबु नारगी, केळ कबीठ सिरषी बरके ॥ कौ० २ ॥ नीम्रोद केवोडी बि
ल्व बद्रीफल, पलास पिपल बड उंबर के ॥ कौ० ३ ॥ अनार मोरछली अजीर पुगीफल,
सेतूत बदाम खीजूर खार के ॥ कौ० ४ ॥ इत्यादि केई जात केई घाट के शोभी रह्या
घोंघ सवर क ॥ कौ० ५ ॥ चंपा चमेली गुल बेल अंगूर की, छाया मंडप पान फल
सरके ॥ कौ० ६ ॥ गुलाब गेंदा केवडादिक की वाडी, सोरमें गुंजार करें भमर के
॥ कौ० ७ ॥ पुष्करणी वापी कूंवा कारज, कमल कुमोदनी छाया सरके ॥ कौ० ८ ॥
जितनी जात की जगमें वनास्पती छे, ते सब बगीचा में भरके ॥ कौ० ९ ॥ करण पीछा
पी से मदन पूछे, किस को बगीचो मालिक घर के ॥ कौ० १० ॥ खास मामा के सेल
करण को, एछे बाग मोजमाने करके ॥ कौ० ११ ॥ सुण कौतुक धर विद्या प्रभावे, रूप
बणाया पशू का ना ना तर के ॥ कौ० १२ ॥ सूकर स्याल रीछ गादर बकरा, हिरण
रोझ घोडा खचर के ॥ कौ० १३ ॥ होक कागला चीलादी पक्षी, स्याम रक्त मुखी बंदर
के ॥ कौ० १४ ॥ इम एक दम आई पड्या सब वन पे, नास करें बाग होर सुद्र के
॥ कौ० १५ ॥ तोडें मरोडें खोदें उखाडें, खावें फैंकें झुठ मर मरके ॥ कौ० १६ ॥ होका होक

कौ० १७ ॥ पत्थर ईंट गोफण गोली
मचाई बाग में, माली मालण घणा आया डर के ॥ कौ० १८ ॥ हांका मारे बाजा बजावें, पण तेतो त्यांथी
तीर ने, मारें खेंची २ रोम भरके ॥ कौ० १९ ॥ धूल धानी करी सब बगीचा की, तोडी मोड़ी न्हांख्या चर के
जरा न मरके ॥ कौ० २० ॥ जाय पड़्या पाणी के मांही सब, पीकर सूकाया सरोवर के ॥ कौ० २१ ॥
॥ कौ० २२ ॥ हांडी मटका
फिर पड्या बन पालक घरपे, तोड़ी न्हांख्या तेना छपरके ॥ कौ० २३ ॥ वनमाली बूंबाटा पाड़े तिण
फोड़ी नाख्या, ढोल्यो आटो दालादी घृत के ॥ कौ० ५४ ॥ कपड़ा फाड़ नाक कान तोड़ खाया, ते रोवे आंख
उपर फिर आये ठर के ॥ कौ० २५ ॥ पुकार गई भामा के पासे, खास बाग विणास्यो वनचरके
झर झर के ॥ कौ० २६ ॥ सूरा जोधा सुभट सज आया, शस्त्र संभारी बांधा बक्तर के ॥ कौ० २७ ॥
॥ कौ० २८ ॥ ढाल दूजी अमोलक
एतले गुप्त पशु हुवा सब, भट गया पाछा फिरके ॥ कौ० २९ ॥
भाखी, इम कौतुक कियो उत्तम नरके ॥ कौ० २९ ॥

॥ दोहा ॥ इम अती आनंद धर, आगे चल्यां कुमार। आया नगरी मांयने, देखे
वस्तु उदार ॥ १ ॥ सुवर्ण मय रत्ने जड़्यो, मोत्यारी चौतर्फ माल। सीरे गुमट पंच ऊपरे,
ध्वजा पताका लाल ॥ २ ॥ घुंघरू झांज झण झणा रह्या, कांच रत्न चौतर्फ जड़ाय। जो

तरया धोरी मोटा घणा, कायर रूप सोभाय ॥ ३ ॥ खंभकरण मोटा उमय, सींग लघु
कनक खोल । झूल जरी की पीठपे, गले घूंघर बहु मोल ॥ ४ ॥ सागे अपछरा सारखी,
नारी बैठी मांय । गीत गावे किंमरी परे, गहणा पखे शोभाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ री ॥ (राम आवा जमाना खोटा—ए देशी) भोवा मदन कौतुक करे

मारी ॥ टेक ॥ एसो रथवर देखी विषा सुमरी, पूछे प्रद्युम्न ते वारी रे ॥ भो० १ ॥ किण
को रथ यह किहां जावे छे, पीशाची कहे सुणो सारी रे ॥ भो० २ ॥ यह छे मामा की
दासी स्वामी, जावें कुंम लेवारी र ॥ भो० ३ ॥ मानू कुमर के ब्याह के कारण, पूज से
पाक इण वारी रे । भो० ४ ॥ तुम जननी ने यह दुःख कारी, तिण थी करो उपचारी रे
॥ भो० ५ ॥ कुंम लेण ते प्रजापति घर थी पाछी फिरी जादव नारी रे ॥ भो० ६ ॥
ऊँ खर सारथी मदन बणिया, थोम्यो रथ तत्कारी रे ॥ भो० ७ ॥ रामम करम दो
बोल्या विण न आप करी धुरी मझारी र ॥ भो० ७ ॥ हसी २ ने मब नारी बाकी
पोंबा बोंब पूकारी रे ॥ भो० ९ ॥ घणो शीघ्र ते रथ दोडायो सुणे नहीं किम की लगारी
रे ॥ भो० १० ॥ मड़ा भड़ सब कुम पड़ी फूट्या, सोटा शकुन ते भयारी रे ॥भो०११॥
रीस भराणी जादव नारी, दूवें खोटी २ गारी र ॥ भो० १२ ॥ रथ बांको उलास तब

कीधो, पड़गई महीला सारी रे ॥ श्रो० १३ ॥ कितीक का घाघरा लूगड़ा अटक्या, फाटी हुई चिंधारी रे ॥ श्रो० १४ ॥ कितीक नांगी हुई पड़ी नीचे, सिर फूटी दांत पड्यारी रे ॥ श्रो० १५ ॥ आंख फूटी कान नाक फूट्या, केइके रक्त की छूटी धारारी रे ॥ श्रो० १६ ॥ किती क कोतो कर पग अटक्यो, अथड़ावे फिर भारी रे ॥ श्रो० १७ ॥ सेरी २ इम सोर मचायो, रहवे नहीं किण का रोक्यारी रे ॥ श्रो० १८ ॥ गायन स्थान रुदन अति मचियो, लोक दोड़े तस लारी रे ॥ श्रो० १९ ॥ हाथे रथ आवे नहीं किण के, आडा फिरया तस पाड़्यारी रे ॥ श्रो० २० ॥ कोई कहे यह इंद्र जालियो, कोई कहे देवतारी रे ॥ श्रो० ११ ॥ कोई कहे यह छे विद्याधर, कोई कहे नर अवतारी रे ॥ श्री० २२ ॥ जादव से न डरे तिल भर भी, खेल करे मन इच्छारी रे ॥ श्री० २३ ॥ कोई बूढ़ा दाना श्याणा पूकारें, मत कर तूं ये कामारी रे ॥ श्रो० २४ ॥ इम दोड़ंतो ते अदृश्य हुयो, लोक अचंभे थयारी रे ॥ श्री० २५ ॥ कोई कहे गयो उड़ नभ में, कोई कहे पैठ्यो भू मंझारी रे ॥ श्री० २६ ॥ दासी ते यादव की प्रेमला, रोती गई जहॉ भामारी रे ॥ श्रो० २७ ॥ मांड कही सब बीती हकीकत, इम म्हारी हुइ खुवारी रे ॥ श्रो० २८ ॥ सतभामा सुण अचरज पाई, आईरीस अपारी रे ॥ श्रो० २९ ॥ शोध करी पर पतो न

लाग्यो, पैठी रही पञ्जतारी रे। भो० २० ॥ तीजा खंडनी तीजी ढाल, अमोल कहें पुण्य थी जय कारी रे ॥ धी० २१ ॥

॥ दोहा ॥ मीन ऋतु मन रंग थी, रूप परिवर्तन कीध। आगे पेखी वावड़ी, अल भर पाणी प्रसिद्ध ॥ १ ॥ तलो मजबूत पत्थरमय, मींठ रवत शोभाय। सोना को सोपान छ, मधी रत्न रले जड़ाय ॥ २ ॥ पंच प्रकार ना कनक की, छ आलंबन ठोर। जल निर्मल भरीयो घणा कमोदिनी छाई घोर ॥ ३ ॥ रक्षक नारी तिहां तणी, न लेवादें नीर। देखी मदन हर्षित हुयो पूछे देवी से धीर ॥ ४ ॥ सुणी कहे यह मामा तणी दूजा को नहीं दाय। कौतुक रसिया कुंवर जी, करे सुणो ते उपाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ (मानव जन्म रत्न तेने पाया रे–ए देशी) मदन कुंवर कौतुक रस भरियो र, चमत्कारी ख्याल करियो रे ॥ टेक ॥ ब्राह्मण रूप बणायो भारी, लए पुष्ट वर्ष गीर धारी रे। धोली धोती पहरी, गले अनेक मलेरी माथ पोतियो छेरी ॥ म० १ ॥ गुजराती जोड़ा युग पग में, ग्रंट भरी चाले मारग में रे। काने सोना को गेड़यो, अंगुली मुद्रा हीरनो, पवित्री पण केयो ॥ म० २ ॥ शिव तिलक विध सिर पर कीधो, कर में कमडल लीधो रे। वेद ध्वनी उचारे, स्लोक नाना प्रकारे, मधुर स्वर भकार ॥ म० ३ ॥

रूद्राक्ष माला कंठ के मांही, सुमरणी हाथे चलाई रे। टीपणो भले पासे, रासी ग्रह प्रकाशे, सत्यार्थ भासे ॥ म० ४ ॥ इम जोशी रूप मनोहर धारी, आया जिहां वापी भरी वारी रे। आशीर्वाद दीनो, चिरंजीव रहो कीनो, सुणी वाक्य भट जीनो ॥ म० ५ ॥ हर्ष धरी रखवालण दासी, आई ऊठ द्विज पासी रे। लुल २ पाय लागे, आज मोटो हम भागे, देव आया थे सागे ॥ म० ६ ॥ कहे ब्राह्मण बाई मैं हूं जातरी, प्यासा लागी आकरी रे। भर कमंडल वारी, थोड़ा बहुत सीदा री, देवो लेवो लाहारी ॥ म० ७ ॥ ते कहें इहां हम घर नहीं देवा, नहीं तो करता थारी सेवा रे। यह वापी मामारी, तिण कियो नाकारी, मत देवो किण ने वारी ॥ म० ८ ॥ कहे विप्र मत सीदो देवो, पाणी लेवा ने तो केवोरे। मुझ आतम सुख पासे, थांने पुनज थासे, ईश्वर पूरसी आसे ॥ म० ९ ॥ तोपण चेड़ी नांनां केवे, यह नीर कोई नहीं लेवे रे। भामा भानू श्री कृष्ण, झीले इणमें हो प्रसन्न, और रहवें सब सतृष्ण ॥ म० १० ॥ कहे प्रोहित एक कमंडल पाणी, देवो यह मांगणी म्हारी रे। दीधा ओछो कांई थासे, मुज फरम जो पासे, तो पवित्र हो जासे ॥ म० ११ ॥ बली मंत्री जल आपसुं थानें, थे करजो तिण थी स्नाने रे। रूप इंद्राणी ज्यूं होसे, सब कोई तुम सामे जोसे, तुम मालकणी रोसे ॥ म० १२ ॥ इम कही पेसे वावी मांही, ते चलगी दोड़ी आई रे।

कोई घोली साई कोई कर पकड़ आई, लेवे विष ने वांई ॥ म० १३ ॥ निर्लज्ज जाति नारी दरसाई पण ते थो दासी कब पाइरे । वानरी परे वलगी, क्यां नहीं होवे अलगी, बोले अंगीठी झलगी ॥ म० १४ ॥ कह मदन मामा मूरखी दीसे, तुम पण वेद सरी सेरे । मम गुण नहीं जाणो, खोटी को पक्ष ताणो, छोड़ा लेवादा पाणो ॥ म० १५ ॥ इम सुण गोली रीस भराणी, अरे बाम्हणियां क्यूं पाऊ पाणी रे । राज राणा ने तांई, पाणी यह मिले नांहीं, ता तूं किण ठाई ॥ म० १६ ॥ सौम्य मुद्रा विप्र ऊचर पाई, तुमने मुझ गुण को पत्तो नाही रे । गुरु पग रज प्रमावे, अग पावन थाय, मन पार गमावे ॥ म० १७ ॥ इम कही विप्र तिण दासी पे मारी, फूंक मग की सेवारी र । वे हागई रूपाली, गोरी हुइ मिगीने काली, गेहमा झाक झमाली ॥ म० १८ ॥ छोकी ब्राह्मण न मुह वे दूरी, निरखे आपम में हप पूरी रे । देव बड़ा करामाती, उपगारी अघाती, बापी पाहिर आती ॥ म० १९ ॥ विपा प्रमावे सब पापी नो पाणी, निपा कमंडल में गुण लाणी रे । सट वाहिर आयो, सब पढ़े तस पायो परसंसे सवायो ॥ म० २० ॥ आशीर्वाद तस दर्शन चाल्यो, दासी तन व सर निहाल्या रे । झूठी बापी दीठी, अघरव पैठी मिलगी चिता अंगीठी ॥ म० २१ ॥ लागी मप मेदी तिण लारे, मोटे स्वर पूकारेर । किहां जल झलले

जावो, करी म्हाने पछतावो, मार से घणी ठावो ॥ म० २२ ॥ अहो देव थांके पायें लागा, पाछा फिरो आवो आगारे। वापी पाछी भर दीजे, म्हारी करुणा कीजे, आगे मया धारीजे, ॥ २३ ॥ पाणी जग जीवन जग रक्षक, जन पान धान को भक्षक रे। अमृत श्रेष्ट एह गायो, इस बिन जग मांयो, चाले नहीं क्षण मायो ॥ म० २४ ॥ यों अनेक विध बिल विलें दासी, पैर पड़ें करें अरदासी रे। बाबा जी बात मानो, कुमर देवे नहीं कानों, हाथी पीछे जिम श्वानो ॥ म० २५ ॥ झट आयो चल वाग ने वारे, भानू सेना शाला निहालेरे। विद्या तणे प्रभावे, गज घोड़ा छीपावे, रखवाला अकुलावे ॥ म० २६ ॥ शोर मच्यो घणां दोडें छें लोको, किहां गयो सब थोको रे। विप्र घूमतो जावे, दासी पाछे अरड़ावे, लोक दास्यापे आवे ॥ म० २७ ॥ पूछें किम रोवो थे बाई, तब ते कहें मुरझाई रे। यह करामाती जोसी, मम बावड़ी सोसी, आगे कांई होसी ॥ म० २८ ॥ दासी दाम मिली गुस्से भराया, दोडी मदन निकट आया रे। धक्का धूम लगाई, कुमर चुप उभाई, तिण कमंडल फोड्याई ॥ म० २९ ॥ कांइक पाणी बावड़ी केरो, वली विद्याथी कीधो वधेरो रे। सब बजार के मांही, वारी पूर भराई, शोर मच्यो तिण ठाई ॥ म० ३० ॥ गज गाजी नर कपड़ा किराणा, तिण पूर मांही छे ताणा रे। घणी हुई खराबी,

गई मधन की आपी, मनुस्य बस्तु हरावी ॥ म० ३१ ॥ हा हा कार मचियो विहां मारी, पशु लोग रह्या घबराई र। किमरो पत्तो नहीं पावे, विप्र अचरय थावे लोक ने अचरज आवे ॥ म० ३२ ॥ दासी दास मह अचरज थोई, भामा को कस्रो आप मोई रे। मागा अचरज पाई हाल चौथी के मांई अमोलक गाई ॥ म० ३३ ॥

॥ दोहा ॥ मागे चाल्या मदन जी, देख्यो मोटो बाजार। सड़क सीधी मफा घणी, बणी गली त्रिकधार ॥ १ ॥ पंक्ति बंध दुकान सब, पंच रंग रत्न जड़ाव। माली तंबोली सराफ की, बजाजी बड़ा साहूकार ॥ २ ॥ निम २ हाटे सब बणां, बैठा माल पसार। मणी मोती रत्न भूषण, शोभे मेल अपार ॥ ३ ॥ ऊनी रेसमी सूतका, ठन्के वस्त्र खरीदार। झगमग २ होरही, शोभा घनी अपार ॥४॥ कांच ममीका स्यालड़ा, शोभे हाट मणिधार। कीराणा मह मांसिनां, पंसारी रह्या पसार ॥ ५ ॥ तबोली बीड़ा करे, माली गूंथे हार। बणज घणो सब ने हुवे, मची रह्यो ललकार ॥ ६ ॥ पूछें कर्ण पीआमणी, मा कहे मामा की हार। मानू ब्याह क कारणे, मची रह्यो यह ठाठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ (श्री गौतम स्वामी में गुण घणा-ए देशी) चरम शरीरी प्राणीयो जी, सुणी देसी को बचन। कौतुक करना कारण कीधो रूप बामन जी, गोरो मापो ठींगणो

जनोई खड़ाऊं रूद्राक्ष तन जी, दीसे रूपे भर्‍यो जोवन जी, तुलसी माल गले पहरन जी, मंडन जी ॥ १ ॥ प्रद्युम्न कुमार रंगे राजीयो ॥ टेक ॥ माली की दुकान पे आयने जी, मांगे फूल बेचार । ते कहे भानू के कारणे, म्हें गूंथा छां हारजी, इणने पहरसी राजकुमारजी, थांने नहीं मिले लगार जी, सुणी मदन कुसुम सब सारजी, कीधा आक कनक ना तेवार जी ॥ प्र० २ ॥ गांधी पासे मांगीया जी, इतर फूलेल सुवास। ते कहे ये छें भानू ना, जद कुमर ने आई हांस जी, सब सुगंध को कीधो नास जी, दुर्गंध रही भभकासजी, गांधी पाय घणी त्रास जी, प्रद्युम्न विप्र आगे चाल्यास जी ॥ प्र० ३ ॥ दाणा वाला ने पाससे जी, मांगे सेर बेसेर । नहीं आप्या थी खीजीने, कीधो तिण में फेरा फेर जी, चावल तूरी तूरी चावल फेरजी, गेहूं कोद्रव बाजरी हेरजी, वाण्यां घबराई करें मोटी टेर जी, कुमर आगे चल्या घर मेहर जी ॥ प्र० ४ ॥ पसारी पासे केसर जांचे, तब तिण कियो ना कार । केसर की गेरू करी, गेरू की केसर अेकारजी, कपूर को कियो लूंण खार जी हींग कस्तूरी ते हिंगार जी, इम बदल्या सब प्रकार जी, वाण्या घबराया ते आगे चारजी ॥ प्र० ५ ॥ पीतांबर बजाज पे मांगे, मदन आणी उछरंग । नां कहेतां तिण पट कुल तणों, कीधो रूप सब बेरंग जी, रेसमी टाट टाट सुरंग जी, छींट सफेद सफेद छींट ढ़ंग जी,

मल २ रायी मादी मल मल मंग जी, मजाज देखी होरया दंगजी ॥ प्र० ६ ॥ सराफ
प मांगी पचीनरी ना मण्यो कुमर खीजन। मोना को पीतल करे, पीतल ठाम हम परंत
जी, मांदी कथीर कथीर पाइनजी, मूंगा मड्डी केरा करत जी, भूपम मह मोल पूरंत जी
न पम पवागया अत्यंत जी ॥ प्र० ७ ॥ जीहरी न कइ दीजीर, गोप रत्न रत्न मवाय।
जीहरी नां भपतां घका, कुमर को लाग्यो दावजी करपा ककरी सब देखावजी, हीरा पन्ना
मरूराणी मानजी जीहरी नो टस्यो ओछाय जी, आगे कुमर उठायो पांव जी ॥ प्र० ८ ॥
घोर दुसरी मजार में, इम कुमर जी पाड़ी वाट। वस्तु ठिकाणे नां मिले सब व्योपारी
न सुणो ऊचाट जो, एक इम मच्यो घोंगाट जी, रोवें पुकार करें कल कलाट जी, दोड़ा
दोड़ मची मय हाट जी, उरे खोली हम्मा कपाट जी ॥ प्र० ९ ॥ ग्राहक फिरें मोटा २,
कोटी द्रव्य की हरकत होय। हेराला फेराला सठीया, घपगई न पोषा होय जी, रक्खी
वस्तु न लाधे कोयजी, लाभ गयो जाणी न रोय जी, इम सोर मच्यो बहु लोय जी,
पली आगे आश्चर्य इखोय जी ॥ पृ० १० ॥ इम कौतुक करता चालीया जी, आया राज
दुवार। पहली आयो वासुदेव नो जी, तिहां रत्न जड़ित पगार जी, आग पोक अठ
सुखकार जी, बैठा सिंहासन सरदार जी, अति शोभित दीस दीदार जी ॥ पृ० ११ ॥

बहत्तर हजार प्रेमलापती, दाता भुक्ता अति धीर महा भाग्य शाली गुण निलो । सूरवीर बडा गंभीर जी, हैं दश दशार के लघूवीर जी, देखी कुमर हरख्यो हीर जी, पूछे देवी से तब वीर जी, थह कुण छे फरमावो ईर जी ॥ प्र० १२ ॥ सुरी कहे यहकृष्ण जी तणा जी, पिता तुम दादा जी थात । ऊभो जोवे काम कौतुक ते, तिहां मींढे रहे खेलात जी, घणा गाय मींढा तिहा लात जी, मोटो मींढो सबने भगात जी, कुमर देवीने पूछे बात्त जी, वृद्ध मींढो किण को दरसात जी, ॥ प्र० १३ ॥ पीशाचणी कहे वसुदेवनो, इण ने कौतुक की घणी चाय । इण यह मींढो पोसियो, सर्व मींढों को भगाय जी, तिण थी तुम दादा जी फुलाय जी, मदन विद्या थी मींढो बणाय जी, लष्ट पुष्ट उत्तंग रंगी काय जी, ॥ प्र० १४॥ आप मदारी बण्यां तदाजी, पहरयो सूतणों साल । फेंटो माथे बांधियो, गले पत्थर मणकों की माल जी, दाढ़ी मूंछना मोटा बाल जी, मींढा नी डोर साही आया चाल जी, कहे दादाजी सूं मदनलाल जी, खेलावो हम मींढा संग हाल जी ॥ प्र० १५ ॥ कहे राय जी मदारी सुणों, क्यों तू मीढा को करे नास । मोट २ नृपना मीढा, मुझ मीढाथी गया नास जी, तो तुझ जितणरी किसी आशजी, तब मदारी करे प्रकाश जी, एक बार लड़ाओ धर हुलास जी, जीत्या पछे दीजो शाबास जी ॥ प्र० १६ ॥ इम कही छोडया युग एडका,

मीडया अती हो सूर। कठ पल छल पल अकल थी, थो जादव मीडो पूर जी, पण मदन विधाचल भूप जी तम इगाई कीधो दूर जी, महारी ना भाज्या तब रण तुर जी, वसुदेव का उतर्यो नूर जी ॥ प्र० १७ ॥ दादा जी भी नहीं न्ल्या जी, भी प्रद्युम्न कुमार। सिंह गगा ना काहु के, यह ओसाणा मिल्यो इण थार जी, आगे चाल्या हर्षीअपार जी, यह पांचमी ढाल भेकार जी, कहे अमोलक अणगार जी, होवे पुण्य थी सदा जयकार जी ॥प्र०१८॥

॥ दोहा ॥ आगे चलतां पेखियो, भवन बडो मनुहार। रत्न ज्योति झगमगकरे, तोरण ध्वजा माला मार ॥ १ ॥ सप्त ताल ऊंचो अती, जाली झरोका सुचंग। चटारयो मठारयो घणो, दीप रह्यो नवरंग ॥ २ ॥ भवनी विद्या कहे कुमरने, सुणो स्वामी जी मुझ बात। यह भवन वैरण तणो रहे मामा मोरी मात ॥ ३ ॥ करणों जो ते करो यहां, कसर न रासो रंच। सब को सार इण ठाम छे, और सकल परपंच ॥ ४ ॥ करो फजीती लोक में, सिर मूंडी पहराक कांस। सगला ने आश्चर्य कर, लेवो शीघ्र शाबास ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ (सुणो चंदा जी श्री मंदिर परमात्म पासे जाजो जी—ए देशी) हरी कुमरजी क्रीडा करवाले राच, सत्या वेदरसा। मोहन रूपे जी वडी माता भणी, आया चली छेवरसा ॥ टेक ॥ बालक रूपे बामण बणिया, स्नान करी तन स्वच्छ ठणिया, सिर

छूटा बाल तिलक चंदणिया ॥ ह० १ ॥ गले रुद्राक्ष तणी माला, कांधे धोती भीनी लोटी कर झाला, श्लोक ऊचारे मधुर रमाला ॥ ह० २ ॥ भामा जी बैठी दासी ने वृंद, शोभे ज्यों तारा बिच चंद, काम देख पायो आनंद ॥ ह० ३ ॥ आई ऊभो माजी सामे, स्वस्ति श्री ऊचार्यो जाम, भामा देखी हर्ष पाम ॥ ह० ४ ॥ मांगो द्विज थाने कांई चइये, जे जोइये ते हम दइये, इहां कमी कुछ छे नहिये ॥ ह० ५ ॥ माजी मुझने भोजन दीजे, क्षुधा लागी तेहने त्रपती जे, और मुझे कुछ नहीं चइजे ॥ ह० ६ ॥ कृष्ण पटराणी ना दर्शन थइया, आज धाप जीमावो मइया, तृप्त होई आगे जइया ॥ ह० ७ । कोई ब्राह्मण उभाथा पहली जीमेवा, तिण सुण्या लघू विप्र तणा कहेवा, ते कहे सुण अहो तूं प्रदेसी भेवा ॥ ह० ८ ॥ अरे त्रिखंड पति पत्नी आगे, खावण वस्तु कांई मांगे, यह तो मिलसी घणी जागे ॥ ह० ९ ॥ हय गय रथ माणक मोती, हिरण्य हेम पितंबर धोती, मांग कमी कांई होती ॥ ह० १० ॥ लघू विप्र कहे थे सुणो बामण, तुम भ्रष्टाचारी सेवो कनक कामण, विद्या वेचो करो टुमण टामण ॥ ह० ११ ॥ अनेक भेद छे दान तणा, पण अन्न तणा छे पुण्य घणा, अन्न थी सुख पावे सर्व जणा ॥ ह० १२ ॥ अन्न जीम्या तृप्त थावे, नहीं धन वस्त्र थी धाप आवे, धन राखी विप्र चंडाल कहलावे ॥ ह० १३ ॥

भीडया अती हो सूर । कल बल छल बल अकल थी, यो जादव मींडो पूर जी, पण मदन विद्याबल सूर जी, तम हराई कीधो दूर जी, मरारी ना माज्या तब रण तूर जी, प्रद्युम्न को उतरयो नूर जी ॥ प्र० १७ ॥ दादा जी थी नहीं ग्ल्या जी, श्री प्रद्युम्न कुमार । मिद मगा ना काधु क, यह ओलखाणा मिल्यो इम धार जी, आग चाल्या हर्षअपार जी, यह पांचमीं ढाल श्रेकार जी, कहे अमोलक अणगार जी, होवे पुण्य थी सदा जयकार जी ॥प्र०१८॥

॥ दोहा ॥ आगे चलतां पेखियो, भवन बड़ो मनुहार । रत्न ज्योति झगमगकरे तोरण ध्वजा माला मार ॥ १ ॥ सप्त ताल ऊंचो अती, जाली झरोका सुचंग । पगारयो मठारयो घणो, दीप रह्यो नवरंग ॥ २ ॥ प्रज्ञसी विद्या कहे कुमरने, सुणो स्वामी जी मुझ वात । यह भवन वैरण तणो रह भामा मोटी मात ॥ ३ ॥ करणों जो न करो यहां, कुमर न राखो रंच । सब को सार इण ठाम छे और सकल परपंच ॥ ४ ॥ करो फजीती लोक में, सिर मूंडी पहराक श्वंस । सगला ने आश्चर्य कर, लेवो शीघ्र शाबाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ (सुणो चंदा जी श्री मदिर परमात्म पासे जावो जी-ए देशी) हरी कुमरकी क्रीडा श्रवणले राय, सण्या वेदरसा । मोहन रूप जी बकी माता मणी, आया चली छेवरसा ॥ टेक ॥ बालक रूपे ब्राम्हण बणिया, ध्यान करी तन स्वच्छ ठणिया, सिर

मुझे जीमायो चायतो, अलगी ठोड़ बताय ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ७मी ॥ (बाजू बंद विसर गई कंगणा—ए देशी) लघू विप्र करामाती भारी, करे कुबुद्धि ते नाना प्रकारी रे ॥ टेक ॥ मैं विप्र छूं पूरो आचारी, कांई निज मुख थी करूं मैं शोभारी रे ॥ ल० १ ॥ चार वेद अठारा पुराण मुझ कंठारी, घणी विद्यानो छूं मैं भंडारी रे ॥ ल० २ ॥ मुझ जीमाया पुण्य श्रेकारी, सर्व देवता पावे त्रपतारी रे ॥ ल० ३ ॥ जेतो फल अड़सठ तीर्थ भेटारी, तिणथी घणो फल मुझ जीमायारी रे ॥ ल० ४ ॥ जो जीमाया क्रोड़ भ्रष्टाचारी, तुले नहीं एक जीमे जो आचारी रे ॥ ल० ५ ॥ तुझे तारवा भणी मैं आयारी, बोल कांई मरजी छे थारी रे ॥ ल० ६ ॥ अब लच पच बातें पर हारी, तुम मन में सो देवो ऊचारी रे ॥ ल० ७ ॥ जो जीमावण की होवे इच्छारी, तो कहणी करणी पड़सी म्हारी रे ॥ ल० ८ ॥ नहीं करोतो फिरूं इण वारी. इम वे परवाही पणो दियो बतारी रे ॥ ल० ९ ॥ देख्यो बाचाल बाल वयधारी, भामा हर्षित हुई अपारी रे ॥ ल० १० ॥ कहे करसूं सब कहणी थारी, जीमासूं धपाई आहार चारी रे ॥ ल० ११ ॥ इम कही लाई विप्र शाला मंझारी, पूछे भोजन तो न किया झूठारी रे ॥ ल० १२ ॥ सब कहें शुद्ध छे सब आहारी, तब सब आगे आई बैठारी रे ॥ ल० १३ ॥

इण घी में घाली भण आण्यो, रिद्दी देख भरा नहीं राण्यो, तुम वो बाम्हण दीमो काचो ॥ ह० १४ ॥ तुम थी बोलणो मुझ नहीं जोगो संग किया मुझ धूव ने लागे रोगो, तुम नाम धराई करो ढोंगो ॥ ह० १५ ॥ ते विचारो गया सरमाई, उत्तर नहीं दीधो कांई मामा गुण चमत्कार पाई ॥ ह० १६ ॥ दासी मणी कहे सतमामा, इणने लेजारो बाडामां जीमावो पेट भर मजामां ॥ ह० १७ ॥ कुमर कहे अहो सुणो माई बाडा में छे कारण कांई पर छोड भेजो मुझे तिण ठाई ॥ ह० १८ ॥ मम कुमर ब्याह छे अभी माई, तिण थी विप्रमोजन दीधाइ, द्विज मेलाहो स्यां रसोई मणाई ॥ ह० १९ ॥ नाना विध मोजन तैयारो, थे जीमों त्यां पधारा, चहिये जोला हुकम हमारो ॥ ह० २० ॥ इम हुकम मामा को पाया, ढाल छठी अमोलक गाया, मदन तणा पुण्य भराया ॥ ह० २१ ॥

॥ दोहा ॥ विप्र कहे माजी सुणों, ए भ्रष्टाचारी लोग । तिण रे भेलो बैठन, नहीं जीमणो जोग ॥ १ ॥ क्रिया हीणा सब हुआ, कीधो भ्रष्टाचार । गायत्री जप छोडने, घर में घाली नार ॥ २ ॥ वैश्य शूद्र संगति करें, सीखावें मद्यज्ञान । धूतारा हो धनने ठगे, करें थोथो अभिमान ॥ ३ ॥ मात ऐसा विप्र का, दर्शन भला न जाण । चडाल सरीखा ये कह्या, जोवो मार्कंड पुराण ॥ ४ ॥ इण कारण इण में मिली, मैं नहीं जीमूं माय । जो

मुझे जीमायो चायतो, अलगी ठोड़ बताय ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ७ मी ॥ (बाजू बंद विसर गई कंगणा—ए देशी) लघू विप्र करामाती भारी, करे कुबुद्धि ते नाना प्रकारी रे ॥ टेक ॥ मैं विप्र छूं पूरो आचारी, कांई निज मुख थी करूं मैं शोभारी रे ॥ ल० १ ॥ चार वेद अठारा पुराण मुझ कंठारी, घणी विद्यानो छूं मैं भंडारी रे ॥ ल० २ ॥ मुझ जीमाया पुण्य श्रेकारी, सर्व देवता पावे त्रपतारी रे ॥ ल०-३ ॥ जेतो फल अड़सठ तीर्थ भेटारी, तिणथी घणो फल मुझ जीमायारी रे ॥ ल० ४ ॥ जो जीमाया क्रोड भ्रष्टाचारी, तुले नहीं एक जीमे जो आचारी रे ॥ ल० ५ ॥ तुझे तारवा भणी मैं आयारी, बोल कांई मरजी छे थारी रे ॥ ल० ६ ॥ अब लच पच बातें पर हारी, तुम मन में सो देवो ऊचारी रे ॥ ल० ७ ॥ जो जीमावण की होवे इच्छारी, तो कहणी करणी पड़सी म्हारी रे ॥ ल० ८ ॥ नहीं करोतो फिरूं इण वारी. इम वे परवाही पणो दियो बतारी रे ॥ ल० ९ ॥ देख्यो वाचाल बाल वयभारी, भामा हर्षित हुई अपारी रे ॥ ल० १० ॥ कहे करसूं सब कहणी थारी, जीमासूं धपाई आहार चारी रे ॥ ल० ११ ॥ इम कही लाई विप्र शाला मंझारी, पूछे भोजन तो न किया झूठारी रे ॥ ल० १२ ॥ सब कहें शुद्ध छे सब आहारी, तब सब आगे आई बैठारी रे ॥ ल० १३ ॥

पग धोवन मगायो मठो भारी, तब दासी दियो तम ठाई रे ॥ ठ० १४ ॥ पग ऊपर ढोल दीयो ते घडारी, विहां भाख्या आंगण में रेडारी रे ॥ ठ० १५ ॥ घणा ब्राह्मण का कपड़ा भीज्यारी तब ब्राह्मण अती खीज्यारी रे ॥ ठ० १६ ॥ अरे मूढ क्यों खोपरी साजी भारी, गयो मद में धणो तू मरारी रे ॥ ठ० १७ ॥ तुझे दाना बूढा की न लज्यारी, लड़न उठ्या घड़ा बठ धारी रे ॥ ठ० १८ ॥ तब ब्यापा फिरया वस आसारी, रग में भंग मत डारी रे ॥ ठ० १९ ॥ इम सुण बेठा ते सुपकारी, रीस मन की मन मां मारी रे ॥ ठ० २० ॥ मदन किंचित् मात्र नहीं बोल्यारी, बेठा सब थी ऊंचे आसन माई रे ॥ ठ० २१ ॥ सब विप्र तने घन्ही चिलकारी, एक दम घड पड़ी उठ्यारी रे ॥ ठ० २२ ॥ मदन छो बोले न लगारी, बेठो हुइ भारी मोटी समतारी रे ॥ ठ० २३ ॥ ते रीसाइ दूजे ठाम गयारी, मदनजी तिम सार धयारी रे ॥ ठ० २४ ॥ विहां पण ऊंचे आसण बैठारी, तब सब विप्र अति खीज्यारी रे ॥ ठ० २५ ॥ कहे मारो निर्लज्ज ने इण ठारी धाया मारण हुइ ने हुमीयारी रे ॥ ठ० २६ ॥ तब क्षुल्लक विप्र इम बोल्यारी, थे छो मान गुबे करी घडारी रे ॥ ठ० २७ ॥ मणीने स्पर्श थे पध्यारी, पण अजू न तज्यो अहंकारी रे ॥ ठ० २८ ॥ क्रोध लोभ कपट कर मरया री, हिंसक झूठा चोर व्यभिचारी रे

॥ ल० २९ ॥ फोकट रीसे थे प्रजल्यारी, जाणो करामात तो देवो चतारी रे ॥ ल० ३० ॥ इम विप्रोंने दियो चिड़ली लगारी, ढ़ाल सांतवीं अमोलक ऊचारी रे ॥ ल० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ ज्ञानी समझे ज्ञान सूं, मूर्ख लाते समझाय । ब्राह्मण जाती मद भरया, इम सुण खीज्या सवाय ॥ १ ॥ सूधी सीख सरधें नहीं, सूधी उलटी प्रगमाय । काणा ने काणो कह्यां, रीस अंगे न समाय ॥ २ ॥ ईंट लक्कड़ पत्थर लई, मदन को मारण धाय । एक एक ने आगे हुई, अधिको ज़ोर जणाय ॥ ३ ॥ काम कहे भामा भणी, देखो मात अन्याय । मैं सीधी कही बातड़ी, ये भूत ज्यूं लागा आय ॥ ४ ॥ भामा कहे मैं कांई करूं, इणरो कांई न दोष । तूं भी निचल्यो ना रहे, कुबुधि जगावे रोस ॥ ५ ॥ शाबास कृष्ण पटनार तुझ, बालक ने विश्वास उपजाय । निर्दय भट्टों के विषे, मुझने दियो फॅसाय ॥ ६ ॥ पण अब देखो मुझ कला, उभा रही इण ठाय । जो करे भुगते वही, जदी शुधी ते पाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ भुजंगी छंद ॥ तदा मदनराय विद्या ने हकारी, रूठ्या ब्राह्मण तिण ऊपर डारी । किया आंधला सब विप्र तिवारी, हुया गेलासा शुधि न रही लगारी ॥ १ ॥ मांहो मांही बोलण लागा ते करड़ा, तजी लाज काज ने हुया निसरड़ा । कर जोर जोसे रह्या ते तो

भरड़ा, आई झुवानी हुवा जे जे गरड़ा ॥२॥ केई हाथ लाठी साठी पणी साई, केई पतली लकड़ी ली है उठाई। केई लेय सोटा मड़ा मड़ लगाई, केई मूसला झमरा की सटकाई ॥३॥ कई मांहो मांही लाता लगाड़ केई मुक्का धक्का करी वन पाड़। केई माथा थी माथा रीसे पछाड़े, कई आप आपन मोंवाड़ा पाड़े ॥४॥ एक एक ने ऊपर केइ पड़ीया, एक एक की छाती पे केइ चढ़ीया। एक एक पी बांधो पांच अड़ीया एक एकउपर दोव कइ कड़ीया ॥५॥ केइ केइनी ओसे चोटी उपाड़े, केइ केइनी दाढ़ी मूछें उखाड़। केइ कइ नी टांगा पकड़ पाड़, केइ कइ हीला करपा हाथो हाड़े ॥ ६ ॥ केइ वस्त्र छूट्या हुवा साफ नागा हकारथा धका अरा न होय आगा। जबरदस्ती थी एकेक पीछा लागा, घोंवा पाड़ी ने आगा पाछा भागा ॥ ७ ॥ नगिणे बाप बेटा भाई भाई, काका बाबा भतीजा नी सगाई। नाना दोहवा दादा पोता अव्याइ, मामा मामजा मोमा माच्या लव्याइ ॥ ८ ॥ न गिणे आपस में कोइ छोटा मोटा, लज्जा शरम का पच्चा खिहां टोटा। सटा सटा सेंघ २ मारे छे सोटा, गाळी बड़ बड़ी फड़ फड़ावे छे होटा ॥ ९ ॥ हा हा कार मचीयो अती तिहां भारी, दोड़ी आया तिहां घणा नर नारी। देखी तमाशो मर्यमे घपारी, महो २ यह नवीन तमासारी ॥ १० ॥ हंसी हंसी ने पेट दुःख आयो, लोंसी २ ने गलो

दुःख पायो। मूंडे लालछूटी नेग नीर आयो, किताक तो हंमी जीव घबरायो ॥ ११ ॥ केइ दाना शाणा मिली ने समझावें, सुणे नहीं तब बीच जाई छूड़ावें। तिण ने छीया ते तिणसरीखा थावे, छूटे नहीं दूणा जंग मचावें ॥ १२ ॥ केइ ना माथा फूटी ने रक्त वेवे, आंधा काणा नकटा केइ छेवे। केइ लंगड़ा लूला पांगला हुयावे, केइ का हाथ पांव अंग टूटावे ॥ १३ ॥ लाठी आई लागे तदा धड़ा धड, भाटा आइ पड्या तिहां भड़ा भड़। कोरडा जोर लागे तिहां तड़ा तड़, लोटा आइ लाग्या तिहां कड़ा कड़ ॥ १४ ॥ भामा कर जोड़ी कहे अहो भाइ, अब जल्दी समेटो थारी कलाइ। रखे बाम्हण बिचारा जावे मराइ, बाल रूपे यह कला किहां सिखाई ॥ १५ ॥ माता मैं बालक जाणू छूं कांई, ये किम गेला हुया घणा भण्याइ। यांनी विद्या अभी गई किण ठाइ, सागा हुया ये जिम भूतड़ाइ ॥ १६ ॥ इम कहीने ते विद्या समेटी, सब विप्र हारी पड्या गया वेठी। हाय २ करतां शर्म तन पेठी, कांई हुयो ये ख्याल चिंते जेठी ॥ १७॥ केइ बूढला की कमर गई भांगी, केइने मर्म स्थान के घणी लागी। केइ की कर पग अंगुली हुइ आगी, किताकी भूंडी काया दीसे नांगी ॥ १८ ॥ कहें आपस में इता दिन आपा भाया, भोजन तो नाना तरह का खाया। पण आज सरीखा स्वाद नहीं आया, ऐसा लघू विप्र आज माल चखाया ॥ १९ ॥ मदन कहे अब होवे सर्व शाणा, ब्रह्म क्रिया पालो माहणो

जीव प्राण। इम सरीखों क रास्ते मत जाणा, जो सुख चाहो थारी आत्माना ॥ २० ॥
सब ते वचन मानी नमे तत्काल स्यालणी ए सुजंगी ढाल। आठवी ए हुइ अती विशाल,
अमोलक कहे सुणो आगे उजमाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥ मरन कहे अहो मातजी, मुझ भूखे जीव अकुलाय। नोतरी मुझ पैमा
दियो, जीमावो किम नाय ॥ १ ॥ कृष्ण तणी पटरागणी, सर्व वस्तु को जोग। कांई कम्
साई आई मन, देवो न इच्छित भोग ॥ २ ॥ दास्या सुं भामा कहे आमण ऊंचो बिछाय।
सुवर्ण थाल रत्न वाटकी, बाजोठ मेलो लाय ॥ ३ ॥ सुवर्ण कलश काष्ठ पोढी पे, गंगो
दक मेल्यो लाय। हाव भाव घणी युक्ति सुं, भोजन सभी सजाय ॥ ४ ॥ जीमावो लघु
विप्र ने, हमारे सामे बैठाय। सीघ्र काम यह कीजिये, देर क्षण भर की नाय ॥ ५ ॥
कुब्जा दासी सुवर्ण घटे, शुद्ध गंगोदक लाय। अती भाव भक्ती आदर करी, धोवे स्वहस्त तस
पाय ॥ ६ ॥ चरण स्पर्श परसाद थी, कुब्जा सुंदर थाय। दखी लाज अप्सरा, रुप तस
सगे न माय ॥ ७ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ (करी ज्यां कमी नहीं कांइ -ए देशी) यह ब्राम्हण मेरे मन माई,
करमाती घणा गुण का दरिया, सेवो जे हुलसाइ ॥ टेक ॥ कहे भामा यह विप्र अमोलक,

चिंतामणी साई। गुप्त गुणी ढांक्या अभ्रचन्द्र ज्यूं, मुझ मन लोभाइ ॥ य० १ ॥ लघू विप्र भामा से बोले, सुण मोटी माइ। पूरो पड़े तो मुझने जीमाजे, अधूरो उठूंगा नाई ॥ य० २ ॥ नहीं तो पहली ना भणो, अन्यघर जीमूं जाई। भोजन ने व्यवहार के मांही, रहेवो न सरमाइ ॥ य० ३ ॥ भामा कहे सूं इम थे बोलो, इण घर कमी कांइ। हजारो गजराज धापे, मनुष्य की कया मात्राइ ॥ य० ४ ॥ सुखे आप जीमवाने वीराजो, जीमो जे इच्छाइ। शंका मन में कांइ मत राखो, मांगो जो देश्यां लाइ ॥ य० ५ ॥ इम सुण ऊंचे आमण बेठा, मिली जादू लुगाइ। परोसगारी करे अती हर्षी, पहली मेवा लाइ ॥ य० ६ ॥ बदाम पिस्ता दाख चीरोंजी, खजूर केलाइ। अंजीर खोपरो शकर मीलायो, खार कहल गुंजाइ ॥ य० ७ ॥ मेवो खुटया पक्कान्न लावें, लाडू श्री केशरयाइ। मोतीचूर मगद चूरमा का, बेसण दाल सालाइ ॥ य० ८ ॥ दूध पेड़ा कुंदन का ताजा, घेवर बरफी कलाकंद जलेव्याइ। फेणी जांबू सीगोडा की सेवां, ते सर्व खुट्याइ ॥ य० ९ ॥ फिर खाजा दो नुक्ता साबूनी, ते पण सब खाई। सीरो लापसी मेवा खीचड़ी, राम खीचड़ी जीमाई ॥ ये० १० ॥ भुजीया वड़ा दाल सेंवा ने, पतासा पेठाई। दही का तो जावण्या मेली, मेल मीठा खटाइ ॥ ये० ११ ॥ फिर पूरण पोली पूड़ी, दुपड़ी रोटा बाटी रोट्याइ।

मालपुवा पुडला पुवा स्वांखरा, फोरमा की फीकी माइ ॥ य० १२ ॥ खीर रायटया घामदी मासो, भीखड सिखरण मठाइ । क्य मांत का राईता चटणी, उपर श्रीका-रयाइ ॥ १३ ॥ दाल करी पड़ो शला पतोड़ी माफ ने माज्याइ । घणा नाम लिखतां ग्रण मे स्यघ ग्रंथ पड़ जाइ ॥ १४ ॥ परोसतां सो वेला लागे, खांता देर न कांइ । जे माजन त्रिम काज निपायो, ते सर्व गयो खाइ ॥ य० १५ ॥ वैश्वानर मुख घाम घृत जिम, सूर्य मिलगाई । तिम कुमर आगे खूटे मय मोजन देखत अचरज आई ॥ य० १६ ॥ लाशो २ जल्दी लाशो, एक सरीखी लगाइ । हजारां का मय जुदा २ मोजन, किया ते पण ठाइ ॥ य० १७ ॥ सर्व घर को रांघो खूट्यो, तब लाया जे सेरूपाइ । फुली फुटाणा धाणी मुरमुरा, मसू मुगफली चावरणाई ॥ य० १८ ॥ हय गय वैल ऊंटा को दाणो मेल्यो, ते खावे धाइ । मलता सो सब वस्तु दीसे, फिरतां न दीसे कांई ॥ य० १९ ॥ पण कासो धान गहू चणा, मोठ मूंग उडद चवलाइ । जे जे मेले ते ते खाव, बाकी न रहाय ॥ य० ॥ य० २१ ॥ ते पण खावे होश होद आव, ठावे ते मस्म थाइ । कोलाहल मच्यो चहू दिशां, ठाठ जम्यो आइ ॥ य० २२ ॥ यह काइ देव दानव छे मूवरो, खुसी नहीं थाइ । इम सुणी

कहे मदन तिवारे, सुण भामा माइ ॥ य० २३ ॥ तू कह्यो मैं पेट भर जीमासूं, झूठ पडी वाइ । स्रूमड़ी जरा लज्जा तज बैठी, और कांई दूंगा ल्याई ॥ य० २४ ॥ कृष्ण नार भानू की माता, उग्रसेन घर जाई । यह कृपणता किहां थी सीखी, मोटा घणो पाई ॥ य० २५ ॥ मोटा ते खोटा आज मिल्या मुझ, थोथा चणा जिम बाज्याइ । ए ओखाणो सत मैं परख्यो, क्यों शर्म गमाइ ॥ य० २६ ॥ न मैं धाप्यो न मैं उपवासी, अधबीच रह्याइ । विश्वास-घात तैं मोटो कीधो, मुझ पेट सिलगाइ ॥ य० २७ ॥ पहली थारा लक्षण देखी, जीमतो मैं नाइ । एक पेट पूरो नहीं भरीयो, घणो क्यां सूं थाइ ॥ य० २८ ॥ सोड देखिने पाय पसारणा, जदा होवे उघड़ाई । घर देखी ने पावणा नोतणा, ज्यों लज्जा राहाई ॥य० २९॥ ब्राह्मण सायर अग्नि तीन को, पार कोण पाइ । अन्न जल ईंधण पार कुण पाड़े, यह तूने सागे मिल्याई ॥ य० ३० ॥ घणी भूख से मुझ शुद्धि नांहीं, बोलूं इम करडाई । अब हां नां कहणो जो कहदे, तो आगे जाचूं जाई ॥ य० ३१ ॥ इत्यादि केइ बचन सुणाया, ढ़ाल नवमी मांई । विद्या जोर कोई उत्तर न देवे, अमोलक ऋषि गाई ॥ य० ३२ ॥

॥ दोहा ॥ भामा वाक्य यह सांभली, घणी गई मुरझाय । चिंता करे मन में घणीं, उत्तर कांई न देवाय ॥ १ ॥ एतले कुब्जा सुंदरी, जे कीधी प्रद्युम्नकुमार । ते आई भामा

कन आलसी नही तिणवार ॥ २ ॥ मामा पूछे तूं कोण छ, वे कहे कुब्जा मुझ नाम । लघू विप्र परमाद थी, सुन्दर होगई आम ॥ ३ ॥ अचरज पामी मामा थमो, हां हां विधा निधान । कुब्जा ने सुंन्दरी करी, मुझ मन करसी कान्ह ॥ ४ ॥ लज्जावती मामा तिणथी, करन मनोरथ सिद्ध । आई कने अवी हुलसी, भक्ती करे बहु विध ॥ ५ ॥

॥ ढाल १० मी ॥ (भुंडीरे भूख अभागणी ए देशी) मामा भोली ठगावी तदा, लालच लाग्यो अपार लालर । हाथ धरयो लघू विप्र को, कहे चालो महल मझार लालर ॥ मा० १ ॥ एकांत स्थानक दोईजणा, बैठ्या आणी हुलास लालरे । कर जोडी मधे मामनी, देव करो परकाश लालरे ॥ मा० २ ॥ तुम महा ज्ञानी महा गुणी, करामाती करो उपगार माउरे । सुख दुःख दूरो कीजिये, मैं भूख्य नही लगार लालरे ॥ मा० ३ ॥ जोशी कहे माता सुणो, मुझ सम त्रीजगमें नहीं मातरे । मंत्र जंत्र तंत्र औषधि जडी, कामणादी उपाय मातर ॥ मा० ४ ॥ जाणू माण्या सिद्धी हुया, देव देवी मुझ आधीन मातरे । इन्द्र चन्द्र नरेंद्र ने, आणूं वस तव क्षण मात रे ॥ मा० ५ ॥ धारूं तो पाताल धसुं, उडी आवूं आकाश मातजी । सज्जन की सहायता करूं, दुशमन को करूं नाश मातजी ॥ मा० ६ ॥ तुममक्ति गुण दखन, रीझो अती मुझ मन मातजी । थारे म्हारे बीचमें, अंतर नही मद

वचन मातजी ॥ भा० ७ ॥ जाणूं छूं बली ज्ञान थी, थाने शोक को दुःख मातजी। क्रुष्ण लुब्ध अन्यराणी थी, थारो नही जोवे मुख मातजी ॥ भा० ८ ॥ इम सुण भामा गहे गही, नयणा छूटा नीर लालरे। हां हां कर पग में पड़ी, हीयो न धरे धीर लालरे ॥ भा० ९ ॥ तुम ज्ञानी जाणो सभी, छानी न कोई बात लाल रे। तूं बालेश्वर माहिरो, प्यारो पिता पुत्र भ्रात लाल रे ॥ भा० १० ॥ तुम आधार छे मुझ भणी, करो दुःखणी की साहाय लाल रे। मुझ ने सुखी कीधा थकां, उपगार होसे अपार लाल रे ॥ भ० ११ ॥ माल ममानी साले छे अती कपटण मुझ शोक लाल रे। निश दिन शीश चड़ी वणी, मुझ जन्म जावे व्यर्थ लाल रे ॥ भा० १२ ॥ कपट कला थी रुक्मणी, हरी ने कीधो बस मांय लाल रे। झुरले म्हारो कालजो, अन्न न भावे न सुहाय लाल रे ॥ भा० १३ ॥ झुर २ मैं पिंजर हुई, बधे नही लोही मांस लाल रे। गोपाल बस करो माहिरे, ए दासी की अरदास लाल रे ॥ भा० १४ ॥ ठग ठगोंरे पाहुणों, ठगवा करे ठग उपाय लाल रे। दूध बीली बाघ बानरे रखवाल, तिम यह देखाव लाल रे ॥ भा० १५ ॥ दूजा को खोटो चिंतवे, तिणरो खोटो होय लाल रे। ते जो जो आगे सभी, खोटो मत करजो कोय लाल रे ॥ भा० १६ ॥ विबुध भणे सुणो राणी जी, यह तो सरल काम छे मात जी। थोड़ा कष्ट थी पामसो

चिंतित सुख अभिराम मात जी ॥ मा० १७ ॥ आदर होसी अती घणो, रुक्मणी पडसी पग आय मातजी। पण विधी कठिन छे मंत्र की, ते तुम से करी नहीं जाय मातजी ॥ मा० १८ ॥ मामा कहे करसूं सही, कहोगा सो प्रकार लाल रे। लाज सोच उर ना धरूं, पण पस करो भरतार लाल रे ॥ मा० १९ ॥ तुम हाथ लाज छे मुझ तणी, तुमचो मुझ आधार लाल र। तुम हुकम उलपू नहीं, तुम गति मति दातार लाल र ॥ मा० २० ॥ मदन कहे तो शीघ्र कीजिये, मूंड मुंडा मुख श्याम मातजी। हलका फाटा पत्र पहरिये, खरपमा नहीं पडे धाम मातजी ॥ मा० २१ ॥ ओं ह्रीं अरड परड स्वं सुड स्वाहा, यह मंत्र मात जी। अष्टोत्तर शत जाप थी, हरी होसी पस निरंतर मात जी ॥ मा० २२ ॥ इस्त्रामी सर मावसी, देसी थारो रूप मातजी। मघवाने दुर्लभ वासो, तो मामव को ये स्वरूप मात जी ॥ मा० २३ ॥ जे दुःख देखे ते सुखी, होय नाक चीराई गुरुसाय मात जी। आभूषण यह अंग सजे तो, मार भूत गमाय मात जी ॥ मा० २४ ॥ केश गया पाछा मावस, श्याम पणो थोमा हुवे दूर मास जी। देव प्रसादे सब सिद्ध होमी रूप घणा गहणा भरपूर मास जी ॥ मा० २५ ॥ सुण मामा हुई उतावली, सवासण ने बुलाय लाल रे। सिर उघाडी बैठी सामने, नायण अपरज पाय लाल रे ॥ मा० २६ ॥ ते कैंची चलावे

नहीं, नरेंद्र को डर धार लाल रे। जबरदस्ती तब भामा जी, उतराया सिरका बाल लाल रे ॥ भा० २७ ॥ तेल काजल भेलो करी, मूंडो कालो कीध लाल रे। गधेड़ा ना लींडा तणी, माला कर में दीध लाल रे ॥ भा० २८ ॥ फाटा मैला लूगड़ा तणी, कछोट बांध्यो कस लाल रे। पद्मासण लगायने जाप जपे, कंत करण बस लाल रे ॥ भा० २९ ॥ रणकार लगायो मत्र को, मदन कहे तब एम लाल रे। जांऊं कोइ कारण भणी, पाछो आसूं देखी खेम लाल रे ॥ भा० ३० ॥ भोली भामा ने भरमाय ने, प्रद्युम्न आगे जाय लाल रे। ढ़ाल दशमी तीजे हुलास की, ऋषि अमोलक गाय लाल रे ॥ भा० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ हिवे रुक्मणी तिण अवसरे, नारद वचन संभार। करांगुली पे मोजता, पूरा वर्ष तिवार ॥ १ ॥ सोला वर्ष वीती गया, सेनाणी मिली सब। तिन कारण जाणूं सही, नंदन आवेगा अब ॥ २ ॥ सपूत पुत्र सुसजन की, किण ने न होवे चाय। तो एतो सगी मायड़ी, इण को कहणो कांय ॥ ३ ॥ एका एकी पुत्र को, लघु पणे हुयो वियोग। गौकण से जीतण भणी, नंदन को मिलसे संजोग ॥ ४ ॥ एकांत स्थानक बैठने ध्यावे मनोरथ माल। ते सुण जो श्रोता सभी, एक चित हुई उजमाल ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ११ मी ॥ (सखीयां पणिया भरण कैसे जाणा–ए देशी) अब आवेगा लाल

हमारा, तुम प्राण थकी छे प्यारा ॥ टेक ॥ वियोग में सोले भरस बीता, सदा करती पुत्र की चिंता जी, अब मोग लगा सुम सारा ॥ अ० १ ॥ गाय चरणे वन में जावे खाती पीती बच्छो मन भावे जी, आवे मात मिलण संचारा ॥ अ० २ ॥ कजली वन चाव दंती, पिक सहकार जपती जी, चकवी सुमरे दिन कारा ॥ अ० ३ ॥ मान सरोवर हंसा मधुकर पुष्प सुवासा जी, पपइयो स्वाति जलधारा ॥ अ० ४ ॥ क्षुधित अन्न अभु चाहे प्यासा, रोगी औषध घावरयो दिलासा जी, जिम विरहणी जपे भरतारा ॥ अ० ५ ॥ इम लगन सुत पे लागी, अब मिलसी प्यारो सोभागी जी, पूरसी मनोरथ म्हारा ॥ अ० ६ ॥ वायुर अलके भमावे, ससी चर्म रूपी होजावे जी, परस मेघ बीसे वरधारा ॥ अ० ७ ॥ विम रूकमणी ने हर्ष भायो, श्रीमंदिर स्वामी फरमायो जी, सो मेला आई सुख कारा ॥ अ० ८ ॥ आओ सखीयां मंगल गावो, घर लीपो छाबो धुलावो जी, सजाओ साजा विविध प्रकारा ॥ अ० ९ ॥ पंच वर्ण कुसुम बिछावो, घना जान का धूप लगावो जी, रस्सो रची रूप मंगलाचारा ॥ अ० १० ॥ मोतीयों से चौक पूरावो, हीरा पन्ना का मांडणा मडावो जी, मेळो रत्न होसे ज्यों उजीयारा ॥ अ० ११ ॥ कुंकुम घन सार कचोली, मुक्ता फल अक्षत रोली जी, बाल भरावो मत लगावो वारा ॥ अ० १२ ॥ सुहागण सिण

गार सजावो, खोले बाल सिर तिलक लगावो जी, भरो घट मधू दधी पूर्ण सारा ॥ अ०-१३ ॥ दिस आरती हाथे लीजे, मुझ नंद बधावा कीजे जी, वली प्रज्वलित करो अग्नि ज्वाला ॥अ० १४॥ लंगड़ा आंधा भैंस विधवा नकटा, इण ने एकांत देवो अटका जी, छींको खांसो कूको मत लगारा ॥ अ० १५ ॥ हय गय रथ पायक सजावो, मुझ तनुज के सामे जावो जी, किती दूर सो लावो समाचारा ॥ अ० १६ ॥ सब शुभ को संग्रह कीजे, जे अशुभ ते सब तज दीजे जी, कीजे सब जुदा २ सुधारा ॥ अ० १७ ॥ हंस गती ये घूमंतो आसे, रवी चन्द ज्यूं आनन दीपासे जी, बोल से मधुर अमीधारा ॥ अ० १८ ॥ झट खोला मांही लेसूं, चुंबन सो वारे देसूं जी, देखसूं चंद्र ज्यूं दुतीयारा ॥ अ० १९ ॥ मुझ बीती बात सब केसूं, तिणरी हकीगत सुण लेसूं जी, देसूं वस्त्र गहणा उत्तम रतारा ॥अ० २०॥ इम मनोरथ माला गूंथी, यह प्रकाशी जे हूंती जी, ढाल ग्यारवीं अमोल उचारा ॥अ०२१॥

॥ हरी गीत छंद ॥ श्री प्रद्युम्न कुमार, भानू सिरदार, ने दादा ने हराविया । वावी सुखाय, व्यापारी त्रसाय, बजार वेवाय, द्विज लड़ाविया । कुब्जा करी सुरूप भामा कुरूप-अन्न बहू खूटाविया । रुक्मणी ने उपनी आश, मदन पुराश, अमोल जणाविया ॥ १ ॥

इति पुण्य कल्पद्रुमे कौतुक कारकः तृतीय· स्कध समाप्तः । अस्मिन् हुलासे ढाल ११ दोहा ६५ ॥

॥ दोहा ॥ जिन देव अग देव धर्म देवजी, केवली भाषित चार। प्रही प्रणमूं सद्बुधि दो, चौथो खंड करूं उद्धार ॥ १ ॥ श्री प्रद्युम्न कुमार जी, भात रिझावण काम। चरित्र करे अचरज भरे, सुण जो चित धर ठाम ॥ २ ॥ मामा भवन थी मदन जी, आइ आगे पेसंत। इंद्र भवन सम दीपतो महल मनोहर शोभंत ॥ ३ ॥ विद्या माखे ईश जी, यह तुम सगी माता गेह। पूरो इच्छा जननी की, बधावो अधिको नेह ॥ ४ ॥ पूछे कुमर सुख मातनो, किण ऊपर घणो हेत। सा कहे भमण उपासिका साधू भक्ती इच्छित दान देत ॥ ५ ॥ इम सुण तब धारण कियो, बालक साधू भेष। छोटी पछेडी चोल पटो, मुंह पत्ती शोभे विशेष ॥ ६ ॥ रखो हरण लघू कांख में, रंगीन पात्रा झोली मांय। सांथे कांपली बहु मोली, ईया शोधत जाय ॥ ७ ॥ रूप मनोहर सुर समो, चाल गज गती चलंत। ठोक छुठ २ वदना करें, आप मधुर वचन उच्चरंत ॥ ८ ॥ दर्श देखण भाव्जी तणा, कियो भवन प्रवेश। देख मूर्ति जननी तणी, आनंद पायो विशेष ॥ ९ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ (तू सुण जीवडा कर्मन की गत अपरंपार है—ए देशी) रुक्मणी हरखावे

जी, बालक साधू का दर्शन पायने। आनंद अती पावे जी, मोह उमड़े देखी मुनीराय ने ॥ टेक ॥ सन्मुख दीठो आव तो सरे, लघु साधू गुण खाण। झट उठ आई सन्मुखे सरे, वंदणा करी हित आण। धन्य भाग्य आज माहिरासरे–दर्शन दिया भगवानरे ॥ रु० १ ॥ थाकी आया छो गाम बाहर थी, पाटलो पोसाल मांहे लायने सरे, कहे विराजो पूज्य। लाउं हूंज। रुक्मणी मेल्यो पाटलोसरे–तब मुनिवर पग पूंज रे ॥ रु० २ ॥ श्री हरी के आसणे सरे, बेठा मुनिजी आय। फिरने देखे–रुक्मणी सरे, अचरज पामी तदाय। विनय करीने इम भणे सरे–सुणो साधूजी वायरे ॥ रु० ३ ॥ ए सिंहासण देवाधिष्टित, बैठे श्री हरी राय। के बैठे हरी जी से जायो, दूजा से नहीं बेठाय। अकड़ाई थी बेठतां सरे–कांइक दुःख तिण ने थाय रे ॥ रु० ४ ॥ ऋषिवर कहे सुण श्राविका सरे, मनां करे किण काम। ते स्थान पवित्र जाणीयो सरे, जहां मुनिवर लें विश्राम। शक्ती होसे सोइ बेठसे सरे–मन में धारी हामरे ॥ रु० ५ ॥ तप लब्धी पर भाव सूं सरे, देवेंद्र पण कंपाय। अरी हरी करी तप जोर थी सरे, करे न दुःख उपाय। जे मंत्र ने जाणसे सरे, तेहीज सांप खेलाय रे ॥रु०६॥ कर जोड़ी कहे रुक्मणी जी, स्वामी खमजो मुझ अपराध। छो गुणवंता महा-तपस्वी, खंती चित्त समाध। पण इण बालक वय विषे रे, किम थया आप साधरे ॥रु०७॥

निर्ग्रंथ कहे बाई सुणो सर, पृथ्वीपति मुझ तात। प्रत्यक्ष छे मुझ मायडी सरे, मही खंड पुरे ज भात। अमताही वैरागी थयो मैं सरे, तत्क्षण सज्जन छिटकात रे ॥ रु० ८ ॥ गुरु दर्शन नहीं अज् हुवा छे मुझ स्वतः दीक्षाली घर हाम। सोला वर्ष को पारणो सरे, शाम करवा आयो ग्राम। साच कहूं मुझ आज पहली सरे–मात था न हराम रे ॥रु०९॥ रुक्मणी कहे महाराज जी सर, यह अचरज छे अथाग। उत्कृष्ट तप करसी तणो सरे, फर मायो वीतराग। सोला वर्ष आप भूख थकी सरे–आज सुण्या महा भाग रे ॥ रु० १० ॥ साधू को निज भूख थकी सरे, बड़ाई घणी न होय। निश्चय मैं जन्म्या पीछे सरे, माँ दूध नहीं पीधोय। ज्यादा किंय पिंय नहीं कीजिये सरे–भूख लागी छे मोय रे ॥ रु० ११ ॥ तुं छे साधी भाविका सरे, प्रदेसे सुण्या मलाप। देव गुरु धर्म रागणी सरे, मीठी बोले वाण। क्षत्य वटी पाप हूं डरती स तू सरे–घणा गुणों की खाण र ॥ रु० १२ ॥ स्नेह घणी लज्जा घणी सरे, तुज दया घणी दिल मांय। सम माती सम दर्शणी स तू, शुद्ध स्व भावी नाय। गुण माही गुण रागणी सरे–गुणवंत सेवा चाय रे ॥ रु० १३ ॥ दृढ धर्मी प्रिय धर्मी स तूं, उभय कुले विशुद्ध। धर्म धुरंधर धर्म आत्मा, मली शास्त्र मांहे बुद्ध। नमणी खमणी संत मन गमणी–पर अहित सेती विरुद्ध रे ॥ रु० १४ ॥ साधर्मी की माथवे छे

तूं, तन मन धन थी सेव। साधू साध्वी ने देवे छे तूं, पुत्र जिम नित्य मेव। दान दिया विन आखडी सरे, जिमण री तुझ छे वरे ॥ रु० १५ ॥ इत्यादि गुण सांभली मरे, छोडतो बहू गाम। सोला वर्ष को पारणो सरे, करवा आयो आम। धर्म स्नेह जाग्यो तुझ परे स महारो, जाणी गुण अभीराम रे ॥ रु० १६ ॥ सार न पूछी एतली मरे, वहरो स्वामी आहार। सुख साता पूछी नहीं सरे, न बेठायो सुख मझार। अंतराय मुझ कर्मनी स तूं, तिण थी पडी विसार रे ॥ रु० १७ ॥ रुक्मणी कर जोड़ी भणे सरे, पूज्य सुणो अरदास। आज पडी मैं विचार में सरे, छे मुझ चित्त उदास। खावण पीवण वीसरी म मैं, करूं एक सरिखी वीमास रे ॥ रु० १८ ॥ त्रीखंड नायक तुम पती सरे, जादव सो परवार। सर्व मांहे तूं माननी स बाई, भाग्यवती छे अपार। एसी चिंता कांइ तुझ भणी स तूं-विसर गई सब सार हो ॥ रु० १९ ॥ सा कहे स्वामी सांभलो मरे, पुत्र आगम बोला एह। श्री जिनेश्वर फरमावीयो सरे, सेनाणी मिली तेह। जेह देखी मुझ मन मे सरे-जागे घणो स्नेह हो ॥ रु० २० ॥ सूखा वृक्ष तो फल गया सरे, गूंगा बोल्या वाय। अंध नेत्र बहरा सुणे सरे, सूखे सरे जल आय। कोयल मोर पपैया सरे-बोले अति हरखाय हो ॥रु०२१॥ विन ऋतु फूली वाड़िया सरे, फल्या तरु आयो रस। भमरा गुंजारव करें सरे, सब जग

न हूवो रुप । मुझ मन अती उमाहियो सर, पानो आयो ठग कस हो ॥ रु० २२ ॥ अजू नहीं आयो नानडो मर, ए चिंता भरपूर । वनुष विना वस नहीं स झस, स्तान पान घर मूर । रूप नदन मुझ मेटनेमरे, विरह दुःख करसी दूर हो ॥ रु० २३ ॥ साधू कहे निज पत्तन में सर, ढुका नहीं लगार । उतावल किम कीजिय सर पहर घडी ने मंझार । मि लमी पुत्र तुझ आयने मर–मनमें संतोस धार हो ॥ रु० २४ ॥ संतोषे सुख सपजे स धाई, धीरज धरी यह बात । चौथा खडकी प्रथम ढाल ए, ऋषि अमोलक गात । धम शरीरी पुण्यवंतो मरे–माझी न कौतुक घतात हो ॥ रु० २५ ॥

॥ दोहा ॥ नयण वयण थी मयण ए, मिलीया प्रत्यक्ष आय । मन तन थी परोक्ष छे, मिलीया केम जमाय ॥ १ ॥ रुकमणी कहे अहो मुनिवर, धीरज रहवे नाय । जो नानडियो अमी न मिले, तो इज्जत जासी अमाय ॥ २ ॥ ऋषि कहे अहो धाई थे, कही अचरज की बात । अनोखी हूं तुम नानडयो, जे तुम इज्जत रखात ॥ ३ ॥ कारण छ महाराय जी, इम मोका पाही होय । विण सुत पहली परण सी या मांमे सोक सोय ॥ ४ ॥ रुमे मुझ मद्रन हुवे, यह मुझ चिंता समाय । जो पहली मिले माहरो, तो पूरूं इच्छा परमाय ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाळ २ जी ॥ (हूंरे अनाथी निग्रंथ–ए देशी) प्रद्युम्न राय, माय ने कौतुके रिझाय ॥ टेक ॥ साधू कहे रे बाई, केशकी चिंता किसी मन मांय। काट्यां थका तो पाछा उगें, वधें पहली थी सवाय ॥ प्र० १ ॥ मुझने तुझ बचन सांभली बाई, चिंता उपनी अथाग। मोटी पुण्यवंती श्राविका ने, कांई हुयो दूभाग ॥ प्र० २ ॥ प्राण कुशल तो सब कुछ बाई, प्राण हाणी थी सब हाण। तुच्छ चिंता केशकी छोड़, मान हमारी बाण ॥ प्र० ३ ॥ रुक्मणी कहे इम किम बोलो स्वामी, उत्तम को लज्जा सिणगार। लज्जा गइ तो सब गई फिर, जीणो छे धिकार ॥ प्र० ४ ॥ पूछणो तो नहीं आप से स्वामी, पाप शास्त्र की वात। पण मैं हुइ मोह आंधली, मुझ थी पूछया बिन न रहात ॥ प्र० ५ ॥ कब मिलसी लाल म्हारो मुझ सों, जाणो तो दो फरमाय। धीरज धारूं म्हारा मनमें, दूजी शुद्ध मुझ आय ॥ प्र० ६ ॥ खाली हाथे पूछवा थी बाई, प्रश्न निरफल होय। तिण थी पहली मेल भेटणो सामे, फिर कहसूं ज्ञाने जोय ॥ प्र० ७ ॥ फरमावो सो आपूं आपने, पूज्य मुझ घर कमी नहीं कांय। मुनि कहे फासुक आहार की बाई, हिवड़ा घणी छे चाय ॥ प्र० ८ ॥ धन फळ फूलतो साधूने बाई, कलपे नही लगार। जाणती कांइ तूं पूछे मुझने, पारणो दे झट मत ला बार ॥ प्र० ९ ॥ धांधली होय रूकमणी जब, जोवे घरमें जाय। विद्याना प्रभाव

धी मदन मथ म्हाहम दियो छीपाय ॥ प्र० १० ॥ फक्त राख्या कृष्ण खीमण का, भी केसरिया मोदक मार । जोवे गमी मिष्टान्न माजन, तिण में न खेंरो लगार ॥ प्र० ११ ॥ मेवा की हांडी खाली देखी, कृष्णांगना घबराय । कांई कहसी गुरु ए मुझने, मोटा ते घोखा थमाय ॥ प्र० १२ ॥ सेठो कहे माई घबरावे मत, धीरप धरने सोय । शीघ्र लाई यह रखो मुझने, सुखतो जे घर में होय ॥ प्र० १३ ॥ श्री कृष्ण खीमण का मोदक, गरिष्ठ अती घबराय । बाल तपस्वी ने किम पचसी, राखी ने खीमासण थाय ॥ प्र० १४ ॥ काठो मन कर मोदक पात्र से, एक लाडू उठाई लाय । ऋषि देखी कहे तिषने अहो, पुण्यात्मा इम करे कांय ॥ प्र० १५ ॥ मोटा घर में ऊपनी तूं, मोटा की पटनार । कृपणता किम थारा हाथ में अचरज यह मुझ अपार ॥ प्र० १६ ॥ सा कहे पूज्य ये लाडू दुष्पच, आसो आप सूं न खवाय । क्षुधा समावण कारणे आप, चौथायो लेवो खाय ॥ प्र० १७ ॥ श्री हरीजी पधावे इम ने, सो खावे नित्य एक । ज्यादा मोगव्या थी स्वामी जी, पीड़ा होवे अनेक ॥ प्र० १८ ॥ आपकी वय बाल छे बली, तपस्या को छे शरीर । रखे ऋषी हत्या लागे मुझने के कोई होवे पीर ॥ प्र० १९ ॥ इम डर छे मुझ मन में प्रभू, तिण थी लीयो एक हाथ । आप थी कांई अधिक मुझ न, कृपणता की नहीं बात ॥ प्र० २० ॥ किंचित

डरे मत श्राविका तूं, सब दे मुझ वेहराय। तप लब्धी पर भाव थी मुझने, किंचित पीड़ा नहीं थाय ॥प्र० २१॥ हला हल विष ताल पुट भी, ते तप थी भस्म होय। तो इण लाड्ड को किस्यो कहणों, चिंता करे मत कोय॥ प्र० २२॥ डरती सरमाती सब वेहराया, कुमर गया सब खाय। खीर तणी परे पचगया ते, तत्क्षण डकार आय ॥ प्र० २३॥ रुक्मणी अती आश्चर्य पामी, दीखे साचो तप। महा पराक्रमी केसरया मोदक, क्षण भर में गया खप ॥प्र० २४॥ दूजी ढ़ाल मैं माता ने विस्मायी, श्री प्रद्युम्न कुमार। आगे पण अचरज घणो ते, कहे अमोलक अणगार ॥ प्र० २५॥

॥ दोहा ॥ हवे भामा भोली भामनी, जाप जप्यो अठसत वार। रूप सुंदर कुछ नहीं हुयो, फिर करे मंत्र उचार ॥ १ ॥ वाट जोवे लघू विप्र की, माला जपी दो चार। ते न आयो न रूप पलट्यो, दगो जाण्यो ते वार ॥ २ ॥ घस्को पड़्यो छाती में, चिंता को आयो पूर। नवो रूप लेवण गई, छतो गमायो नूर ॥ ३ ॥ भक्ष्य दादुर को लेववा, गई मांजर कूप पर। दादुर हाथ आयो नहीं, गइ कूवा में पड़ ॥ ४ ॥ तिम भामा भोली भामनी, मुख ढांकी घणी पछताय। हाथ घसे हीयो कूटे, हिवे रोयां सूं थाय ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ३ जी ॥ (घुड़ला गज घेंवर पाखर रत्न जड़ाव—ए देशी) तब भामा राणी,

उगायी मनमें जाम । रुदन करे अती, पूकारे गलो ताण ॥ १ ॥ ते शब्द सुणी ने, दोडी आयो परवार । दास दासी को घट, अने वली भानू कुमार ॥ २ ॥ कर पकडी मां को, उघाडी जोय मुख । सिर मुंडित श्याम मूंह, दखी ने व्यापो दुःख ॥ ३ ॥ बहु विष सम भावी, रोती राखी मात । पूछे कर जोडी, ए अचरज की बात ॥ ४ ॥ श्याम मुख कुण कीयो, लीया कुण तुम बाल । क्यों श्रृंगार छोडी अपे, सरलीका की माल ॥ ५ ॥ घणा लोक दखने, हांसी न माय तन । पण मोटा माणी, रोकी राख्यो मन ॥ ६ ॥ मामा रोती रहे, कहे सुण प्यारा पूत । बाल विप्रने रूपे ठग गयो मुझ धूत ॥ ७ ॥ बहु स्वार लगाई स्वाही, उतारी मुख मोय । घणा वस्त्र गहणा, पहरी ने मज होय ॥ ८ ॥ पण केश गया ते, तत्क्षण आवे नाय । ए सोच लाग्यो मोटो, घर हासी जन हांस थाय ॥ ९ ॥ अमरस अती आणी, राणी मामा ते वार । कहे रुक्मणी खोटी, मोटी धूर्त कलाधार ॥ १० ॥ तिण होड पूरण ने, पूरण किपो मुझ मान । केश पहली कपाया, काळो मूंह करयो धर गुमान ॥ ११ ॥ अब तस बाल कपावूं, पावू जगमें जस । तो सतभामा बाजूं, ताजूं नहीं तो पूरकम ॥ १२ ॥ इम बीमासी दासी, खासी लई बुलाय । कहे शीघ्र थ आवो, लावो रुक्म णी बाल कराव ॥ १३ ॥ ते हुकम का चाकर, ठाकर कहे सो प्रमाण । ले पास भाजन,

साजन संग कियो प्रयाण ॥१४॥ बहुबाजा बाजंता, गाजंता गीत गाय । रुक्मणी घर पासी, दासी
झुंड तब आय ॥ १५ ॥ कृष्ण वल्लभा निरखी, परखी चित्त मझार । ए भामा की रामा
कामा, आई पूर्ण मंभार ॥ १६ ॥ नेणा नीर ढलीयो, टलीयो हर्ष हुयो सोग । जे में नित
चती ते, आमिल्यो यह जोग ॥ १७ ॥ मदन जी देखी, पेखी माता उदास । पूछे चटक
लाई चाई, चिंता दे प्रकाश ॥ १८ ॥ रुक्मणी हो उदासी, प्रकासी रात कर जोड़ । में कही
आपने पहली सेती, आई ते पूर्ण होड ॥१९॥ मुझ लाज ए हरसी, करसी जग में बदनाम ।
ए संकट अतिही भारी, कारी न इण ने स्वाम ॥ २० ॥ नारद की वाणी, इण टाणी खोटी
थाय । घणा दिनकी आश, निराश कर्म संताय ॥ २१ ॥ तब कहे मदन विखवाद छोड़
कहूं उपाय । तूं घर मांई छीपाई, बेठ किण ठाय ॥ २२ ॥ देखूं किम केश लेवे, सेवे तू
म्हारा पाय । मुझने पुत्र सरीखो, परखो इण वेला मांय ॥ २३ ॥ करगमान देखाई, पाई
इणरो मान । तो मुझ साचो, राचो माथू जाण ॥ २४ ॥ इम समझाई छिपाई, रुक्मणी
घर मांय । आप विद्या प्रभावे, ठावे रुक्मणी थाय ॥ २५ ॥ गई तिण पासी, पासी हर्ष
कहे एम । वाई भले पधारो, छे तुम स्वामी ने खेम ॥ २६ ॥ विछायत बीछाई, बेठाइ
ढाल तीजी मांय । सुखदाई नरमाई गाई, अमोल चित लाय ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥ मदन रुक्मणी रूप थी, पूछे वली नरमाय। किम कारन गृह पावन करयो, इच्छा दो फरमाय ॥ १ ॥ उदास हुई दासी तदा, बहे नयने नीर साय। कुवचन मुख थी उचारतां, मों हम जीभ खिरजाय ॥ २ ॥ पराधीन पणो खोटो घणो, पेट काज करणो जेह। स्वामिनी हुकमे आवीया, होव पूरण ने तेह ॥ ३ ॥ समझो अपराध हमारो, नीकली खोटी जुबान। बस नहीं कुछ हमारको, तुम्हारो हुक्म प्रमान ॥ ४ ॥ हमार आप दोई सारखा, मरजी सो दो फरमाय। जावां फिरी निज स्थान कू, सब मामाजी ने दस्वां जणाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ (धनरा रे छोगी बाणीया—ए देशी) चिते जैसो फल पावे, रूडा को रूडो होवेरे। कौतुक ख्याल कूडा तणो मोटा हरखी जोय रे ॥ चि० १ ॥ रुक्मणी रूप धरे हरखाय ने, बाई फिकर नहीं कीजे जी। मैं हारी जीती मामा जी, मुझ ने शिक्षा दीजे जी ॥ चि० २ ॥ मैं छू बाई अभागणी, म्हारो नन्दन नहीं आयो जी। मामा जी पुण्यवत छे, मले होतो तिणरो पायोजी ॥ चि० ३ ॥ सिर उघाड बैठी सामने, करो फर मायो कामोजी। देर जरा नहीं कीजिये मैं सामे बैठी सुखी पामो जी ॥ चि० ४ ॥ इम सुण वचन रुक्मणी का, अचरज अती मन लाईजी। मन में हुए काम सिद्ध होवे, ऊपर

उदासी बताई जी ॥ चि० ५ ॥ मुखमली जरी जरतार को, कपड़ो सामे वीछायो जी। उस्तरा डंडी रत्न की, ते पण साफ करायो जी ॥ चि० ६ ॥ कनक कचोली में भर्यो, गंगोदक सुख कारी जी, खवासण बैठी सामने, मस्तक मूंडण धारी जी ॥ चि० ७ ॥ कुंकुम केशर दधी अक्षते, मस्तक पूजा पहली कीधी जी । विघ्न न होवो दंपती ने, मंगलाचार की विधी जी ॥ चि० ८ ॥ शस्त्र चलायो केशपे, मदन विद्या ने सुमरीजी । ते जाणे मैं मस्तक सफा करूं, तिणने न रही गम रीजी ॥ चि० ९ ॥ तिण कपावे तिण थकी, वेणी नाक अने कानो जी । कर पग आंगली छेदावई, तिणरो नहीं तिणने ज्ञानो जी ॥ चि० १० ॥ ते तो बाल भेला करी, मणि भाजन के मांईजी । भरी चाली निज घर भणी, सनमानी ने पोंहचाई जी ॥ चि० ११ ॥ अती हर्ष तिणरा मन में, रुक्मणी ने ते बखाणो जी। धन २ ऐसी नार ने, सकल गुणारी खाणो जी ॥ चि० १२ ॥ रूप तो अपछरा सरीखो, बोली अमृत समाणी जी । नरम प्रकृती माखण जिसी, विचक्षण घणी स्याणी जी ॥ चि० १३ ॥ बीजी होती तो रोवती, केइ गाली देती जी । इण केश दिया हंसी खुशी, भक्ति करी वली केती जी ॥ चि० १४ ॥ इसी गुणवंती थकी, क्योंनी मोहवे जादूनाथो जी । भामा कटू बोली करडी छे, किम करे तेनो माथो जी ॥ चि० १५ ॥ इम गुण

पना करती मका, पाविमने शव कारे जी। पाली मामा घर मणी, करती गीत उचारो जी ॥ चि० ६१ ॥ रस्ता मांही ठोक पणा, हंसे तिण ने ओई जी। माया मम ना मूरीपा, मन विमना किम होई जी ॥ चि० १७ ॥ पली नाक आंगुली, फोण हमारी काटीजी। हम समासो जोश न, छोकरी हुइ गटी जी ॥ चि० १८ ॥ हंस हंसावें अवी घणा, आंगुली से रूप पतावे जी। किलोल मच्यो बजार में, परमोग किण ने न मावे जी ॥ चि० १९ ॥ ते दास्या चिंते मन में, आपणो रूप अपारो जी। पली गावें उत्तम रागे तिण थी ए जम्यो परवारो जी ॥ चि० २० ॥ परसंसे आपना रूप न, इस छे सुणी ने गामो जी। अंगुली मुख न दाखें मली, हम सब रही जामो जी ॥ चि० २१ ॥ आई मामा जी पासे, कर रुक्मणी की मडाई जी। पदमी तिण सारखी, बीजी नहीं जग मांई जी ॥ चि० २२ ॥ हंमी खुशी थी हम मणी, दीधा केश उतकाली जी। माजन हाक्यो तिण साम परयो, खुशी हुइ मन वालो जी ॥ चि० २३ ॥ मंग हीणी देखी तेहने मामा अचरज पाई जी। ढाल चौथी अर्थमानी, अस अमोलक गाई जी ॥ चि० ४२ ॥

॥ दोहा ॥ मामा पात्र उघाड के, जोवे सो नहीं केश। क्रोध अग्नि भड़की अंग में, जाग्यो अतिही क्लेश ॥ १ ॥ रे रे निलज चेटिका, किधो कश इण मांय। लांब स्यार थे

लोभ वस, रुक्मणी पास थी जाय ॥ २ ॥ लूण हरामी थे हुइ, इण में संशय नाय । थे प्रसंमी तिण भणी, जदी समझी मन मांय ॥ ३ ॥ ते तो चोकस करसूं पाछे, फोड़ा सूं थारी खाल । पण यह अचरज मुझ भणी, कोण कीधा तुम ए हाल ॥ ४ ॥ कोणे काट्या नाक कान तुम, कुण लीधा वेणी बाल । कुकर्म यह माथे कांई करया, तिण थी हुवा यह हवाल ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ५ मी ॥ (चारित्र सूं चित चलगयो–ए देशी) चमत्कार सब ने हुयो, पाम्या विस्मय हो दास्या को देख रूप । एकली इण रुक्मणी किम, कीधो हो यह सबनो सरूप ॥ च० १ ॥ दास्या सुणी भामा वचन ने, चमकी हो अती मन के मांय । तत्क्षण भड़की वेदना, जोवे हो ते दृष्टी लगाय ॥ च० २ ॥ सरमाइ अती मन में, वस्त्र सूं हो ढ़ाक्यो निज तन । उठी जावा निज घर भणी, सिलगी हो अंग मांहे अगन ॥ च० ३ ॥ भामा कहे जावो मती, वेठो हो जरा मन में लावो ठाम । विचक्षण अंग माठी दशा, कुण कीधी हो केवो तिणरो नाम ॥ च० ४ ॥ ते कहे शाणी रुक्मणी, न करे हो कभी ऐसो काम । कुण जाणे किम यह हुयो, किम कीजे हो बीजाने बदनाम ॥ च० ५ ॥ सेवकना अपमान थी, स्वामी ने होवे ते दुःख । ते अपमान मालिक को, इम छे हो राजनीति को मुख ॥ च० ६ ॥

मम की चोड मामनी धूतारी हो घणी रुक्मणी नार। गिरधारी बस में करयो, मे कोई
हो मिलीया छ एक सार । घ० ७ ॥ बुलायो निज प्रधान ने, कहसे हो मांई देखो मद
म्याळ। होड की खोड मांगी रुमणी घोर जे हो दंडे कोटवाळ ॥ घ० ८ ॥ वेणी देणी
त गो नहि दीनी, ठीघी हो उलटी हम तणी लाज। काप्या अग लीधा चोटला, जन हांसी
हो ए घणों मकाश ॥ घ० ९ ॥ लेजावो थाने समा मध्ये, हरी हलधरने हो मवावो कहो
हाळ। कनी धूतारी रुक्मणी, जादू मश ने हो रही उजमाल ॥ घ० १० ॥ प्रधान सब
दास्या मधी ऊमी कीधी हो कचेरी में लाय। दसी रूप सब मभा जन, पेट में हो हांसी
न समाय ॥ ११ ॥ नर नाथ पूछे मंत्री ने, कुण छेरा हो थाना अगोपांग वाळ। किणरी
छे ये दासीया, ते घेटी होरही नीचो माल ॥ घ० १२ ॥ सचिव कहे दास्या मामा जी
की, मेजी छे हो तिण आपर पास। रुक्मणी जी ए हाल करया, तिण तणी हो प्रभू कीजे
वलाम ॥ घ० १३ ॥ हरी सुण अचरज पामिया, हांसी हो अग में न समाय। वाली
बजाय इम कहे, जैसा स्वामी हो वैसा दास थाय ॥ घ० १४ ॥ कृष्ण ने हसतो देखने,
सीजी हो मामा कचेरी में आय। कपटी गवालिया क्यों मद चढ्यो, लगावे हो मम तन
में लाय ॥ घ० १५ ॥ कहो रुक्मणी सीमना, दीनाजे हो मम बलदी कश। नहीं तो दसो

इण थकी, वध से हो अती घणो क्लेश ॥ च० १६ ॥ भामानो भद्रज देखी, मुरारी ने हो आयो दूणो हांस । बोल्यो पण जावे नहीं, तिम २ भामा ने ही उपजे दूणी त्रास ॥ च० १७ ॥ रे कानड़्या मैं अब समझी, ए छे हो सब थारा काम । हलधर जी महाई म्हारा, ते पाड़सी हो सब तुमरी माम ॥ च० १८ ॥ बलभद्र सूं भामा कहे, तुम छो हो पुरुषोत्तम महाराज । थारे साखे मेरी होड की, किम होवे हो थां दखंता अकाज ॥ च० १९ ॥ ओलंभो श्री रामजी, देवें हो कानजीने तेवार । माथे चड़ाई घणी नार ने, तो बाजसीहो जग मांहे गॅवार ॥ च० २० ॥ कृष्ण कहे दादा मुझ भणी, इण बातरी हो खबर किंचित नाय । सोगन खावूं कहो जीका, उलटो अचरज हो मुझने अती आय ॥ च० २१ ॥ ते छे आपज एकली, इणने हो छे बहू परवार । किम मुंडित हुई सब जणी, देखो आपी जहो आप मन में बिचार ॥ च० २२ ॥ भामा ने बलभद्रजी, दिलासा हो दीधी भरपूर । रुक्मणी नो मैं गाल सूं, इण वेला हो तस मद को पूर ॥ च० २३ ॥ शुभट भेजी लुटाव सूं, तस घरनो हो मार सार सब माल । थे पधारो निज घरे पाछा, केवासूं हो बीत्या जे हाल ॥ च० २४ ॥ भामा जी निज घर गई, बलभद्रजी हो करी सुभट तय्यार । भेज्यो रुक्मणी घर भणी, अमोलक हो कही पांचवी ढाल ॥ च० २५ ॥

॥ दोहा ॥ हवे मदन कुमर मन रग धई, मामानी हामी पहोंचाय । रूप पहली को पणाय न, मग्न विषामन आय ॥ १ ॥ रुकमणी अचरज देखने, चिंते एह मन माय । स्र कर यह नवा नवा, कारण कांई न जणाय ॥ २ ॥ माघू तो यह छे नहीं, होसी म्हारो नेद । विपाधर मोही वस्यो, मीख्यो मंत्र कला स्वच्छंद ॥ ३ ॥ हेज घणेरो ऊमडे, पयोधर पय आय । तन मन लागे मीठडो, मुरत घणी सुहाय ॥ ४ ॥ लखम व्यंजन प्रमाण छै, परीत भूत कुमार । टक लगा रुम्वी रही, मन में करे विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ (वधव बोल मानो हो-दशी) माता मुख फिरयो देखने, हरख्यो काम कुमारो हो ओ रमणी मुझने मातजी, एम करे विचारो हो ॥ १ ॥ रुकमणी अती हरमाई हो ॥ टेक ॥ माता मनोरथ पूरवा, हवे प्रगट होई हो । प्रीती अती मुझपे घणी, हवे प्रत्यक्ष जोई हो ॥ रु० २ ॥ गडगड् ईदर रहो वो द्वा राग खोवो हो । जाय अमणी रही अगम्यो, तिम शोभा ए सीधो हो ॥ रु० ३ ॥ सब अंग इन्द्रिय शोभती, वस्त्र भूषन शृंगारयो हो । मर्व कला गुण आगलो, निज रूप ते धारयो हो ॥ रु० ४ ॥ जननी परव में आपडया, माता लियो उठाई हो । ताको आठिगी मीठी रयो, हेत हिये न माई हो ॥ रु० ५ ॥ छाती आई गहबरी, आंसू बरसे नेणो हो । ते सुख कहवे केमसी,

के मन जाणे तेनो हो ॥ रु० ६ ॥ मुख अने सिर पुत्रको, चुंबे वारूं वारे हो । कर फेरे तन ऊपरे, मेषोन्मेष निहारे हो ॥ रु० ७ ॥ आज आनंद घन माहिरो, दूधे मेह वूठो हो । दर्शन दीठा लालना, करतार ज तूठो हो ॥ रु० ८ ॥ प्राण वारूं तुझ ऊपरे, सूरतकी बलिहारी हो । मोहनगारा नंदना, भली जननी ठारी हो ॥ रु० ९ ॥ आवो मिलो सहेलड़ी, मुझ नंदन नीहालो हो । इंद्र चली घरे आवियो, मम कुल उजवालो हो ॥ रु० १० ॥ चंदन तो शीतल घणो, ते थी शीतल चंदो हो । सब थी शीतल अती घणो, मुझ प्यारो नंदो हो ॥ रु० ११ ॥ मीठी तो मिश्री घणी, तेथी अमृत मीठो हो। सब मीठा थी मीठो घणो, पुत्र दर्शन दीठो हो ॥ रु० १२ ॥ हृदय रूप द्रह के विषे, उलटयो मोह मेहो हो । नेत्र रस्ते वही आवई, देखावण स्नेहो हो ॥ रु० १३ ॥ इम आनंदी विचार में, सोच उपनो अंगो हो । चिंता थी तत्क्षण मात को, मन थयो देख्यो भंगो हो ॥ रु० १४ ॥ आप क्यों बिलख्या मातजी, कुमर पूछे कर जोड़ी हो । ते कहे बालक ख्याल की, मुझ नहीं पूगी कोडी हो ॥ रु० १५ ॥ नव महीना बोझो धरयो, मुशकल से जायो हो । तूं सुख दियो दूजी मात ने, ते मुझ याद आयो हो ॥ रु० १६ ॥ यह फिकर नहीं कीजिये, सुख देवूं बताइ हो । बाल रूप झट धारने, ऊंधो पड़यो नगाइ हो ॥ रु० १७ ॥ चपलाई

कर धमी, माता हल्दी उआवे हो। घसीने पड़े धरणी ऊपर, माता छाती लगावे हो ॥रु०
१८ ॥ लघु मूठी मीची थकी, माता खोली धूवे हो। रूपाळो पुए अरूप पणी, देखी मां
मन लूव हो ॥ रु १९ ॥ हसे किलकिली पालने, घापजी ने हंसावे हो। गोदी लेई पय
ग्रं, पय पान करावे हो ॥ रु० २० ॥ काजल आंखवा रोहने, हाथ धी ते पसारे हो। लघू
घड़ी नीत कपड़ा विषे करी उपजावे प्यार हो ॥ रु० २१ ॥ लघी आवे मापड़ी छो, आप
गोदा भी आवे हो। इमही ज लागा उठवा, धूखी न पड़जावे हो ॥॥ रु० २२ ॥ कर धरी
चाले जननी संगे, धोचड़ी मापा धोने हो। ठुमक २ फिर आंगणे, पडे मांक आकर खोल
हो ॥ रु० २३ ॥ धूळा में लोटे वई माता उठाई लावे हो। रेत भरोड़ी मूठड़ी, मांक गरु
लगावे हो ॥ रु० २४ ॥ स्वावाद माता सुखड़ी, ते न्हासे दूरी हो। ए नहीं ए नहीं ए
नहीं लई, आप दूध अने पूरी हो ॥ रु० २५ ॥ दूध लाई साकर न्हाखी, खोद पडगई
आदा हो। पाछी निकाल ए माकरी, इमकरे विखवादा हो ॥ रु० २६ ॥ साकर निकले
नहीं तदा, रोवे अती गाढो हो। मांजी समझावे बहु विधे, ते लेइ बैठे आडो हो ॥रु०२७॥
इत्यादि बकाई माता ने, मुसगा रूप कीमो हो। पकियो पग माजी तणे सिरंजीयो आशीष
दीधो हो ॥ रु० २८ ॥ पर्यंत जेती आय होसे, मनोरथ मिद्ध थाषो हो। सोले ~~

दुःख ने, झट दूर गमावो हो ॥ रु० २९ ॥ मनोरथ माला इतने दिन मे, मेलीथी गूंथी हो । ते आज पहरी कंठ में, पूरी हूंस जे हूंती हो ॥ रु० ३० ॥ पूण्यप्रसाद थी पामीया, सब चिंतित सुखो हो । अमोलक छठी ढाल में, गयो माजी को दुःखो हो ॥ रु० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ मात पुत्र बैठा करे, निज निज बीती बात । कामजी निज बीत्यो थको, मांड कहे अवदात ॥ १ । विद्याधर घर में पल्यो, परण्यो खगेंद्र की धीय । षोड़श लाभ पैदा कर्या, यथातथ सगली कीय ॥२॥ एतले सुभट हलधर तणा, शस्त्र सजी जुज्झार। घस मस करता आवीया, रुक्मणी के दरबार ॥ ३ ॥ मदन देख विस्मित हुयो, कहो जननी ए विचार । सीपाही ए भेला हुया, शस्त्र सजी इणवार ॥ ४ ॥ बच्छ जे बीज तूं बोइया, तेहना फल लाग्या तुरत, आया चढी सुलतान ॥ ५ ॥ हरी हल-धर साखी राखने, होड़ करीथी हम । भामा पूकारी बलभद्र पे, देखी ने तुझ कर्म ॥ ६ ॥ काप्या केश नाक कान । जेठ जी ये मोकल्या, शुभट महा बलवंत । लुटता दीसें घर आपणों, तिण थी भट भग कंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ (चंपा नगर नीरोपम सुंदर—ए देशी) सुणी वचन इम माता जी केरो, पहलीसा ब्राह्मण बणिया । वय छोटी पण पेट घणो मोटो, कर लाठी बहू गुणिया

रे ॥ १ ॥ कुमर मदन महा नियामतो ॥ टेक ॥ आइ बैठ्या दरवाजा ने विच, आता सब
अटकाया । हुकम नहीं छे महाराणी को, खबरदार पग बढ़ाया रे ॥ कु० २ ॥ सुभट न
मान आगे बस आया, तब तिम लाठी उठाई । होडाभोड ते करवा लाग्या, छक न आवे
फाई र ॥ कु० ३ ॥ मत्र जोग मन भट ने खील्या, भूमी से पग चेंटाया । निबला
हुया सब शस्त्र पड़िया, बोलण शक्ती न पाया रे ॥ कु० ४ ॥ एक रास्यो ते भाग्यो तत्क्षण,
रामजी पास आया । बीती हकीकत सब सुणाई, बलराम अति कोपाया र ॥ कु० ५ ॥
देखो २ लक्ष्मणी कामणगारी, मीठा बोली महा ठगारी । कामण जोग पियू बस कीधो,
मोरा २ जोधा गया हारीरे ॥ कु० ६ ॥ अती शीतल दही दांतने पाडे, शीतल उदक पहाड़
फाड़े । शीतल शीत मनुष्य ने ठारे, तिम मधु स्वाद दीखाड़े रे ॥ कु० ७ ॥ केक वाणी अति
मीठी बोले, अही ने सपूछो खावे । तिम मीष्म सुता कपट की कूपी, कृष्ण करो ते बी
जय पावे र ॥ कु० ८ ॥ मंत्र बले इण सुभट हराया, जरा शंक नहीं लाई । धिक २ ऐसी
कुल दागण ने, कामे शीघ्र मराई रे ॥ कु० ९ ॥ अब जाई तस शक्ती जोवू, सुत बल थी
ते खावूं । मेदनी धूजाता तिहां चल आया, भारता मान नीचोवूं ॥ कु० १० ॥ दरवाजे
द्विज सुतो तेथी, बोले हमने मांय जावा दीजे । कुमर कहे राय अठे कमाराहिने, मेरी बात

सुण लीजे रे ॥ कु० ११ ॥ भामा जी मुझ ऽठसूं जीमायो, काचो अन्न मुझ खवायो। तिण रोग थी मुझ पेट फुलायो, ते पहली दो मिटायो रे ॥ कु० १२ ॥ विप्र जगत गुरु दाख्या भूपत, तिण थी मुझ आराम कीजे। महल अंदर मैं जावा न देसूं, इम सुण रामजी खीजे ॥ कु० १३ ॥ अरे भव्या बड़ २ मत कीजे, मुझ भीतर जावा दीजे। नहीं तो थारी कमबख्ती होसे, एह बिचारी चुपरीजेरे ॥ कु० १४ ॥ अहो रामजी थे किण बले भूलिया, जीवती मांखी न खवाय। जब लग मैं दरवाजे बेठा, तबलग मांय न जवाय रे ॥ कु० १५ ॥ सुण बलराम तिणरो पग साह्यो, चिंते देवूं बगाय। जिम खेंचे तिम मोटो पग होवे, आगे ते चाल्या जायरे ॥ कु० १६ ॥ पाछा फिरी ने बलराम देखे, ते ब्राह्मण तिहांइज सूतो। अती धम धमायो नेत्र अरुण कर, क्रोध ने बस पहूंतोरे ॥ कु० १७ ॥ हा हा धूतारी रुक्मणी नारी, मुझ से पिण नहीं चूकी। तो औरों ने किम यह छोड़से, जिण कुल की लाज मूकी रे ॥ कु० १८ ॥ पुनरपि मारण सामें धावे, तब पुत्र माने बतलावे। कहो माता अब कीजिये कांई, बाबाजी मुझ मारण आवे रे ॥ कु० १९ ॥ सा कहे लाल ए जादव नाथो, महा पराक्रमी इण से हारो। पाय पड़ी ने माफी मांगो, यांने वश पिता थारो रे ॥ कु० २० ॥ बड़ा थी तो भाई हार भलेरी, मरजी राखो इण केरी। व्याल बाव मुखे कर न घाली जे, एह सीख बस

मरी र ॥ कु० २१ ॥ अहो माजी आप इम किम पोलो मैं पुत्र हरीजी केरो । मुझ थी तो
नरमाई न थावे, मुझ आगे कांई ए रेरो ॥ कु० २२ ॥ नाग खेलावण मंत्र जे जाणे, ते
तहनी पूंछ ताण । देख मगो तुम अठे ही पैठी, पापाजी कांई मन में आणे रे ॥ कु० २३ ॥
कहो इणने शोक किणसे लडवा को, मों कह्ये केसरी थी राजी । तत्क्षण आप सिंह को रूप
धारयो, लट पुछ मन शोभा माजी र ॥ कु० २४ ॥ पर्वत सरीखो ऊंचो लांबो, पूछ गुच्छ
शीश विराजे । दाढ नख तीखा घणा मोटा, महामेघ मन गाजेरे ॥ कु० २५ ॥ सिंह नाद
करतो आपडियो, रुक्मणी महल थी बहार । दखी रोहणी सुत अचरज पायो, मन मांहे
ऊडो विचारे रे ॥ कु० २६ ॥ मा मामी तो भूतडी दीसे, हांसी थी नर मारे । आज अंत
में इण ने परखी, राजघर जोगी नारे रे ॥ कु० २७ ॥ मृगपति झपट थी राय मुकट
पाड्यो, भूपव क्रोध भरायो । ताडन ताडण करतो न चूके, अधिको झगडो मचायो रे
॥ कु० २८ ॥ बांधो पांच हरी हरी अडिया, बलभद्र साली पडिया । मदन तस छोडी
हर्ष भरायो, मामी के महल में पडिया रे ॥ कु० २९ ॥ आलिङ्गो माता थी से गाढो, आइ
स्थल ज्यों कीधो ठाढो । हलधर ऊठ्या सुभट मन छूट्या, खीझाणो हुवो जाटव लाडो रे
॥ कु० ३० ॥ आप मापने घरे मीधाया, मन में अती अचरज पाया । रुक्मणी पूवारी

ठैराइ, डरें घणा भरमाया रे ॥ कु० ३१ ॥ पुत्र नो पराक्रम देखी, माता अती घणी पाइ साता । पुत्र जीव प्रमाण जगत में, लोचन अमृत रूप थाता रे ॥ कु० ३२ ॥ जादव कुले जस कलश चड़ायो, ढाल सातमी मांई । ऋषि अमोल जे कुलनों दीपक, तेहीज पुत्र कहाई रे ॥ कु० ३३ ॥

॥ दोहा ॥ पुत्र मात अति प्रेम सूं, बैठा आनंद मांय । वछ बाकी रही बातड़ी, झट दे मुझे सुणाय ॥ १ ॥ नाम गाम कुल माहरा, तूं किम समझे पूत । किणरे साथे आवियो, कहो जे वीतक सूत ॥ २ ॥ भामा ने थे किम ओलखी, किम खवायो काचो धान । लघू विप्र तूं किम बण्यो, पेट फूलायो तान ॥ ३ ॥ इत्यादि तमासो थारो देखतां, अचर्ज आवे मुझ । कद आयो तूं गाममें, कहदे मुझसे गुझ ॥ ४ ॥ पुत्र करजोड़ी कहे, माताजी आप पसाय । जे रस्तामें कौतुक करया, आदि अंत देवूं सुणाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ (झूठा बोल्यारो कांइ पतीयारो—ए देशी) महा पुण्यवंत श्री काम कुमारो, बीतक बात करे ते ऊचारो ॥ टेक ॥ मोले लाभे मुझ शोभतो देखी, माता करयो खोटो बीचारो ॥ म० १ ॥ विद्याधर के घर थी रीसाई, गयो मैं बन मंझारो ॥ महा० २ ॥ तिहां आर्य ऋषि जी का दर्शन हुया, तिण कियो विस्तार तुम्हारो ॥ महा० ३ ॥ आप दर्शण

न मं अी उपजायो, आया नारद मुनि विमचारो ॥ महा० ४ ॥ तिम साथे निकल्यो परवार छतो छोडी, रहने दीठो ताव कोरवारो ॥ महा०५ ॥ तिम की लड़ी उदधी कुमरी लीधी मेठी विमाण ऋषिने लारो ॥ महा० ६ ॥ ऋषि आज्ञा विन आयो नगरी में, मोसयो जरु वापी को सारो ॥ महा० ७ ॥ मामा जी को बाग विगाड्यो, पहायो मोटो पजारो ॥ महा० ८ ॥ मानू को सिर फोड़ी दांत गोडा तोड्या, दादा जी की करी हारो ॥ महा० ९ ॥ भामाना पाड़ा में विम लड़ाया, मोजन सागयो सारो ॥ महा० १० ॥ मायो मुडायो फठ पहरायो, मूंदो कर दियो कारो ॥ महा० ११ ॥ गधा लीडा की माल पहराई, सुण हसी रुक्मणी तेवारो ॥ महा० १२ ॥ आप घरे आई सोठा वर्ष को, पारणो करयो मोदक आहारो ॥ महा० १३ ॥ सर्व सुण अती अचरज पाई, रुक्मणी चरित्र कुमर को भेकारो ॥ महा० १४ ॥ सुरगुरू गिणतां पार न पावे, मदन कला ने गुणआगारो ॥ महा० १५ ॥ कह रुक्मणी पछ सब भेय कीया, अब पिता क पास पधारो ॥ महा० १६ ॥ जिम सुण मणी साता उपजाई, तिम काळओ ठारो पितारो ॥ महा० १७ ॥ तात समो नहीं कोई श्रीजग में आप बड़ो संसारो ॥ महा० १८ ॥ अति तिरसा हरीकी ने तुमरी अब मिली न ठारो ॥ महा० १९ ॥ रात दिन तम वात करता था, वीरया वर्ष

चउवारो ॥ महा० २० ॥ कहे कुमर किहां मिलूं तात ने, ते बैठा छें दरबारो ॥ महा०-
२१ ॥ तिहां जाइने कांइ मैं बोलूं, आयो हूं पुत्र तुमारो ॥ महा० २२ ॥ ए कुण २ सभा-
जन पूछ से, आयो छे बापड़ो बीचारो ॥ महा २३ ॥ प्रदेश फिरगां ठोड़ न लाधी, रड-
वड़ तो दारो दारो ॥ महा० २४ ॥ भलो आयो मां बाप ने मिलीयो, एह छे ठीकाणो
सातारो ॥ महा० २५ ॥ इत्यादि बचन नाना मोटा बोल से, मुझ से न खमा से लगारो
॥ महा० २६ ॥ मैं तो मिलूंगा नीशाण फरराई, बजाई जीत नगारो ॥ महा० २७ ॥
देखूं जादव को जोर केटलो, रण भूमी ने मंझारो ॥ महा० २८ ॥ आपो जणाई पछे तात
ने, करसूं आइ जूहारो ॥ महा० २९ ॥ वीनंती म्हारी मानी मात जी, चालो म्हारी लारो
॥ महा० ३० ॥ अण पूछा हरीने नहीं आवूं, यह पतिव्रता आचारो ॥ महा० ३१ ॥ मैं
पुत्र तूं माता म्हारी, दोष न किस्यो बीचारो ॥ महा० ३२ ॥ पहर घडी ने मांही आई,
पाछा आस्यां इण वारो ॥ महा० ३३ ॥ इम केई तरह माता ने समझाइ, हाथ ग्रही ते चारो
॥ महा० ३४ ॥ गगन में उड्यो आयो ते जल्दी, सभा सुधर्मी जहां जादवोरो ॥ महा०
३५ ॥ ऊभोरही नभे सब सुणें तिम, इण विध करे ऊचारो ॥ महा० ३६ ॥ ढ़ाल आठमी
ऋषि अमोलक, कही भवने सुखकारो ॥ महा० ३७ ॥

॥ दोहा ॥ मो मो हरी हलधर बली, पांडव कौरव धुसार । कोइ बैठ मखा करो, लजावूं कृष्ण नार ॥ १ ॥ मोटे संग्रामे हराविया, चंदेरी नरनाथ । ते रुक्मणी देखो हिवे, आवे हमारी साथ ॥ २ ॥ आर चोर नट बिट नहीं, हुं विद्याधरपतिनंद । ले चाल्यो मोटी सुन्दरी, सब की कर मति मंद ॥ ३ ॥ कोइ माने क्षत्रीयाणी जणिया, इणा वहा नृपाल । त्रिखंड पति की प्रेमला हलं, नाक किम रहसे नृपाल ॥ ४ ॥ युद्ध बिना बात नहीं, यह इस मरण करार । जो कोई होवे धरमा, लागो म्हारी लार ॥ ५ ॥ इम कही सब देखतां, चाल्यो गगन गति ताम । सबजन देखें उर्ध्वमुख, अचरज रहा पाम ॥ ६ ॥ मदन निज माता मणी, मेली नारद पास । दोइ नमी मुनी जी मणी, दी बीती बात प्रकाश ॥ ७ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ (लड़का की ए-देशी) महा जंग लोक दंग घर रंग, काम कृष्ण को नहीं मान मंग उछरंग छाजे । बड़ा २ धरमा चढ़ी जोश पूरमां, राखी २ आगे सिंह ज्यूं गाजे ॥ टेक ॥ इम सुण मदन वचन जादव समा, हल हली खलभली अती अचर्ज पावे । कृणए २ कही ने ऊभा हुवा, कोपथी अंग पर धरावे ॥ महा० १ ॥ सुणी मुरारी नदीनी किराड मम, मूरछा खाइ ने झट धरणी पड़िया । म्हारी प्यारी मणी कृष्ण ले

जावे हरी, रोस धरी सब धड़ घड़िया ॥ महा० २ ॥ कर साही उठाइया नेत्र रक्त थाइया, भृकुटी चढाइया उतावल लागी । काम सब छोड़ो दोड़ो पकड़ो दुष्ट ने, प्रेमला लेई कुण जाय भागी ॥ महा० ३ ॥ रण भेरी बजावी गुंजावी सब द्वारिका, बारका भीतरका लोक मिलिया । दश दसार हुंस्यार वीर पांच सौ, साठ हजार दुरदंत चलिया ॥ महा० ४ ॥ घणा जबरजंग पीधी भंग नसे रंग में, झूली रह्या मोटा जोधा । धड धड़ी ऊठिया अती ही रूठीया, तूटीया बीजली जिम क्रोधा ॥ महा० ५ ॥ अंजन गीरी सम हाथिया मातिया, शूल घंटा घुंघर माल बाजे । सहश्र बयालीस सजा लजा अरिदल गजा, मद भर गुल गुलाट शब्द थी गाजे ॥ महा० ६ ॥ लंबोदर हयवरा पलाण शोभे खरी, थइ २ नाचे धरती कुचरता । रथ रणझण भारी जोतरया बड़ा धोरी, शस्त्र थी भरया अरि देख डरता ॥महा०-७ ॥ पायक परवरया बखतर अंगे धरया, रोस थी नयण भरया मतवाला । अड़तालीस कोड कुण करे तस होड, सब जोड़ बहूरंगी तन चाले पाला ॥ महा० ८ ॥ सब सैन्य सजायो गजायो नभ बाजा सूं, राजा सूं राजा अड़ थड़ चाले । कर छाती भगाइ देश्यां शत्रू, कहे मान थी उछाले भाले ॥ महा० ९ ॥ कंपे काया घणो जोम घणो मन भणो, अंध हुवा धणी क्रोधे माता । भाला भल भले, झल झले असी अती, खांड़ा बहु बांड़ा हाथे समाता

॥ महा० १० ॥ धमू फिरावता कवाण चढावता, दव ठपकावता धरणी धरइ। केसरया उमाव ओछव लड़वा वणो, रोर जोसे घणां अग मरडे ॥ महा० ११ ॥ केइकी कहे माता मांमलो पुत्र मातां, शत्रु का जातांही प्राण लीजो। शीश माखे कता मोड़जो गजदंता, हता अरि होके दमण दीजो ॥ महा० १२ ॥ हरी हलधर आगे देखी दुश्मन भागे, सब पग लागें सागें पुष्पनापूरा। सब होंस धरता फरंता कला लड़वा की, अमी करा घेरी का चकचूरा ॥ महा० १३ ॥ दल चाल्यो हाल्यो गिरी टाल्यो न टले जरी, रणांगण आई सहायो मेदाने। मडायो मब सैन्य हकाग्यो अरि करी वेग, आवर साखों चढावां दूजी मांने ॥ महा० १४ ॥ मदन कुमर दखी पिता फोज हर्ष भर, मूलगे रूप लडो रमो आई। महा पराक्रमी निधावली कमर कसी भली शस्त्र अस्त्र भले रूपे सोमाई ॥ महा० १५ ॥ धनुष चढाई बजाई टणकार ने, थरराई विद्यावले जादू सैन्य सारी। मेलीयो बाण चापने कबाण बिष, कमनलग ताण ने श्रम उतारी ॥ महा० १६ ॥ आवोर जादवा हलधर माधवा, जननी नो दूध मामही पचावे। जो मागे छो पूत रजपूत मजपूत का, तो निज नार भणी छुड़ावो ॥महा० १७॥ सुणी ए वाम जादव अंग सिलगी आंच, रणतूर वाजी शस्त्र चलावे। मेघ धारा परे, मकरध्वज ऊपरे, आयुध बसें तिण ने बचावे ॥ महा० १८ ॥ के हक कर

पगे कांख कोंहणी रगे, बाण ने छेद आगे पग धावे । काम बाणने ताणने विद्याल पाणने, एक का सहस्र कर परगमावे ॥महा०१९॥ जादू सैन्य हराइ भगाइ पाछे पगे, हरी हलधर दोइ अचंभे थावे । दोइ सामा आया चढ़ाया मदन धनुष, गिरधारी ने रीस जरा नहीं आवे ॥ महा० २० ॥ फरके दक्षिण भुजा नेत्र पण दाहिणों, हर्ष को पूर हृदय में न मावे। हाथ उठे नहीं चिंता हरी ने थई, कांई यह वासुदेव दूजो थावे ॥ महा० २१ ॥ कहे हरी भाई थें लडाई लगाई, पण तुझ पर क्रोध म्हारो न जागे। मदन भणे हम नंदहरी तणे, कांई करो तुम म्हारे जी आगे ॥ महा० २२ ॥ और कांइ न मांगू आगे ऊभो पगे लागूं, रुक्मणी भीख मुझने दीजे । सुण जादूराय कोपाय सवाय ते, अरे इण दुष्ट का प्राण लीजे ॥महा०२३॥ मदन बाण मार्यो हो बाबा ने पाड़्यो हो, कृष्णजी एकला रहिया तदा । कहे काम उम्हाई जावो घरे जादू राई, तुम राणी जी हाथ नहीं आवे कदा ॥ महा० २४ ॥ कृष्ण चक्र चलावे पण ते न सिधावे, जद चिंता अधिक मन मांहे थे से । हुयो भाई अपूठो शस्त्र पण मुझ रूठो, हवे कांई म्हारा प्राण लेसे ॥ महा० २५ ॥ कहे मदन मुरारी पाछा जावो हारी, एक नारी हुई न हुई जाणो । एम सुण बातड़ी कलवली आंतड़ी, खीज्यो घणो जादव राणो ॥ महा० २६ ॥ वांथो बाथ आई अड्या बाप बेटा भिड़्या, साक्षात् कालरूप होइ रहीया । धपा धप लपा

रूप सुदि मारें मपा मप मापमी पम न पूछ्या भी महया ॥महा० २७॥ देख रुक्मणी सुरसाय मन में पसी हा। हा। यह अनर्थ थावे। ए नानो सुत नानको कुंमे भीकानको, विना काम ठाल जी ने झुटावे ॥ महा० २८ ॥ ए नद हमारा ए मरतार प्यारा, दोइ हारया नहीं सुख पावो। देख तमासो, मूलगई में हांसो, सांमो ऋषि राय तुमही मिटावो ॥महा०२९॥ जाइ दो समझाइ मीटाइ उझाइ ने, पर हापी जन हांस होसे। तुम विन महाराव यह काज अप कुम करे, आपही मिटाओ जळदी से रोसे ॥ महा० ३० ॥ ऋषि हरखाय उठआय सेना विपे, हाल नवमी में मिरपा वाप बेटा। कहे अमोल पराक्रम दीसे सम तोल, मनथी हाल छे तेने छेटा ॥ महा० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ मो मो कानजी कांई करो, यह अविचारी वात। नद आनंद कंद दायक, किम मीडो छो घाव ॥ १ ॥ ऋषि वचन गोपाल सुन, विस्मय त्रिस्मित अति मनमांय। मदन अती हुलसाय ने, तात पगे पड़जाय ॥ २ ॥ अपराध समजो तात जी, सुख आज पूरी हाम। आप वीर्य प्रगटावना, कीवा में सगला काम ॥ ३ ॥ उठाई हरी हर्ष सुं, हृदय मलंगी लीव। अती आनंद मन प्रगट्यो, मावे अमृत पीव ॥ ४ ॥ पुत्र सपूत देखवा सब ही जन हरखाय। मात्रि को कह्नो किम्यो, सुख हृदय न ममाय ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल १० मी (गोपीचंद लडका लेरे फकीरी तजदे राजने—ए देशी) हुयो हर्ष बधावो, नंदन पधारया, जादूनाथ का ॥ टेक ॥ पुत्र पराक्रमी पेखतां सरे, हरख्या कृष्ण-मुरार । धन २ कुल उजवालणा सरे, चूंबे बारूं बार रे ॥ हु० १ ॥ वृद्ध बंधूने सुभट पड्या सरे, निणरो हरीने सोच । समकाले दोई मिल्या सरे, करे मन में आलोचरे ॥ हु० २ ॥ मदन समेटी विद्याने, तब कीधा जिम था तिम । मार दुःख जोखम मिटी सरे, विद्याबलेह किम रे ॥ हु० ३ ॥ मार २ करंता उठ्या, हलधर सुभट जुझार । हरी कहे मारीनेसूं मारीये सरे, मार्या काम सरदार रे ॥ हु० ४ ॥ एकलडे पुत्र हमारड़े सरे, महाबलीयाने हराया । जादव पांडव कौरवना सरे, क्षण में मान गमाया रे ॥ हु० ५ ॥ उदधी आदी वासूदेव जी सरे, दसही दादा दसार । आइ प्रणम्या कुमर जी सरे, हीयडे भीड़ें धारी प्यार हो ॥ हु०-६ ॥ बलभद्रजी आवीया सरे, प्रणमें मदन करजोड । सिंह रूपे मैं तुम हण्या सरे, खमज्यो अपराध सिर मोड़ हो ॥ हु० ७ ॥ उपाड़ी हृदय धरचो सरे, पुचकारी कहे शाबास । जादव कुले भास्कर समा सरे, उपज्या करण प्रकाश हो ॥ हु० ८ ॥ कौरव पांडव भूमिया सरे, मिलवा को अधिकार । राजा राणा प्रणम्या सरे, मिलियो सकल परवार रे ॥ हु० ९ ॥ भानू कुमर गयो भाग ने सरे, भोली भामा पास । विस्तारी वात जणावतां सरे, अती घणी

हुए उदार रे ॥ हु० १० ॥ गगन थकी उतारीयो सरे, विमाण अती सुचग । उदधी कुमरी पलवती सरे, सोरू हुया सब दग रे ॥ हु० ११ ॥ नगर शृंगार करावीयो सरे, अशुचि कचरो कर दूर । सुगध पाणी छिड़काय ने सरे, फूल बिछाया पूर रे ॥ हु० १२ ॥ हाट हवेली नी शोभा करी सरे, नव रंगी रग लगाय । गुडी नीसाण फरावीया सरे, गोरड़ी मंगल गाय रे ॥ हु० १३ ॥ पुत्र पिता शाबा गज चढ्या सरे, छतर चमर ढुलाय । पाखिंड्रे अंबर गमावता सरे, पातल आगे नचाय हो ॥ हु० १४ ॥ मुक्ताफल वरसावता सरे, पाल्या मध्य बजार । कृष्ण रुक्मणी जोवत्रा सरे, ठठ्ठ जम्यो नर नार हो ॥ हु० १५ ॥ गढ़ बढ़ में केइ भामनी सरे, उरूट कियो सिणगार । लज्जा छोड़ी बजार में सरे, हूंसे निरखें कुमार हो ॥ हु० १६ ॥ केइ गोखे केइ मालीये सरे, केइ डागले जाय । जोवे मससे घणा मरे, धन २ रुक्मणी माय रे ॥ हु० १७ ॥ जो माता पुत्र जनमिये सरे, काम कुमर सा जाय, निज कुलने उजवालणा सरे, निज मापाने जणाय हो ॥ हु० १८ ॥ रुक्मणी भवने आयने सरे, सब मिलीयो परवार । आनंद मंगल हो रहा सरे, बाजे हर्ष नगार रे ॥ हु० १९ ॥ एकांते हरी रुक्मणी मर, सीवा काम कुमार । बैठा मुसको जोवता सरे, आपस में अमीरस ठार रे ॥ हु० २० ॥ रुक्मणी को प्रशंसता सरे, मामा का बडभाग ।

आज वड़ भागण कोण छे सरे, फरमावो प्रीतम सागरे ॥ हु० २१ ॥ हरी कहे मैं बालपणे सरे, कीधी कितोल अनेक । काम कुमर विषे देखी सरे, मुझ थी कला विशेष रे ॥ हु० २२ ॥ इम अनेक आनंद में सरे, करें प्रेम की बात । नयण वयण अमृत बरसे सरे, लिखी-या नहीं पूरातरे ॥ हो० २३ ॥ अठाई मोछब मांडियो सरे, निपजे बहूत आहार । सब सज्जन रुक्मणी घरे सरे, जीमें हर्ष अपार रे ॥ हु० २४ ॥ सबने मिलाप आनंद दायनी, चउ खंडे दशमी ढ़ाल । अमोलक ऋषि कहे पुण्य थी सरे, सुखे रहे सर्व कालरे ॥ हु० २५ ॥

॥ दोहा ॥ किताक दिन के अंतरे, दुर्योधन भूधार । आया कृष्ण नरिंद पे, इण विध करे पुकार ॥ १ ॥ स्वामी पुत्री मांहिरी, पुत्र वधू तुम जाण । हिव ख्रं गती छे तेह तणी, किम करूं मैं प्रयाण ॥ २ ॥ गिरधर चित चिंता बसी, काम महा बलवंत । किम मांगी जे तेह थकी, पुत्री तुम महंत ॥ ३ ॥ कौरव कहे परणाइये, प्रद्युम्न ने ते बाल । हरी कहे देखी जसे, इतरे आया काम चाल ॥ ४ ॥ दुर्योधन हरी चुप रह्या, काम समझा सब बात । उदधी कुमरी लाइने, दीधी कृष्ण के हाथ ॥ ५ ॥ राधापति कहे लालजी, परणो कन्या एह । कौरव हम मरजी घणी, मत आणो संदेह ॥ ६ ॥ मदन कहे पुत्री सारखी, लघू भाई की नार । मरजी होवे सो कीजिये, म्हारी न हटक लगार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ (राजग्रही तो नगरी जी-ए देशी) एक दिन कृष्ण ने रुक्मणी, बैठा वातो करें घणी, पुत्र तणी, पेढी मदन परणावीये जी। मुझ मन में उमावो छ घणो, कब निरखुं ब्याह में सुत तणो, सखी घनो, मरजी सो दरसावियें जी ॥ १ ॥ हरी कहे इच्छा पूर ई, सबने बुलाई दूर ई, मन सूर ई, मेजी सकाल में सही सी। दूजे दिन कचेरी में आविया, सचिव मोटा ने बुलाविया, दरसाविया, देर तणो अवसर नहीं जी ॥ २ ॥ मदन कुमर का ब्याह भणी, करो सजाई सब घणी, नगरी तणी, शोभा श्रेष्ठ कीजिये जी। सब सेनाने सज करो महल बजार में रंग भरो, मन्धरो, सघने हुकम दीजिये जी ॥ ३ ॥ विद्याधर कालीदस जी, वेताढगीरी तिणने भजी, समाचार के जी, ममसंवर ने बुलाइय जी। सब परवारे परवरी, प्रद्युम्न नारी सगधरी, शोभा करी, मदन ब्याह पे आवियें जी ॥ ४ ॥ स्वग गति दूत सिधांवियो, स्वग पति सामे रूमोरखो, विनवयो, काम तणी पीतक चरी जी। सुण सब सज्जन हरखीया, पंचमर मीलम उमंगीया, सजाविया कैन्या परवार हर्ष धरीजी ॥५॥ तिहां मदन को सासरो, तिहां मेजो एक चाकरो, गयो हर्ष धरो, पीतक सात सब कही जी। तेपण सजकर आवीया, ममसंवर घर रावीया, हरखावीया, चलण तणी तइयारी ठही जी ॥ ६ ॥ मोटो विमान बनावियो, सब परवार बोलावियो, बैठावीयो, कनकमाला

दी राणीया जी । पुत्र सब साथे लिया, सेनाने पण मंग कीया, फरकी रहिया, नेजा धजा नीसाणीया जी ॥७॥ विविध वाजिंत्र बजावता, नभतल ने गरणावता, सब आवता, द्वारा-नगरी ऊपरे जी । गाम सर्व खल बल थयो, विद्याधर छत छारयो, आगे दूत गयो, बात जणाइ हर्ष भरे जी ॥ ८ ॥ हरीहलधर आदे करी, सर्व परवारे परवरी, हर्ष भरी, खेचर ने सामे गया जी । विनय विधी सब साचवी, हिली मिली गुण राचवी, मधुर लवी, नगरी मांहे लावीया जी ॥ ९ ॥ मिली रुक्मणी ने खेचरी, एकेक नी बड़ाई करी, बाई तुम घरी, हम नंदन सुख पाविया जी। उपगार तुम्हारो छे घणो, कदी न होवे ऊरणो, गुण पूरणो, तिण-थी ये आणंद बरतिया जी ॥ १० ॥ सब लोक देख अचर्ज थया, काम कुमर गुण गारह्या मुख २ करया, पुण्यवंत २ घर पाविया जी । तिहां रिद्धी पण थी घणी, इहां छे पिता त्रीखंड धणी, आहा पुण्यभणी, इम सब लोक गुण गाविया जी ॥११॥ भामा भानू कीर्ति सुणी, पछतावे घणी सिर धुणी, परवार गुणी, देखी अती मुरझावई जी । रुक्मणी घरे बधावणा, नित्त मगलाचार गांवणा, मोटा पावणा, ठाट पाट सुख पावई जी ॥१२॥ भूचरी ने खेचरी मिली, कन्या पचास अती भली, रंगरली, उगटणा मंजण हुवेजी । सागे इंदर की अपछरा. वय रूप गुणों थी सुंदरा, मनहरा, शृंगारी देवता जूवे जी ॥१३॥ हिवे मदन

॥ ढाल ११ मी ॥ (राजग्रही तो नगरी जी–ए देशी) एक दिन कृष्ण ने रुक्मणी,
बैठा बातां करें घणी, पुत्र तणी, पेली मदन परणावीये जी। मुझ मन में उमावो छे घणो,
म्ब निरखूं ब्याह में सुख तणो, खर्ची घनो, मरजी सो दरसाविये जी ॥ १ ॥ हरी कहे
इच्छा पूर मूं, सबने बुलाई दूर थ मट घर सूं, मेजी सकाले में सही जी। दूजे दिन कचे
री में आविया, मचिव मोटा ने बुलाविया, दरसाविया, देर तणो अवसर नहीं जी ॥ २ ॥
मदन कुमर का ब्याह मणी, करो सजाई सब घणी, नगरी तणी, शोभा श्रेष्ठ कीजिये जी।
सब सनाने मब करो महल बजार में रंग भरो, अनूपरो, सबने हुकम दीजिये जी ॥ ३ ॥
विद्याधर कासीदसे जी, वेवाइगीरी तिणने मेजी, समाचार के जी, समसवर ने बुलाइये जी।
मब परवारे परवरी, प्रद्युम्न नारी सगधरी, शोभा करी, मदन ब्याह पे आविये जी ॥ ४ ॥
खग गति दूत सिधावियो, खग पति सामे ऊमोरयो, विनयो, काम तणी बीतक धरी जी।
सुण मब मज्जन हरखीया, पंचमर मीलण उमंगीया, सझावीया, सैन्या परवार हर्ष भरीवी
॥५॥ जिहां मदन को मासरो, तिहां मेजो एक चाकरो, गयो हर्ष घरो, बीतक बात सब कही
जी। तेपण मनकर आवीया, समसवर घर राखीया, हरखावीया, चलण तणी तइयारी
ठरी जी ॥ ६ ॥ मोटे विमाण बनावियो, मब परवार बोलावियो, बैठावीयो, कनकमाला

दी राणीया जी । पुत्र सब साथे लिया, सेनाने पण मंग कीया, फरकी रहिया, नेजा ध्वजा नीसाणीया जी ॥७॥ विविध वाजिंत्र बजावता, नभतल ने गरणावता, सब आवता, द्वारा-नगरी ऊपरे जी । गाम मर्व खल बल थयो, विद्याधर छत छारयो, आगे दूत गयो, बात जणाइ हर्ष भरे जी ॥ ८ ॥ हरीहलधर आदे करी, सर्व परवारे परवरी, हर्ष भरी, खेचर ने सामे गया जी । विनय विधी सब साचवी, हिली मिली गुण राचवी, मधुर लवी, नगरी मांहे लावीया जी ॥ ९ ॥ मिली रुक्मणी ने खेचरी, एकेक नी बड़ाई करी, बाई तुम घरी, हम नंदन सुख पाविया जी । उपगार तुम्हारो छे घणो, कदी न होवे ऊरणो, गुण पूरणो, तिण-थी ये आणंद बरतिया जी ॥ १० ॥ सब लोक देख अचर्ज थया, काम कुमर गुण गारह्या मुख २ करया, पुण्यवंत २ घर पाविया जी । तिहां रिद्धी पण थी घणी, इहां छे पिता त्रीखंड धणी, आहा पुण्यभणी, इम सब लोक गुण गाविया जी ॥११॥ भामा भानू कीर्ति सुणी, पछतावे घणी सिर धुणी, परवार गुणी, देखी अती मुरझावई जी । रुक्मणी घरे बधावणा, नित्त मगलाचार गांवणा, मोटा पावणा, ठाट पाट सुख पावई जी ॥१२॥ भूचरी ने खेचरी मिली, कन्या पचास अती भली, रंगरली, उगटणा मंजण हुवेजी । सागे इंदर की अपछरा. वय रूप गुणों थी सुंदरा, मनहरा, शृंगारी देवता जूवे जी ॥१३॥ हिवे मदन

ब्याह कारण, शरीर करे सिणगारने, वस्तु सारने, पीठी मर्दन मलो कीयो जी । उवक
सुगधे न्हाविया, इतर फुलेल लगाविया, सिरछाविया, केशर किस्तूरी तिलक किया जी
॥ १४ ॥ केसरया जामा पराविया, जरी मरदार भराविया, शोमाविया, उपरणो कटि
बंधणो जी । रत्न मुकुट सिरपर धरयो, तुररो तार भग मग करयो, लटके हरयो किलंगी
रवि महल वो छिपगयो जी । काने कुंडल झलमले, हीरा रत्ने बाजतो देखी लाजतो,
कपोल माग दीपावीयो जी ॥ १६ ॥ मुक्ताहार मनोहरू, नव अठारा पहू सरू, गोप
कंठी वरू, हृदय कंठ छबावीया जी । भुज बंध रत्ना का कड़ा, कर में दीपत मुद्रडा, बली
वडा २, अविच कंदोरा धरा वीया जी ॥ १७ ॥ धोती धीराजे रेशमी, जरी की कीनारी
धम धमी, अती जमी, युग पगे सुवर्ण मोचडी जी । किसां लगे शोभा कहूं, कहता पार
कुछ नहीं लहू, कि बहू, रूप राम ज्यूं मूर्ति खडी जी ॥ १८ ॥ जब मोटो सजावीया,
मारी गहणा पेरावीया, गज गाजीया, पलाण जमायो मुखमली जी । मदन आरूढ़ सिण पे
थया, सुरिंद नरिंद लोमारया; थय २ कया, पूनम चांदणी ज्यों खिली जी ॥ १९ ॥ पद २
हय पर नाचतो, भ्रमर सगामने मांचतो, कोई राचतो, मुख मरूमोह तंबोल की जी ।

फूल सुगंधी धम धमे, सेहरा तुररा मन रमें, उपर भमें, षट पद माता ओलथी जी ॥ २० ॥
पंच शब्द सुहामणा, वाजिंत्र बजावणा, गरणा वणा, अंतरिक्ष खोभी रह्यो जी। हरी यम-
संबर राजीया, हलधर दसार छाजीया, वीराजीया, मयंगल पर मंगल कह्यो जी ॥ २१ ॥
कनक माला ने रुक्मणी, भूचर खेचर पदमणी, गावें घणी, सुगीत किंनर नादथी जी।
सब सज्जन मेला थया, ख्याल कितोल घणा मच रया, भाटे कया, दोहा केइ मोटा साद
थी जी ॥ २२ ॥ रंभानाचे मोरड़ी, पातल सागे मोरडी, मिल जोरडी, मध्य बजार थी
नीमरया जी। मोटा बाग में आवीया, सब सज्जन शोभाविया, सुख पावीया, आनंद मय
हर्ष भरया जी ॥ २३ ॥ शुभलग्न जोइ करी, पचास परणावी सुन्दरी, शुभ घड़ी, पाछा
फिरि घर आवई जी। इंद्र इंद्राणी समा, भोगवे सुख मनोरमा, रतीकामा, आनंदे दिन
जावइ जी ॥ २४ ॥ यमसंवर विद्या धरू, देखी कुमर रिद्धीवरू, सुख करू, अती संतोष
ते पावीया जी। मनवार सूं तिहां रही, कित्या दिन वीत्या भई, आज्ञालई, सज्जन संघ
घरे सिधावीया जी ॥ २५ ॥ पाछे कुमर भानू भणी, उदधी प्रमुख कुमरी घणी, औछव
ठणी, शुभ महूरत परणावइ जी। पूगी मनकी आशोजी, भोगवे भोग विलासो जी, सुख
वासोजी, आणंदे काल गमावइ जी ॥ २६ ॥ मदन तने भारती बसी, कीरती ईरखो धर

सुखी, परदेशे वासी, देश पुरे घर २ विस्तरी जी । ढाल एकादशमी भई, सर्व सुखदा अमोल ऋषी, पउ खंड सही, गावत सुणतां सुख करी जी ॥ २७ ॥

॥ हरी गीत छंद ॥ श्री प्रद्युम्न कुमार बाल अणगार पण लाड़ु लागया । जनीता का लेई दर्शन हुई प्रसन्न ते भाषा श्री करी जया ॥ हरायो जादु साथ मेट्या तात मघने आनंद मया । दोई भाई परण्या नार सुख मंझार रहै अमोलक कया ॥ १ ॥

इति पुण्य कल्पद्रुमे स्वजन समागम चतुर्थ स्कंध समाप्त ।

॥ अस्मिन् इकासे ढाल ११ दोहा ६५ ॥

पंचम स्कंध ।

—:o:—

॥ दोहा ॥ तीर्थेश्वर विश्वेश्वरू, मुनीश्वर उपाध्याय । साधू सकल ए पंचकूं, प्रणमूं सिर धर पाय ॥ १ ॥ पंचम हुलास प्रारंभवा, दो श्रुती सुखदाय । श्री प्रद्युम्न कुमार के, मित्रकी सुणो कथाय ॥ २ ॥ पूर्व भव में मदन का, लधु बंधव कैटभ तेह । सांब कुमर किम अवतरे, सुणो श्रोता धरि स्नेह ॥३॥ मधूतथा केटभ दोइ, करणी करी संजम लेय । बारमें स्वर्गे ऊपना, मधू हुवा मदनजी एय ॥ ४ ॥ एक दिन कैटभ देवता, श्रीश्रीमंदर पास । गया वंदणा विधि साचवी, इण विध करे प्रकाश ॥ ५ ॥ पूर्व भव सुणवा तणी, मरजी मुझ छे स्वाम । जिनजी मधु कैटभ चरी, वरणन करें तमाम ॥ ६ ॥ फिर पूछे मुझ बंधवो, किहां उपज्यो छे दयाल । प्रभू कहे दक्षिण भर्त में, द्वारका नगरी विशाल ॥ ७ ॥ नृप कृष्ण रुकमणी वल्लभा, तस पुत्र मदन सुनाम । तुम वृद्धभ्रात हुयो पुण्यधणी, फिर सुर पूछे आम ॥ ८ ॥ आवते भवे मुझे तेहनो, मिलाप होसे के नहीं नाथ । जिनेन्द्र कहें तुम तिहां उपज सो, सुणी त्रिदश हरखात ॥ ९ ॥

॥ ढ़ाल १ ली ॥ (कुबिसन मारग माथे धिग धिग—ए देशी) पुण्य थकी जीव सब

सुख पावे, पुण्य बिना पछतावे जी। पुण्यवंत पुण्यवंत घरे आवे, पुण्य से संजोग थावे जी ॥ पु० १ ॥ इम सुण जिनजी की वाणी, हरख्यो घणो दव मन जी। हरी ने बात मणारथ इच्छा हुई करणो प्रभूजी ने नमन जी ॥ पु० २ ॥ आयो द्वारिका गोपाल पासे, भी मंदिर की बाणी प्रकाश जी। मैं आय तुम घर सुख वासे, मदन ने म्हारे प्रीती थासे जी ॥ पु० ३ ॥ रस हार एक दियो अमोलक, गोबधन से हुर बोले जी। जे राणी यह हार पहर से, हूँ जन्म सूं तम खोले जी ॥ पु० ४ ॥ इम कही विमुख गयो निज स्थाने, कृष्ण मन मांहे विमासे जी। जो यह देव मामा उदर उपजे तो, शोक को क्लेश मिटासे जी ॥ पु० ५ ॥ मामा अने रुक्मणी कुमर ने, प्रीती बने आपस मांई जी। दोईनी मां मिल रहसे, फिर झगड़ो न होवे कोईजी ॥ पु० ६ ॥ गिरधारी हर्ष मामा ने धुलाई, हार देवे आतुराइ जी। यह बात विद्या मदन ने जणाई, मामा ने काम में लगाई जी ॥ पु० ७ ॥ प्रद्युम्न आयो रुक्मणी पासे, हार की बात प्रकाश जी। रुक्मणी ने वां र सती राणी, हेत घणोयो तासे जी ॥पु० ८॥ कहे रुक्मणी कोटि नंदन सरीसो, तूं एक छे मुझ सुख दायजी। दिवे बीजा पुत्रकी मुझने, नहीं छे किंचित चाय जी ॥ पु० ९ ॥ यादुवन गम रुक्मण ने भीष्म ए मातान एक पक एतजी। सिंहसू परा रथिक शोमक

तुम तिम मुझ घर सूतजी ॥ पु० १० ॥ पण मुझ भगनी जीवसूं प्यारी, जांबूवती घरजाव्रो जी । हार तणी सब विधि प्रकाशी, हरी कने तास दीरावोजी ॥ पु० ११ ॥ माता वचन प्रमाण करीने, जांबूवती घर कामजी । आया हार की वात जणाई, जांबूवती हर्ष पाम जी ॥ पु० १२ ॥ कहे कुमर जी मुझ हार दीरावो, न भूलूं थारो उपकार जी । मदन विद्या थी जांबूवती ने, करी भामा ने अनुहार जी ॥ पु० १३ ॥ गोविंद पासे जांबूवती आई, दोई वसंत क्रीडाने बागे जाई जी । हंसी रमी ने हार तस दीधो, ओलख्या विन गोपीराई जी ॥ पु० १४ ॥ सीख लेइ जांबूवती घर आई, अती आणंद पाई जी । सुपक्षी ते चिंतित पावे, निर्पक्षी पछताई जी ॥ पु० १५ ॥ आश धरी आई भामा राणी, पति पासे मांगे हारजी । हरी कहे दियो अभी वसंत क्रीडा में, हिव कांई मांगो सार जी ॥ पु० १६ ॥ भामा कहे स्वामी मुझे नहीं दीधो, कृष्ण तव आश्चर्य पाम जी । दूजो हार देई वरे पहोंचाई, भोलवी तेने समझाय जी ॥ पु० १७ ॥ लूणी तो लेगइ भागवंती, हिवे तक्र पीवो भर पेट जी । कर्मों सेती जोर केहनो, बांधा जो भोगवो नेट जी ॥ पु० १८ ॥ होणहार सो होवे निश्चय, पछताया सूं थाय जी । पुण्ये झल फल निर्फल सव, इम भोली भामा पछताय जी ॥ पु० १९ ॥ सतभामा अने जांबूवती राणी, पूर्व पुण्य प्रमाण जी । गर्भ धरी

दोइ जपी एक माये, मव सुत्तें युग प्राणजी ॥ पु० २० ॥ शुभ दीसीसे जांबूवती जी, जायो पुत्र सुखमाऽ जी । कैग्म जीव महा पुण्यवंतो, रूप कला गुण विशाल जी, ॥ पु० २१ ॥ तिणही वेळा मामा सुत जायो, ते पण पुण्यवंत प्राणी जी । लक्षण व्यंजन सर्व सुसंकर, छाती ठारी मातानी जी ॥ पु० २२ ॥ तिण वेळा तिण हीज नगरी में, सचिव सैन्यपती सुवार जी । तीनी घरे तीन पुण्यवंता जनम्या, उपनो हर्ष अपारजी ॥ पु० २३ ॥ पांचही साथ वधाइ आइ, हरी हरखा अती पाई जी । यथा जोग दी सब ने वधाई, घर २ मंगल वधाइ जी ॥ पु० २४ ॥ सांब कुमर नाम जांबूवती सुत, मामा को सुमान् कुमार जी । जन्मादि मोछव घणा कीधा, वरत्या मंगलाचार जी ॥ पु० २५ ॥ मंत्री पुत्र को बुद्धी सेन नाम दीनो, सेना पति नो जयसेनजी । पध नाम सारथी पुत्र को, ए तीनी नाम गुण पन जी ॥ पु० २६ ॥ शुक्ल पद ज्यूं सब ही वधता, गुण रूप तेज महत जी । पंचमें हुलासे अमोल पहली ढाले, प्रद्युम्न मित्र अ मत जी ॥ पु० २७ ॥

॥ दोहा ॥ सांब अने सुमान् जी, कुमर महापुण्यवंत । पंच धाय पालन करें, चंपक वेल ज्यूं वधंत ॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, भमर पुत्र युग जाण । मकरंद प्रेम प्राशन करी, वद हुया सुजाण ॥ २ ॥ क्रीडा करें मन भावती बहु भूषण उत्तम धार । ...

नेवरू, माता करे मनुहार ॥३॥ मोटा हुया विज्ञान वध्यो, सांबने मदन भणाय। अल्पकाले सर्वकला विषे. प्रवीण कीधो सवाय ॥ ४ ॥ भानू सिखायो सूभानू ने, इम दो दोइ वंधू जोड़। विद्या पूर्ण सर्व गुण निलो, खेलें कर२ होड ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल २ जी ॥ (दया पर दौलत झुक रही—ए देशी) सुपक्ष थी जय पामीये जी भाई, पुण्य थी सुपक्ष पाय कुमर। मदन सांब भानू सूभानू की भाइ, जोड़ी दीपे सवाय कुंवर ॥ सु० प० १ ॥ क्रीड़ा अनेक करतां थकां भाइ, आपा पण मित्र साथ कु०। भरी कचेरी में आविया, दर्शण लेवण तात कु० ॥ सु० २ ॥ पाय प्रणमी बावा पितानाजी भाइ, सबने करी जुहार कु०। सांब वेठा मदन कने जी भाई, भानू पे सूभानू कुंवार कु०-॥ सु० ३ ॥ उभय भानू उभय इंदू थी जी भाई, शोभे छे जंबू द्वीप कु०। तिम सभा दीपे नंद थी जी भाई, जादव नाथ समीप कु० ॥ सु० ४ ॥ बलभद्र अने पांडवाजी भाइ, देखण परीक्षा तिवार कु०। सांब सूभानू ने कहें जी भाई, इहां खेलो इच्छाचार कु० ॥सु० ५ ॥ मदन सखाई सांबका जी भाइ, भानू सूभानू पूठ कु०। जूवा खेले खांत सूंजी भाइ, मेली धन अखूट कुं० ॥ सु० ६ ॥ क्रोड सोनइया मेलीया जी भाइ, मांड्यो पहलो दाव कु०। जीत्या सांब कुंवरजी भाइ, पहली प्रद्युम्न प्रभाव कु० ॥ सु० ७ ॥ कूकड़ युद्ध दूजी

थारे जी माइ, जीत्या आंबावती साठ कु० । मुंहडो उतरयो सुमान् को माइ, मदन होइ दयाल कु० ॥ सु० ८ ॥ आधा २ सोनइया माइ, दोइ मषी थांटी दीष कु० । इम अनेक स्याल में माइ, जीत सांब की कीष कु० ॥ सु० ९ ॥ दूजी खेलत चार कोडी जीत्या जी थोड कु० ॥ सु० १० ॥ चौसठ जीत्या उठ बैठ में सत अठावीस अष खेलाय कु० । दोसे छप्पन युद्ध में माइ, सुम मामा अकुलाय कु० ॥ सु० ११ ॥ आई मामा कहे पांइ थी, थे किम षीणाडो कुवार कु० । सांब कहे अहो मात जी, थे क्यों पछतावो हुया हार कु० ॥ सु० १२ ॥ मामा कल केवी देखने, काम एक रुपाल न माय कु० । सुमान् ने जीता-इया जीतना सर्व कु० । मानू अर्घा थांटी करी माइ, सांब ने देवे घर गर्व कु० ॥ सु० १४ ॥ सांब कहे नहीं लेसरां, इम हार की कोडी एक कु० । मामा सुमान् ने लेगई, सब रद्या समा-शो दस कु० ॥ सु० १५ ॥ उदारता शामप निर्लोभता, जात अभिमान कला मोप कु० । प्रशंसे सांब ने सब जणा, सभा में वाह वाह होय कु० ॥ सु० १६ ॥ जीत तणा जे सोनइया थीयो माइ, सुवर्ण कोडी गडुताय कु० ॥ सु० १३ ॥ सांब दिया तब हर्ष थी कांई, सोन मार, सहवणी सांब सुजाण कु० । दानशाला मंडावी तिहां माइ, देवा वांछित दान कु०

॥ सु० १७॥ वित्त चित हुलासे खर्चता भाई, जाचक जन गुण गाय कु०। सांब ही सांबजी हो रहा भाइ, जन २ मुख के माय कु० ॥ सु० १८ ॥ एक जोजन भेरी सुणे जी भाइ, द्वादश जोजन गाजा कु०। दान थी कीर्ती सब देश में फैले, जाचक जन पोष ताज कु० ॥१९॥ अती प्रशंशा सांभलीजी तदा, हलधर दशही दसार कु०। धन २ अहो कुल दीपक, सब पामे हर्ष अपार कु० ॥ सु० २० ॥ कृष्ण ने कहे सभाजन मिली, तुम सांभलो जादवराय कु०। सांब कुमर गुण आगलो जी स्वामी, दान गुणे नाम दीपाय कु० ॥ सु० २१ ॥ तिण कारण आप तिण भणी जी स्वामी, देवो कांइ बकशीश स्वामी। दायक पायक पोषणा जी स्वामी, ए इच्छा हमनी महीश स्वामी ॥ सु० २२ ॥ कृष्ण कहे कांइ दीजीये जी भाइ, दंती अश्व नही चाय कु०। धन वस्त्र नी कमी नही जी भाई, अवर कांइ बक्षाय कु० ॥ सु० २३ ॥ राज देवूं तीन खंड को जी भाइ, कहो तो किता काल कु०। सब जन कहें मरजी राजकी जी हम, आप हुक्म में खुशाल कु० ॥ सु० २४ ॥ सांब ने तदा बुला-इया जी भाइ, घणो ओछव कराय कु०। एक मास को राज दियो जी भाइ, मस्तक तिलक चढ़ाय कु० ॥ सु०२५ ॥ आण फिराइ मुलक में कांइ, मदन सुणी हरपाय कु०। राज रिद्धि संपत साहिबी कांइ, देखी सांव फुलाय कु० ॥ सु० २६ ॥ द्वितीय ढ़ाल चर्म खंड की ए,

मांब को हुयो उपकार कु० । मदन भला हूओ सब सुखी जस, अमोलक भए उच्चार कु० ॥ सु० २७ ॥

॥ दोहा ॥ मांब कुमर राज पायने, भती चड़ो मद मांय । अगम पछम सोचे नही,
मांदी अनीति मचाय ॥ १ ॥ धन मद जोबन मद रूप मद, बलमद राजमद पाम । पद्यो
घणो अहकार में, करन लगो कुकाम ॥ २ ॥ जाति अजाति रूपवत, जोबनवत युवती
जोय । बला कार भगे शील तहनो, शंक न आणे कोय ॥ ३ ॥ शोर मच्यो घणो शहर में,
लोक हुया हैरान । किसको जाय पुकारिये, अनीति करे राजान ॥ ४ ॥ पक्ष जबर ने बल
घणो, तिणथी डरें सब लोक । वात गई हरी कान में हरीने उपज्यो शोक ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ (शांत धरमारी जावुं बलिहारी—ए देशी) जग २ धिक २ काम
विकारी ॥ टेक ॥ गोपी पती आया संपूवती पासे, चित चिंता देखी हरी प्यारी । करजोडी
नरमाइ ने पूछे, क्यों आज गया कुमलारी-कृपा कर देवो फरमारी ॥ ज० १ ॥ स्याम कहे
सुंदर तुम नंदन, अनीति मांडी अपारी । कुलनी लज्जा छोडी ने पकडे नगर की नारी—शील
भंग करे बलात्कारी ॥ ज० २ ॥ मा माख स्वामी सुत, पुग छे बालक मोलारी । पूर्ण बुद्धि
नहीं खातण पहरण की, मुं जाणे अनाचारी-वात आप बोलो विचारी ॥ज०३॥ एका एकी छे

नंदन म्हारो, जलें छें देख सोकांरी। दान थी कीर्ति फैली तेहनी, ते दुशमन सुण रूठारी-चुगली खाई आप अगारी ॥ ज० ४ ॥ कही सुणी बात पे चित्त नहीं दीजे, नयणे निरख करो परीक्षारी। पछे योगायोग देखने, बात कीजे स्वामी जहारी–ए विनंती अबलारी ॥ ज० ५ ॥ कहे हरी पंच परमेश्वर जगमें, झूठ न बोलें लगारी। मुलाहिजो राखे मोटा को, जिहां लग योग बरत्यारी–तहां लग राखे क्षमारी ॥ ज० ६ ॥ ना कोइ मुझ आगे चुगली खाइ, ना कोई चिंते खोटारी। अति अन्याय देखी सांब को, बिलबिले आपमसांरी–कहें नहीं शंक मोटारी ॥ ज० ७ ॥ बाड उठी खेतने चुग खावे, बोलावो होवे लुटारी। सगी माता छोरा ने कूटे, तो किण आगे जाय पुकारी–ऐसी गति हुइ प्रजारी ॥ ज०८॥ राजा पिङ्ग प्रजा को दाख्यो, अन्याय देवे मिटारी। राजा ही जो अन्याय करेतो, किप तरह रह प्रजारी–थोडे दिनमें होवे उजाडी ॥ ज० ९ ॥ साहेब आप समझावो मुझने, करीने विविध प्रकारी। पण मुझने प्रतीत न आवे, नजरे अण देखारी–ए बालक किम करे जारी ॥ ज० १० ॥ जांबूवती प्रत्यक्ष देखावा, कृष्ण करे उपचारी। जेहने बीती जाणे जिणरो मन, हरी पूर्व बात विचारी–बाल पणे भोगी गुवालना री ॥ज० ११॥ आप अहीर हुया डोकरा, अति कमर झुक गई ज्यांरी। डग २ सिर कर थर २ धूजें, नेत्रे गीड़ मुख लालारी–हाथ में लकड़ी

प

धारी ॥ ज० १२ ॥ जांबुवती न वर्ष सोल की, रूपवती करी महीयारी । नाग वेणी चन्द्रा
नन सोमे, शुक नाक कुरंग नमारी—होठ रक्त मुख चिलकारी ॥ ज० १३ ॥ विशाल छाती
उन्नत पयोधर, हरी कटी चाल हंसारी । शिर बोर बिंदी रासडी शोमे, नाकमें मोटी धारी,
काने झुमण झमकारी ॥ ज० १४ ॥ हार कंठे कटीमें कन्दोरो, पग नवर झुझारी । ए सब
गहणा कांसी पीतल का, तिण थी शोभालग मिणगारी—दीसे जोबन मतवारी ॥ ज० १५ ॥
आगे छोकरो ढग मग चाले, पाछे सरूपी नारी । लो दही दूध छाछ सीर लोभी, कोकिला
स्वर ऊचारी—आवग मांव ने घर धारी ॥ ज० १६ ॥ सांब देखी अति काम से पीड्यो,
मूर्ति मोहनगारी । इणने भोगी जन्म सफल करूं, खोटी इच्छा धारी—कहे गुवालण ने
पुकारी ॥ ज० १७ ॥ लाव मही में लेवूं थारो, दाम देवां जो इच्छारी । सर्व माल मारो
महीं सथार्को, होयक बडा व्योपारी—इम कही माग रोकधारी ॥ ज० १८ ॥ जांबुवती आंखे
घणी समझावे, स नहीं समझ लगारी । अहीर कहे हम ठामस धाधा, जो रह आज लज्जारी,
आगे दवो जावारी ॥ ज० १९ ॥ गुस्स भराइ छोकरा ऊपर, नीच पाडयो लात मारी । हाथ
पकड खेंची अहीरी ने, लेजावे महल मझारी—प्रगट हुआ तब मुरारी ॥ ज० २० ॥ रे दुष्ट
तूं मगीमाता से, इच्छे छ करवा जारी । धिक पडयो निर्लज्ज निठारा, किम अकल गइ

मारी—जांबूवती दीवी प्रगटारी ॥ ज ० २१ ॥ भय लज्जा घणी पाम्या सांब जी, छोड़ी कर भाग्यारी । जाय छिप्या ते महल के भीतर, हरी राणी दोइ फिरयारी-आया निज महेलारी ॥ज० २२ ॥ गोरी सूं कहे श्याम सलूणा, देख्या तमासा प्यारी । मैं कही सो कर बताई, तुम पुत्र की दुराचारी—जोई थें नयन निहारी ॥ज० २३ ॥ जे नहीं टल्या छे स्वमाता थी, ते बीजा थी किम टारी । अभक्ष भखे जे हूंस करीने, ते भक्ष किम तज्यारी—ए निश्चय निरधारी ॥ ज० २४ ॥ जांबूवती चुप रही शरमाई, जबाब नहीं दिया पाछारी । हरी सुखे निज ठाम पधारया, ढ़ाल तीजी मंझारी—अमोलक ऋष ऊचारी ॥ ज० २५ ॥

॥ दोहा ॥ दूजे दिन सांब कुवरजी, तिक्षण छुरी हाथ लेय । काष्ट तणी खूंटी करत, आया कचेरी जेय ॥ १ ॥ कृष्ण कहे अहो सांबजी, आज यह कांई काम । सो कहे प्रभू खूंटी करूं, हरी कहे कांई हाम ॥ २ ॥ सांब कहे जे कालकी, गुप्त बात प्रगट करेम । तेहना मुख मां ठोक सूं, एही तिक्षण मेख ॥ ३ ॥ सुण हरी अती कोपी कहे, रे रे धीठ निर्लज्ज । तुझ कहणी तुझ में करवी, एहवा थयो तू अज ॥ ४ ॥ जा देश निकालो तुझ भणी, मत रहे जिहां मम आण । राज नीति लायक सजा, दीवी कुंवर ने कान ॥ ५ ॥

॥ ढ़ाल ४ थी ॥ (प्राणी पुण्यवंत ने पारस लागे प्यारो रे—ए देशी) श्री मदन सांब

ने, सुमित्र सदा सुख कारो रे ॥ टेक ॥ सुण वचन इम कठिन तात ना, नूर उतरयो सांब मूंकारो रे ॥ श्री० १ ॥ करे विचार अब किहां मैं जाऊं, श्री खंड राज पितारो रे ॥ श्री० २ ॥ करत पश्चाताप आयो माता पे, नेम बरसे जल धारो रे ॥ श्री० ३ ॥ जननी चरण धर रुदन करे अति, अब म्हारो किम हुवे सुधारो रे ॥ श्री० ४ ॥ सा कहे स्मरण आ मदन आतने, ते करसे कांइ उपचारो रे ॥ श्री० ५ ॥ मदन पे जाई अति बिलखाई, चीतक करे उचारो रे ॥ श्री ६ ॥ कहे काम मात मती घबरावे, करूंगा कांई बिचारो रे ॥ श्री० ७ ॥ मदन कृष्ण से आई कहे नरनाह, सांब प्रिय बंधु म्हारो रे ॥ श्री० ८ ॥ कहो किम वेला आवे चरण वांछना कृपा करी कारज सारो रे ॥ श्री० ९ ॥ कहन कोप घसे कहे कामजी, एक उपाय आधारो रे ॥ श्री० १० ॥ मानू माता तेहने गज पे बैठावी, आप बैठी तस लारो रे ॥ श्री० ११ ॥ गाम में लावे तो ही अवावे, यो मान्यो कह्यो तुम्हारो रे ॥ श्री० १२ ॥ चिंते मन मथ माभा पहली चले छे, हुयो काम तम इच्छारो रे ॥ श्री० १३ ॥ ते इम त्रिकाल में नहीं लावे, रीस में कसो मुरारो रे ॥ श्री १४ ॥ पण तेही काम करिने बताउं, बीड़ो लेवयो तिण वारो रे ॥ श्री० १५ ॥ सांब पे आई बात जणाई, ते कहे तुम आधारो रे ॥ श्री० १६ ॥ दोइ बंधू आमा गाम ने बार, ज्यां छे बाग मामारो रे ॥ श्री० १७ ॥

सांव को रूप पुरुष को बदली, विद्यासूं कियो कन्यारो रे ॥ श्री० १८ ॥ कनक वरणी चंद्रानननी बाला, मृगनयणी सिंह कटी सारो रे ॥ श्री० १९ ॥ नमणी खमणी मन रमणी मोहनी, सोले करी शृंगारो रे ॥ श्री० २० ॥ सब विध सीखाइ सेली बाग में, आप रह्यो झाड़ आडो रे ॥ श्री० २१ ॥ थोड़ी देर में भामा तिहां आई, कुंवरी देखी रूप अपारो रे ॥ श्री० २२ ॥ सोही माननी आई तिण पासे, निरखे बारम्बारो रे ॥ श्री० २३ ॥ पूछे तूं कुण किम फिरे इण बन में, फिकर में चित दीसे थारो रे ॥ श्री० २४ ॥ सा रोती भामा ने आई बलगी, भामा विश्वामी खोले बेठारो रे ॥ श्री० २५ ॥ घबरावे मत कहे तुझ हकीकत, ते करे तब ऊचारो रे ॥ श्री० २६ ॥ मैं पुत्री त्रिखंडीश भूप की, मोटी हूई मोसारो रे ॥ श्री० २७ ॥ मामी को प्रेम म्हारा पे घणों थो, अंतर न चाहती लगारो रे ॥ श्री० २८ ॥ उपवय हुइ मैं तात जाणी मुझ, व्याहकरण ने हमारो रे ॥ श्री० २९ ॥ मामा सदन थी निज घर ले चाल्या, इहां आई कियो उतारो रे ॥ श्री० ३० ॥ सब जणा निश में सूता सुख थी, मुझ आगम नहीं निद्रारो रे ॥ श्री० ३१ ॥ मामी वियोग साले घणो मन में, उतरे न मन थी क्षण वारो रे ॥ श्री० ३२ ॥ पिछली राते सूती में पृथ्वी पट पे, लागी नींद हुयो उजारो रे ॥ श्री० ३३ ॥ उठ जोवूं तो साथ छोड़ गयो मुझ,

मैं हुई अब निराधारो रे ॥ श्री० ३४ ॥ हवे माता सरणो छ तुम्हारो, मावे तारो मावे मारो रे ॥ श्री० ३५ ॥ सुणी वचन मामा हरखाई, आण्यो साचो साहूकारो र ॥श्री०३६॥ ढाल चौथी ए कही अमोलक, हरख्यो काम कुंवारो रे ॥ श्री० ३७ ॥

॥ दोहा ॥ भोळी मामा समझे नहीं, कपटी कला लगार । ठग ठगे मीठाबली, भोळपे ठगावे गंवार ॥ १ ॥ विच्छू ने विष पूंछ में, व्यालविष दाढ होय । ठग ने विष हीये बसे, शाणा समझे सोय ॥ २ ॥ आंबा जांबू बद्रीफल, खारक खजूरा ठग । ऊपर दीसें सुहावणा मांहे कठिण रग कग ॥ ३ ॥ सरल ने एक बारखी, ते रोकावे झट । कपटी गळी अनेक छें, ते निकल आवे पट ॥ ४ ॥ मामा ने ठग लारे लग्या, ते ठगावे वारूंवार । भोळी न समझे भोलडी, फंसे ते माल मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ (नहीं संदेह लगार नीरोपम—ए देशी) ठग लागा भोळी मामाके लार, ते ठगाई पछ्तामी । कुंवरी रूपे अति मोहामी, बोले इम मधुरी वाणी ॥ ठ० १ ॥ जो तू मम पुत्र सुभानू के साथे, ब्याह करण को चाय । तो मम घरमें तुमने लेवूं, राख्ं प्रीति सवाय ॥ ठ० २ ॥ सा भाखे सुणो स्वामनी साची हरी सुत तुम को जायो । ते ब्हारा प्राणे प्यार थावे सो, बीजी कांई मम चायो ॥ ठ० ३ ॥ तठपा श्री परमेश्वर मझपे त्रिसंढपती

वहू थाऊं, अती आनंदे वरसूं तुम पुत्रने , मैं थारे संग आवूं ॥ ठ० ४ ॥ दूध छाछ घोली देखी भामा, एक ही सरीख्यो जाण्यो । सुभीं अकंपय अतर केटलो, ते विचार न आण्यो ॥ ठ० ५ ॥ आप जेष्ठ गजवर के ऊपर, आगे सांब बैसारयो । लेइ चली मध्य–बजार से निज घर, सांब को कारज सारयो ॥ ठ० ६ ॥ मदन ए देखी हरख्यो मन में, करयो उपाय हुयी सिद्धी। निज घर आइ रहे आणंद में, माता ने धीरज दीधी॥ ठ० ७॥ हिवे भामा सांब कुंवरी केरो, विनय करे निश दीस। न्हावण धोवण भोजन वस्त्र, भूषणादी पूरे जगीश ॥ ठ० ८ ॥ इम करंता बसंत ऋतु आई, फूलाइ बाग वाडी । भंवर गुंजारव करें कदंब पर, कोकिला बोले गाढ़ी ॥ ठ० ९ ॥ दुःखी विरहणी नो विरह जगाणो, सुखिया ने अधिक सुहाणो । कामदेव को मंत्री बखाण्यो, नाना रागणिये गवाणो ॥ ठ० १० ॥ सांवरी कुंवरी सखियां साथे, रमवा बागमें आई । हींडो घाली हींचे तरुतले, सखिया गीत भला गाई ॥ ठ० ११ ॥ कुंवर सुभानू भूषण वस्त्र सज, रमतो मंत्री संघाते। आयो तिणहीज वन के मांही, जोई हींचती रामा ते ॥ ठ० १२ ॥ भौंह कबाण नयण किया बाण, अहेड़ी नार ताण मारे। कामी कुरंग पशु सम कूदें, तस फंद पड़ी जीवत हारे ॥ठ० १३॥ देखी मोहिनी मनमथे वींधाणो, मुरछाणो पड़्यो धरणी पीठ । मंत्री उठाय तस घर लायो,

पूछ्या थी क्यों नारी दीठ ॥ ठ० १४ ॥ मामाजी ने खबर त पाई, कह पुत्र मत घबरावो। म तुम न परणावा राखी, हवे करूं शीघ्र ओछाओ ॥ ठ० १५ ॥ सौ कन्या तो पहली करी मठी, एक मोमी ए मली पाई। ओछव मांडयो सुमानु ब्याह को, रूडा लग्न दखाइ ॥ ठ० १६ ॥ त समे सांवरी कुंवरी कह मामा थूं, मथ कर पर कर घर थूं। हाथो हाथ दमूं तुम सुतने मथ रापी ने मैं परूं ॥ ठ० १७ ॥ मोली मामा मद न पावे, ते कइ मो करे प्रमाण। लग्न दिन मब चंवरी ग आर्ने कर मोटो मढाण ॥ ठ० १८ ॥ विप्र कर ग्रहे दाधिण कुंवरी को, तिण हाथो आगे कीधो। पूछंता सो मामा ने बतावे, मामा हंकारो दीधो ॥ ठ० १९ ॥ मब जन देखता हाथा हाथ सूं, सुमानू को हाथ सायो। जीमण हाथ मोई कन्या को, कर में ले कर दबायो ॥ ठ० २० ॥ परणी पती वी गया महल में, सज पे मांय जी बेठा। रूप प्रगट पोता को कीधो, सुमानू ऊभा हूगा ॥ ठ० २१ ॥ भक्ती नगर कई सुमानू थूं, भागी जा जो सुख पावे। दखी मांब सुमानू घस्कायो, दोडी मामा पास आवे ॥ ठ० २२ ॥ मांस मरयो आसो देख्यो कुंवर ने, मामा जी छाती स लगायो। पुछ मात लाल क्यों घबरायो, इण भक्त मागी किम आयो ॥ ठ० २३ ॥ मो कह मुझने मांव माई मारे, ते अपन घर में मीराज्यो। मामा कह र कर पण मोला

सांव किहां थी आयो आजो ॥ ठ० २४ ॥ कर पकड़ी लायो शयन महल में, मांजी ने सांव बतायो। सांव उठ्यो हरखी वड माता देखी, ऊभो रह्यो लग पायो ॥ ठ० २५ ॥ देखी सांव भामा जी अंगे, क्रोध अग्नि सिलगाणी। रे धूर्त लंपट विना वुलायो, क्यों आयो हम घर म्यांनी ॥ ठ० २६ ॥ सांव कहे माजी झूठा मत बोलो, थें गज पे बेठाइ मुझ लाया। दक्षिण हाथ सोइ भामनी मुझ ने, खुशी थी परणाया ॥ ठ० २७ ॥ सकल लोक साखी इण बात का, अब क्यों मन घबरावो। ए सोइ रामा छे हमारी, फोकट माम न गमावो ॥ ठ० २८ ॥ हुइ खिशाणी भामा राणी, बोले कडवा बोल। तात मात भाई ठग थारा, तुं पण ठग ते तोल ॥ ठ० २९ ॥ हेमागंद राजा की कुंवरी, आदि शत राणी साइ। आइ जांबूवती ने पग लागा, माता घणी हरपाई ॥ ठ० ३० ॥ ढ़ाल पांचमी पांचमां खंड की, काम जोगे सांब सुख पायो। कहे अमोलक भामा राणी, चुप बेठा घर में जायो ॥ ठ० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ प्रात समय काम सांबजी, आइ नम्या हरीपाय। बीतक वात सभी तदा, काम हरी ने सुणाय ॥ १ ॥ मकरध्वज कला देखने, गरुड़ध्वज अती हरपाय। भामा ठगाई जाण ने, हांसो पेट न माय ॥ २ ॥ सौ कन्या अन्य भेली करी, सूभानू ने परणाय। सुख भोगे पंच इंद्री का, मदन सूं डरे सवाय ॥ ३ ॥ एक दिवस वसुदेव सूं, सांब लाड़में

में आय । कहे दादा जी परदक्ष फिरी, थे नारी घणी परण्याय ॥ ४ ॥ आप प्रसादे मैं इहां रही, एक ही रात के मांय । सौ नारी ने परणियो, विन मेहनत महाराय ॥ ५ ॥ कहे पद्युम्न तुम बड़ा सर्व परवार के मांय । हरीवंश उजवालण, काम सांभ करवाय ॥ ६ ॥ सुने रह काम सोच जी, मन गमता भोगें भोग । हिवे मदन वैदरभीनो, सुणो जिम मिले संजोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ (श्रावक श्री वीर ना थपाना धामी जी–ए देशी) मोहन गारा मदनजी, थिया बत्तीसा सवाया हो ॥ टेक ॥ एक दिन रुक्मणी चितवे, सुत भ्रात की पुत्री स्वरूप । कामणगारी कामनी कांई, कांती कला अनूप ॥ मो० १ ॥ वैदरभी यूं कामनो जी, जो होवे घर वास । सुतनी सरीसी ते शोभती जी, मिल्या थी पूरो आस ॥ मो० २ ॥ भूवा भतीजी मिल के रहस्यां जी, सुतने हो से आधार । इत्यादि केई मन तरग यूं जी, रुक्मणी करे विचार ॥ मो० ३ ॥ दूत अनोपम सज करी थी, कहे कुन्दनपुर जाय । रुक्मइया नरपाल से मुझ, कीजे आशीश सलाम ॥ मो० ४ ॥ तुम बहन पुत्र मदन भणी थी, देवो वैदरभी बाल । इम सुण दूत ते चालीयोजी, आयो कुन्दनपुर जिहां नृपाल ॥ मो० ५ ॥ जय विजय रहो इम बधावनेजी, रुक्मणी को द आशीश । वैदरभी देवो मदन नेजी, तुम बहन की पूरो

जगीश ॥ मो० ६ ॥ सुण रुकमइयो पर जल्यो, तब कीधा रातरड़ा नेण। पूर्वलो वैर संभार ने, बोले कड़वा कुवेण ॥ मो० ७ ॥ कपटी कालो गुवालियो छे, मुझ हाड़ वैरी पूर। तिणथी म्हारी रत्नावली ने, राखूं सौ कोसा दूर ॥ मो० ८ ॥ बहन अच्छे कुलंछनी, तिण मुझ ने लगायो दाग। भाणेज कुवंशे ऊपनो, तिणथी न देवूं महा भाग ॥ मो० ९ ॥ जो वर न मिलसी पुत्री जोगो, तो कुंवारी राखूंगा घरमांय। जादू घर थी चांडालने घर, दीधी पुत्री सुखपाय ॥ मो० १० ॥ अनादरे दूत फिरी करीजी, आयो रुक्मणी पास। मदन कुंमर बैठा थकां, सब बात दीवी प्रकाश ॥ मो० ११ ॥ दूत मुखे भाई वचन सुणी जी, कृष्ण अंगना मुरझाय। उपकार बचाया नो भूली पापी, बोले अघटित कुवाय ॥ मो० १२ ॥ माता चित्त चिंता टालवाजी, कामने सांब कुंवार। आया शीघ्र कुंदनपुरे जी, परणन वेदर-भी नार ॥ मो० १३ ॥ रूपकला गुणे शोभतां जी, चंडाल को करयो भेप। वीणा वंशी सीतार तबला, झांजली बजावण कलाविशेप ॥ मो० १४ ॥ संगीत स्वर साधने जी, गावें किंनर नाद। सांब कुमर तान तोड़ने जी, वजावे वाजित्र वाद ॥ मो० १५ ॥ तीन ग्राम पे थंभता, स्वर सात ही लेता ताण। मुरछना एक वीस मोड़ता, तान गुण पचास का जाण ॥ मो० १६ ॥ तेह नादे मोह्या थका जी, वनचर आया दोड। पक्षी छाया गगन

म जी, सुन शब्द तान तोड़ ॥ मो० १७ ॥ राजा राणा सेठीया जी, मार्मंत बाल गोपाल।
मोया मब हुया एकठा जी, तोड़ें तान ओपें स्याल ॥ मो० १८ ॥ नारी नावे बेसुध हुइ
करी, उलट पुलट सिणगार । भरतार बालक छोड़ने, दोड़ी आई तिहां घणी नार ॥ मो०
१९ ॥ पर २ नाचे पषणी जी, लाजमर्यादा छोड़ । गगन में थंभ्या देवता जी, कुण करे
मदन की होड़ ॥ मो० २० ॥ चार वेद ने ए सीरे जी उपवेद पांचमो राग । मनमथ को
वालो मंत्री जी, महीला ने वाहलो अथाग ॥ मो० २१ ॥ मोहनी मत्रे सब वश किया जी,
इय न किषरो उपजंत । काम समी ते भूलिया जी मार्संग पर रार्षंत ॥ मो० २२ ॥ करे
प्रशंसा मब घणी जी, रूप राग गुण दोय । जाव किम ओछी पामीया जी, पह नर्चमो
होय ॥ मो० २३ ॥ छनाछ१ कुछ नहीं गिणें जी, गुण रागी जन जेह । टोला ना टोला
मिलीजी, लारे फिरें घर नेह ॥ मो० २४ ॥ माम माहे शोर मषी रह्यो जी, राग तणे वस
लोक । हाल छठी अमोलक कही जी, पुण्य थी सगला थोक ॥ मो० २५ ॥

॥ दोहा ॥ नर नारी वृंद परवरया, मदन ने सांब कुमार । राज कचेरी आवीया, जिहां
कृष्णदयो सरदार ॥ १ ॥ गावे गान ऊचा सरे, सुण बेठरमी कान । दोडी आई ममा विषे
पठी सोन्हे राजान ॥ २ ॥ गायन सुण रूप देखने, मोही घणी मा बाम । मेघोन्मे ... मी

रही, तन रूप चतुराई विशाल ॥ ३ ॥ जिम २ जोवे सन्मुखे, तिम २ जागे प्यार। पूछे किहां थी आवीया, अहो तुम सरदार ॥ ४ ॥ अहो कुंवरी हम स्वर्ग थी, आया मृत्यु लोक मांय। ग्राम नगर घणा देखीया, पण द्वारका सम नांय ॥ ५ ॥ स्वर्गपुरी की उपमा, दाता भुक्ता लोक। कृष्ण नरेश राजीया, सब वस्तु का तस थोक ॥ ६ ॥ कहे कुंवरी त्याना नरेन्द्र के, छे कोई कुंवर काम। थे जाणो तो वरणवो, केवो छे तस नाम ॥ ७ ॥

॥ ढ़ाल ७ मी ॥ (जिंदवारे मोरी जान—ए देशी) काम कुंवर शोभागीया, महा गुण की है खान। सर्व विद्याका निधान, अच्छे महा भागवान ॥ टेक ॥ सांब कहे सुण सुंदरी, श्री मदन कुंवार। रूप पुरंदर सुंदरू, आप कियो कर्तार ॥ का० १ ॥ उदार चित्त अति तेहनो, ते छे मोटा जी दातार। तिणरी उपमा त्रिश्वमें, मिले कोइ न लगार ॥ का० २ ॥ तिणरी उपमा सबने लगे, तस लागे नहीं कोय। पुरुषोत्तम यू ते प्रभू—देखत तन मन मोय ॥ का० ३ ॥ रूप अधिक छे इंद्र थी, स्वरे किंनर गया हार। बलवंत जादव बसुदेव थी, सूरा शारदूल थी जहांर ॥ का० ४ ॥ दातारे वैश्रमणने जीत्या, मूर्ति सौम्य लाजे सोम। तेज अग्नि थी अधिक छे, सब पामे तिण थी जोम ॥ का० ५॥ सत शीलवंत रामचन्द्र सो, रवि सो तेज प्रताप। सुरनर किंनर खग विषे, अधिक शोभा पामी आप ॥ का० ६ ॥ रूड़ा

रूड़ो पमो , मीरे मीर मेकार । अखूठ पुण्य थी पामीये, काम सरीखो भर्तार ॥ का०७॥
इत्यादि मोप कुंवर जी किया काम का बखाण । तुम कुंवरी रंजी घणी, थारी न्हासूं विष
प प्राण ॥ का० ८ ॥ परणूं तो काम कुंवर ने, नहीं तो निरवय करूं घात । काम बिना
बीजा मानवी, सुम मगा भ्रात तात ॥ का० ९ ॥ एतके देव ना जोग थी, भूपनों पाटवी
गजराज । मद मथ पाछो हो छूटीयो, करे मोटो अकाज ॥ का० १० ॥ रुक्मइये राम तब
फेरीयो पीड़ो मरी सभा माय । दंती पत जे लावसी, ते मांगे सोई पाय ॥ का० ११ ॥
मदन पीड़ो सलने, आयो मयंगल पास । राग मकी पत आप ने, निज स्थान थाम्यो वास
॥ का० १२ ॥ संतुष्टी कहे रुक्मइयो, मांगो सोवाण जे थाय । वांछित आपूं तुम मणी,
रंक राखो कुछ नाय ॥ का० १३ ॥ इम कहे आप मखार थी, थाप कमी नहीं काय। एक
चाहिये रोटी करनहारी, तो सब बातें सुख पाय ॥ का० १४ ॥ तिण कारण मेदरभी कुंमरी,
देवो हमपर कृपा लाय । सुमसो वर नहीं पामसो, जोता मही मंडल मांय ॥ का० १५ ॥
सुण रुक्मइयो कोपियो देवा लाग्यो भूरी गाळ । मंगी गमार नीच हुए तूं, पोले नहीं र
संभाल ॥ का० १६ ॥ राज कन्या मेहतर मणी सूत किम थी देवाय । इसो पाछो जो
बोलसे, तो देसी मारी थाप ॥ का० १७ ॥ मदन कहे सुण राजवी पाछी बोल्यो बिन

वचन बदले जे मानवी, ते सब थी गंवार ॥ का० १८ ॥ थां कह्यो मांगो जो देव सूं, मांगी मुझ ने जे रुप। नटते लाज आवी नही, क्षत्री छो के कोइ गप ॥ का० १९ ॥ धिक २ तुम्हारी जातने, छो म्हारा थी खराब। माठो लगाड़ो मां बाप जी, म्हांतो दीधो ए जवाब ॥का० २०॥ खीज्यो राजा रुक्मइयो, तम धका दीराय। काढ्या गांव ने बाहिरे, मंगत मारया नहीं जाय, ॥ का० २१ ॥ निज २ ठाम गया सब जणा, रह्या मेहतर ने संभार। बेपरवाही गुण किंनरा, धन २ तम अवतार ॥ का० २२ ॥ कुंवरी गई उठ महल में, काम वस्यो तस मन। राते सूती निज सेज पे, आंख लागे नहीं क्षन ॥ का० २३ ॥ मदन उड़ी निश ने समे, गयो कुंवरी के पास। निरखी प्रभू ने खुशी हुई, इम करे अरदास ॥ का०-२४ ॥ कोण आप किहां थी आवीया, कांइ नाम कांइ ठाम। पत्र लिखित कुंवरी सामे, मेल्यो कुंवर काम ॥ का० २५ ॥ रुक्मणी को आशीश बांचता, पूछे दोइ कर जोड़। आपको नाम फरमावीये, जाग्यो अति मुझ कोड ॥ क० २६ ॥ मदन कहे तुझ भावतो, हूंछूं कुंवर काम। मंजोग मेल्यो एकांत में, अब पूरो तुम हाम ॥ का० २७ ॥ जे मन माने आपको, सोई करवो नारीकंत। जन्म खुटावो तिण संगे, बिचारो थे मतिवंत ॥ का० २८ ॥ कुंवरी पीतांबर पेरियो, कंकण डोरो बांध्यो हाथ। आरण कारण सांचवी, कीधो प्रद्युम्न तदा

नाथ ॥ म्र० २९ ॥ श्ररवरी वास तिहां रह्यो, प्रभाते उठी कुमार । सांब नी पासे आवीया, दास्यो सब बिचार ॥ का० ३० ॥ सांब कुंवर खुशी हुयो, ए मारमी हाल । ऋषि अमोल कहे पुण्य थी, परण्या वेदरमी भूपाल ॥ का० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ मदन गया पछे वेदरमी, सती निद्रा वश होय । रात्री जागरण जोग थी, दिन उगयारी खबर न कोय ॥ १ ॥ धाय माता आवी तदा, दारुण भारी हाथ । परणन चिन्ह देखने, अति ही हुई भय भ्रांत ॥ २ ॥ रात्री में इम किम भगे, लगाई लीधो ब्याव । जननी जनक आज्ञा बिना, कीधो मोटो अन्याय ॥ ३ ॥ रीम भरायी सा गई, राजा राणी पास । देखी हकीकत आंख स्यूं, सब तिम करी प्रकाश ॥ ४ ॥ सुण दपती आश्चर्य हुया, शीघ्र आया तिहां चाल । ब्याव लक्षण देखी करी, कोप्यो सागे काल ॥५॥

४ ॥ ढाल ८ मी ॥ (सम विनवडी अवधारो, शाहिब श्री मंदिर जिनराम–ए देशी) भाग बडो छे काम कुंवर को पाम्या सुख शुभयोग ॥ टेक ॥ लात मार कुमरी ने जगाई, सा उठी तब घबराय । अंगो पांग ढाकीने बैठी, घणी मनमां भरमाय ॥ मा० १ ॥ रे निर्लज्जा सत्य बोल किम, संगे कीधा ए खोटा कर्म । कुंवरी शर्म घर काई न बोले, तिमर राय होवे गर्म ॥ मा० २ ॥ कहे राणी मुं रुकमइयो राजा कमधजी केसरी पर ।

विष वेल सरीखी जन्मी, कुल में पूरी वैरण छेह ॥ भा० ३ ॥ इण पापणी ने कारण म्हारी, निर्फल कीधी वाच । गाल्या खाई डूम ना मुख थी, दुष्टणी गुण पे राच ॥ भा० ४ ॥ विणठो पय नहीं घरमें राखणो, न्हांखणो उकरडी जाय । तिम ए नहीं छे राजकुल जोगी, मातंग घरे शोभाय ॥ भा० ५ ॥ मातंग तेडाया ते झट आया, भूप कहे मांगो जे चाय । काल तणो वाक्य पार मैं पाडूं, झूठ को दाग मीटाय ॥ भा० ६ ॥ ते कहे दो तो वेदर्भीदो, और न चहिये सोय । कुंवरी सुप्रत कीधी तेह ने, देर न कीधी कोय ॥ भा० ७ ॥ डूम कहे तुम सत देखण ने, मांगी कुंवरी एह । राज कन्या नहीं हम घर शोभे, बीजो और कुछ देय ॥ भा० ८ ॥ दोय पेट हम भरां मुशकिल थी, ए हमथी किम पलाय । सुकमाल कन्या राज तणी छे, सेवा करणी पड़े सवाय ॥ भा० ९ ॥ राजा रोस वसे कह दीधी, करावो सब तुम काम । चलावजो थारा हुक्म के मांही, अठे रह्यो इणरो आराम ॥ भा० १० ॥ इम सुण ने रोवा लागी कुंवरी, तव गुप्त रात की वात । मदन महीला वेदरभी ने, संकेते दरसात ॥ भा० ११ ॥ लोक देखंता रोती वाई, मन में हर्ष अपार । कामने लारे जाइने ऊभी, चाह्यो मिल्यो भर्तार ॥ भा० १२ ॥ आडे हाथे घी घणो आवे, तिम ते मदन कुंवार । नाना कहतां आइ मिली छे, गमती वेदरभी नार ॥ भा० १३ ॥

न चाल्यो सत गाम न धारे लोक दस्य अचरज पाय। कोई निंदे कोई प्रशंसे राय ने, निज ठाम त आय ॥ मा० १४ ॥ मांघ जी कहे सब कामजी तोई, आपो अधाया विन। जाणों जुगतो नहीं आपने, करो कला कोइ प्रवीन ॥ मा० १५ ॥ मिथ्या प्रभावे गामने धारे, नव रंगो महल मचाय। बहु धमा ने रब अदीयो, नव रंगे सोभाय ॥ मा० १६ ॥ नाटक नगाये विचमें मारी, वाजिंत्र बहु प्रकार। बनावें गावें बहु सखूना, नाचें पातर सुलक्कार ॥ मा० १७ ॥ काम मांव मेदरमी तीनू, बहुमोला कर सिणगार। सिंहासण बेठा शोभें इंद्र सम जोने स्याउ विविध प्रकार ॥ मा० १८ ॥ तिणही महल ने बारे मांडी, मोटी दान देवा माल। आनंद पोषतां कीर्ती पसरी, लोक जोवा आवें स्याल ॥ मा० १९ ॥ दिवे दूजे दिन रुकमइया भूपनो, रोस हुयो मन शांत। पछतावो करे मन नी सामे, मोहली थप छ आंत ॥ मा० २० ॥ पूत कपूत होवे जो कदी, मापितु खोटा नां होय। मातंग ने दी प्यारी कन्या, धिकार पडो बुद्धि मोय ॥ मा० २१ ॥ पापी निपजाव काठ मोटको, त नास होय करे शिरताज। तो शम तेने हजोये नहीं से, ए मापितु का पाट ॥ मा० २२ ॥ क्रोध वस में अध होइने, अती खोगे करयो काम। न कुछ भाल ने कारण में तो, पुत्री ने दी हूकाम ॥ मा० २३ ॥ इम विचारतां कोई कह्यो आ, गामबाहर ना समाचार। दान

तणी महिमा सुण काने, भट मेल्या तिणवार ॥ भा० २४ ॥ भट आई पाछो कह्यो स्वामी, कृष्ण पुत्र कोई पुण्यवंत । सुण अचंभे होइ ने भाग्यो, आयो जिहां कुवर रहंत ॥भा० २५॥ दोड़तो छूटी चाले आतो दीठो, मामाजी ताम । दोइ भाई उठ सामे आया, लुल २ करें प्रणाम ॥ भा० २६ ॥ उठाइ निज छाती से लगाय, रुक्मइयो पाम्यो आनंद । ओछव करिने राज में लायो, दूर टल्यो दुःख द्वंद ॥ भा० २७ ॥ पुरजन देखी अचरज पाया, धन २ जादव वंश । बाप सरीखा पुत्र ऊपना, कुल मांहे अवतंस ॥ भा० २८ ॥ सासू देख जमाइ ने हरखी, करी घणी मनवार । किताक दिन पावणां राख्या, दीधो दायजो अपार ॥ भा० २९ ॥ लेइ वेदरभी द्वारका आया, मात तात ने लाग्या पाय । चायती बहू ने माता ने चरणे, थोड़ा दिन में दई लगाय ॥ भा० ३० ॥ जे जे चिंत्या बोलडा मन में, ते ते पाड़्या पार । मात पिता सज्जन हर्षाया, खुशी हुवो सब परवार ॥ भा० ३१ ॥ सांब अने प्रद्युम्न कुंवर की, अति प्रीति आपस मांय । मन एकने तन दो दीसें, दूध पाणी के न्याय ॥ भा० ३२ ॥ जादव कुल सिर सेहरा सरीखो, दीपे काम कुंवार । सब जन शका मानें तिणरी, कीर्ति फैली अपार ॥ भा० ३३ ॥ पंच इंद्री का सुख भोगवें, वरते निज इच्छाय । पर भव केरी पुण्य कमाई, इहां रह्या छें खाय ॥ भा० ३४ ॥ माँ इच्छा पूर्ण

— ——— ने ... गाय ... लोक देख अचरज पाय। कोई निंदे कोई प्रशंसे राय ने, निव
वेदरमी मिलम की, पांच सह आठमी ढाल। अमोलक ऋषि कहे सांमलो, आगे धर्मकथा
सुरसाल ॥ मा० ३५ ॥

॥ दोहा ॥ नेमीनाथ स्वामीसर्मा, तीर्थङ्कर मगवान। चौतीस अतिशय शोभता, वाग
र ५तीस धाण ॥ १ ॥ सहस्र अठारा मुनिवरो, आरजा चालीस हजार। क्रोड़ देवगण पर
परया, विचरें मध्य लोक मंझार ॥ २ ॥ मिथ्या तिमर विनासता, करता धर्म उद्योत। भव्य
गणन भवोदधि तारता बेठादी धर्म पोत ॥ ३ ॥ पधारया द्वारका बाहिरे, देव रमण
उद्यान। आज्ञा ले वनपाल की, उतरया योग स्थान ॥ ४ ॥ वन पालक भेटणो लेइ, आयो
जादूसमा मांय। दीधी वधाई जिन समोसरया, सुणी सब जन हर्षाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ (श्री जिन आया हो सोरठ देश मंझार—ए देशी) हरी हर्षाया हो,
सुणी जिन आगम वात, सिंहासण थी खाली उतरया। श्री जिन सामे हो, कीधो लूली
नमस्कार नमो थुर्ण देइने नमन करया ॥ १ ॥ राज चिन्ह वर्जी हो, सब भूषण उतार,
वधाइवाने सब आपीया। भेरी बजाइ हो, सजाइ सेन्या तेयार, अश्व रथ पायक हाथीया
॥ २ ॥ आप विभूषित हो, हुइ हुया गज असवार सब परिवार साथे लिया। बाग में
आया हो, पच अभिगम मांन, विधि युक्त वंदना किया ॥ ३ ॥ काम मांय कुंवर हो

भानू अने सुभान, निज २ महले सुख भोगता । मब जन जाता हो, देखी नफर सूं तेवार, पूछें क्षयउपसम जोगता ॥ ४ ॥ ए क्यां सिधावें हो, दर्शावे दाम तेवार, श्री नेमी नाथ पधारिया । सुण खुशी हुया हो, करी यथा योग श्रृंगार, जिन दर्शण भणी चालिया ॥ ५ ॥ प्रभु पे आई हो, वंदणा यथा विध कीध, बैठा मर्यादा युक्त तिहां तदा । चार देव देवी हो, युगल मनुष्य तिर्यञ्च, ए बारे भरी परखदा ॥ ६ ॥ अरिहंत भाखें हो, सिद्ध ने शीश नमाय, भो भव्य सुणो स्थिर चित्त करी । दश दृष्टांते हो, दुर्लभ नर अवतार, पाय अनंत पुद्गल विश्वभरी ॥ ७ ॥ इणने चाहे हो, सुरेंद्र मोक्ष कारण, एह सो थाने अब इहां मिली । अफल म गमावो हो, म मुरझावो मोह मांय, लावो लेवो हो सूत्र समुद्र झीली ॥ ८ ॥ अनित्य थे जाणों हो, धन कन जन घर वास, सांम निकल्या थी किणरा नही । पुण्य खूट्या थी हो, रिधी देखत विरलाय, आय मिले पुण्य थी सही ॥ ९ ॥ जिण रे काजे हो, करो कर्म अकाज, ते थारे काम नही आवसे । कुटुम्ब स्वार्थी हो, परमार्थ करण न देय, आंप किया फल पावसे ॥ १० ॥ पूर्व करणी थी हो, इण भव पाया छो राज, काज करया सब चावता । नरपति सुरपति हो, जीत्या पराक्रम पूर, सुर हुइ ने पग लगावता ॥ ११ ॥ जे जे चिंत्या हो, ते ते पूर्ण करया काम, हाम तोही न पूर्ण हुई । हिव कांइ करमो हो,

थारी एप ये आय, फांस पडी गल फन्दी वासो मुई ॥ १२ ॥ रवि शुव मलीयो हो, टलीयो किण थ ते नाय स्वाय गयो हो सुरेंद्र धामी मणी । थारी किसी गिणती हो, किसो ओर छ तुम पास फांसी काठ की तोडो तणी ॥ १३ ॥ निर्भय ते स्वामी हो, लेआसी अन्यमथ मांय, माई कुम तिहां तुम तणो । कोई पत्र आयो हो, के बंधायो मकान, धान धन अन पहुंचायो घणो ॥ १४ ॥ कोई थे सेठा हो, घेठा छो घेठाजी होय, लेनो नहीं स्वरची संग ज चले । जरा विचारी जे हो, कोई आवे तुम साथ, आय समझो ज आगे थाने मिले ॥ १५ ॥ फक्त सत्ताई हो, माई धर्म दोई मत्र, सत दोय भेद भाव सांभलो । श्रुत चारित्र हो, श्रुत ते सुणवो आगम, गम पड सब हस्ते ओंचलो ॥ १६ ॥ चारित्र ना दास्या हो, तिम ही दोय प्रकार, आगार अणगार जाणीये । श्रावक कहीये हो, व्रती अव्रती ए दोय, व्रतीना व्रत बारे ठाणीये ॥ १७ ॥ अणगार साधू हो, ते पंच महाव्रत धार, सुमती गुप्ती क्रिया सिरे । ते धारी पाली हो, जिनाज्ञा प्रमाण, निर्वाण पाई मत्र ना फिरे ॥ १८ ॥ मिथ्या मतिनों हो, क्रोड पूस को तप, समदृष्टी नी समायिक तुले नहीं । सम्यक्ती नो म मत्र हो, श्रावक तुले नहीं होय, दो घडी साधू श्रावकसे बधे सही ॥ १९ ॥ इम जाणी ने हो, छोडो जग को जंजाल, संजम लेयो पासो सुख घणा । अल्प ए कष्ट हो, दु:ख

नष्ट करे अनंत, अक्षय सुख मिले भव्य जना ॥ २० ॥ कहणो हमारो हो, माननो थारे इखत्यार, मानोंगा तो सुख पावसो । नहीं तो भमसो हो, लक्ष चोरयासी मांय, किम मन में पछतावसो ॥ २१ ॥ कीजो २ हो, कीजो श्री जैन धर्म, परम अनोपम सुखदाइयो। इम सुण वाणी हो, खाणी अमृत समान, ज्ञानी भवी जन सुख पाइया ॥ २२ ॥ केइ समकित धारी हो, केइ लिया वृत बारह धार, केइ संजम लेवण उमाइया । उपदेश की दाखी हो, ए भली नवमी जी ढ़ाल, उजमाल अमोल ऋष गाइया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥ काम सांब भानू सुभानू, सुणी जिनवर का वेण । वैराग्य भाव दिल प्रगट्या, प्रफुल्लित हुया नेण ॥ १ ॥ पंचांग नमा वंदणा करी, इण विध करें अरदास। सत्य बचन हम सरधिया, आराधन हुया हुलास ॥ २ ॥ जननी जनक आज्ञा लई, लेसां संजम भार । क्षण न रहसां संसार मां, धर्म एक जाणो सार ॥ ३ ॥ जिम सुख होवे तिम करो, प्रतिबंध करणो नांय । सुणी बचन प्रभूजी तणा, कुंवर अति हरखाय ॥ ४ ॥ वंदणा करीने आविया, श्रीकृष्ण जी पास । करजोड़ी ऊभा रह्या, आणी अति हुलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १० मी ॥ (गाफल मत रहरे, मुशकिल है फिर यह अवसर पायवो ए—चंद्रायणा देशी) धन २ जे जग में, छोड़ें अथिर संसार ने ॥ टेक ॥ घणा खुशी देखी पूछे

जादव राय र, आज इण अती तुम भवन प देखाय रे, कारण कांई ते देवो फरमाय रे, अपूर्व दीठी न्याथी कोई वस्तु पाय रे, लाभ भास एसो हुयो छे कांय रे, पुत्र हो जे छे मन में थान न रक्खो छीपाय रे ॥ ध० १ ॥ कुमर कहे महाराज आज धन छे दिनो, मोटा पुण्य क जोग, भव्या भी नमिजिनो, कृष्ण कहे आज नेत्र थारा पवित्र गिनो, पुत्र कहे में प्रभु ने तुली नमन कीनो, तात कहे काया पवित्र आज हुई थे चिनो, तात हो आभा दीन, हजूर अगर्म न रहस्या क्षिणो ॥ ध० २ ॥ सुणी इम कुवर का वचन राय मूर छाइया, हरी हलधर दोई भ्रात भाम अती पाइया, धन्न पात राम वचन कठिन दरमा विया, लीयो धरणी को शरण अती घबराविया, करी पवन उपचार सामंत उठावीया, राय हो नेणा धरमे नीर मोक विलम्बाइया ॥ध० ३॥ दीक्षा लेवो कांई काज कमी कांइ थायरे, सुख रहसो सुख छांय फिकर कुछ नाय रे मोगवो मोग विलास मांगो जे चायरे, धाड विर करी न लखाय रे काल की देखी कुण त्यो लावो ओछाय रे, कुवर हो। एसो अवसर वार २ थांई आयरे ॥ध० ४॥ कुंवर कहे सत्य वचन पिताजी आपरा, छाये रास्तो आप मरू विड पापरा, मिनदो काल को जोर पई न फन्द तापरा, फिर डर नहीं सुख कोय मरण बिन मापरा, मोगई इच्छित मोग मरू न पड़े आंतरा, तात हो इता मो करो काम

मानूं वचन वापरा ॥ ध० ५ ॥ श्री जिनेश्वर देव काल को जाणे छे, सूर्य सुत जोरावर सब ने ताणे छे, अण चिंत्यो लेजाय जोवन न पिछाणे छे, मरया पाछे कांइ होय केणी प्रमाणे छे, नर भवादि अवसर मिल्यों पुण्य टाणे छे, तात हो! लेस्यू इणरो लाभ संजम गुण खाण छे ॥ ध० ६ ॥ वसुदेवादीराय आय समझावइ, तिण थी तेह कुंवर इम जणावइ, आप हुया छो दाना क्यों देवो अंतरावइ, म्हाने देखी लखो वैराग्य सजम लो ओछावइ, दूजाने दिया अंतराय हाथे कांइ आवइ, राय हो! सुणी इम कुंवर का वचन सब चुप रहावइ ॥ ध० ७ ॥ कहे हलधर हरीराय सुख होय जो कीजिये, माता पासे जाइ आज्ञा लीजिये, हर्ष आया जननी पास कह्यो तिम हीजिये, सुण जननी मुरछाय पडी धरणीजीये, निकली कर की चूड केश बिखरेजीये, माता हो! दास्या करयो उपचार चेती तत्क्षण जीये ॥ध०- ८ ॥ भामा जाम्बवती रुक्मणी ने नयणा नीर बही रह्या, जोवे मुख निरंतर अहो पुत्र क्या कह्या, तुम हम प्राण आधार किम सरे थाने गया, कांइ म्हारे घणां पुत्र थारे आधारे रह्या, ए वचन लग्या तिक्षण बाण फटे म्हारा हिया, कुंवर हो! चार दिन देखाड़ी सुख त्रासाने मत जिया ॥ ध० ९ ॥ नव महीना दुःख देखी मुशकले जन्म दियो, करी आखडी केइ यत्न इतो मोटो कियो, परण्या बहुली नार रिद्ध समृद्धियो, हमारी आसीश पड़ती नय सेवा

अब कीजियो, थाव मात सम अवर जगत में कुमभियो, कुंवर हो! ए छे पुत्र आधार दया अब लीजियो ॥ प० १० ॥ नंद कहै कर जोड सुणो हो मातजी, किम को जग में आधार कर्म लाया मापजी, पूर्व करणी अनुसार सुख दुःख दोनूं पात जी, स्वार्थ की जग-मात स्वार्थी जगतात जी, बिन मतलब नहीं कोय काम में आतजी, माजी हो! कालबली जगमांय अचानक खात जी, ॥ प० ११ ॥ तुम सरीखी हम मात पूर्व अनती करी, पहली मैं मरयो मुझ काज रोई आरत घरी, मुझ पहली मरी तह मं गेयो दुःख भरी, किणकी कीजे दया रहे नहीं कुम थिरी, पहली मरसे कुण न समझे मुझ जरी, मात हो! अमर राखूं तुम नाम आज्ञा दो अब करी ॥ प० १२॥ जननी निरुत्तर होय कहे सुणो कुंवार जी, हमरी नहीं कुछ नांय समझावो तुम नारजी, ते जो आज्ञा देय तो करो इच्छा मचार जी, इम सुण मात वचन आया महल मझार जी देखी राण्यां पति आम हर्षी अपारजी, राण्या हो! मरवार रीझावण काज करें सिणगार जी ॥ प० १३ ॥ करी मुगधोदक अंगोल शीश गूंथावीयो, महीन वस्त्र पहर कंचू तणावीयो, राखडी सिंदी झमणा हार ककण मुद्रलीयो, कंदोरा सांटा कम्मा वीछवा सब समावीया फुल पहर बीडा चाय दीसे दंत्रावीया, राण्या हो! आय ऊभी पिउपरे हंसी बतलावीया ॥ प० १४ ॥ अघो दृष्टी भी भरतार कहे सुणो

राणीया, सुणी जिन वाणी आज भोग खोटा जाणीया, लेसां संजम भार रजादो शाणीया, सुणी पिउ का वचन बिलखी कामनीया, उतर्यो हर्ष को पूर ज्यूं नदी पाणीया, स्वामीहो! बोलें करजोड़ नरमाय मधुर मीठी बाणीया ॥ ध० १५ ॥ हम अबला आप नाथ वालेश्वर छो सही, प्राण जांय ऐसो वचन कदी काढ़णो नहीं. क्यों लेवो संजम भार कमी किसी रही, हम सरीखी सुन्दर नार साहबी इंद्र छही, जोबन को लेवो लाभ भोगी लच्छी यही, पति हो! वृद्ध पणो जद आय लीजो दीक्षा ग्रही ॥ ध० १६ ॥ पती कहे सुनो नार भोग विष सारीखा, अधोगति को दुवार संग जे नारीका, क्षण मात्र को सुख दुःख अपारी का, विष परे विषय भोग परणम्या प्राण हारी का, पलक की खबर नांय कुण जाणे वृद्धकारी का, नारी हो, परणस्यां मुक्ति नार लेसां सुख सारीका ॥ ध० १७ ॥ सत्य कही प्रभू बात संजम दुःख कर घणो, पग उघाड़े चालणो करणो लोच केशनो, सीयाले सहे सीत उनाले तापनो, भूमी सेज भीख मांगण धोवण पाणी पीवणो, इत्यादि कठिन आचार कठालग केवणो, पति हो, नहीं पल्या से आचार पडसे पछतावणो ॥ ध० १८ ॥ वैरागी कुंवर कहे सुणो सकल थे नारी हो, कायर ने कहो ए बात जेने दुःख कारी हो, हम क्षत्री के पुत्र पग न देवां पीछारी हो, इण थी अनंत गुण दुःख सही नर्कमांरी हो, क्षण दुःख

सुख भय द पामां सुख अपारी हो, राखी हो ! लेसां संजम मार दूर न लगारी हो ॥ ध०
१९ ॥ आप बिना हम जन्म पती किम गमावसां, आप लेषो सजम मार तो हम सग आवसां,
नहीं छोडां आप संग प्रीत निभावसां, इम सुण नारी वेम हरस्प्या कुमारसा, सर्व की हुई
आज्ञा यह चित सजममे वसा, माई हो ! हुवा कुंवर तय्यार दीक्षा लेवा हुलासा ॥ ध०
२० ॥ मामा रुक्मणी जांबुवती ए बात जाणी करी, उपनो मन में वैराग कुंवर आवे पर
हरी, फिर कांइ करणी ए रिद्ध लेवा सजम धरी आई कृष्ण क पास आज्ञा मांगे हप मरी,
हरी सुणी मरजाय सर्व सुख कोड़ें तरी, माई हो ! उत्तर प्रति उत्तर हुवा घणा हारी आज्ञा दीनी
हरी ॥ घ २१ ॥ गिरधर जाणी तास तैयारी सब तणी, मांड्यो दीक्षा ओछव करी शोभा
घणी, बुलायो विद्याधर साथ आया दुवारा मणी, तात मात सासू सुसरा समझावे करें तेह
तणी हुवा घणा जबाब सवाल न माने तनुजा घणी, सब हो, हुवा असमे खुप तैयारी कीधी
ठणी ॥ ध० २२ ॥ गज गाजी रथ मैन्य शृंगार सजावीया, हजार पुरुष उठाय पालकी सो
लावीया, खर मुंडन कराय चउरंगुल केश ठावीया, वस्त्र भूषण सजाय शिवकामें वेठावीया,
माता राण्या वेठी पासे चमर ढुलावीया, सब हो, सब परवार सग सग चलावीया ॥ ध०
२३ ॥ हरी हलधर दसार और सब राजवीया, सम समर आदी सर्व विद्याधर मावीया,

यादव खेचरणी नार गायन धन गाजीया, बाजित्र गरणाय गगन गरणाजीया, धन २ कहें सब विश्व छोडे राज साजीया, इम हो, आया बाग ने पाम उतरया वाहन ताजीया ॥ ध० २४ ॥ आइ प्रभू जी पास बंदणा विध सूं करी, ईशाण कोंण में आय उतारया वस्त्र सारी, लोच करें स्वहस्त कृष्ण खोली पाथरी, झेलें दर्शणे वाल नेणे नीर रह्यो झरी, राणी कुंवर साधू भेष पहरे वस्त्र वरी, सब हो आया जिनवर पास ऊभा हर्ष भरी ॥ ध० २५ ॥ हरी हलधर करजोड कहें प्रभू भणी, और प्रभू आपने देवें भिक्षा घणी, अति प्यारा मुझ पुत्र राणी बहू ए गुणी, मन वज्रधरे वहरावूं एटणी, राखजो सुख रे मांय देजो शिव रमणी, राय हो, सब सूं कहे कृपा कर होजो मुक्तिधणी ॥ ध० २६ ॥ स्वमुख नेम भगवान संजम सब ने दियो, सर्व जणा लुली तिणवार सर्व ने वंदण कियो, चाल्या नगर भणी सर्व शून्य दीसे सायवियो, हरीने राणी पुत्र बिन व्यर्थ लागे जियो, सुख थी पाले राज आनंद वर्तीरह्यो, श्रोता हो, पंच में खंडे दश ढाल कहे अमोलक यों ॥ ध० २७ ॥

॥ दोहा ॥ कृष्ण सरीखा तात जी रुक्मणी सरीखी माय । राण्या इंद्राण्या सरखी, रिद्धी सिद्धी सवाय ॥ १ ॥ समर्थाई पोते घणी, प्रभुताई पण अपार । सिद्ध होय इच्छा सभी, जादव सो परवार ॥ २ ॥ सब अनित्य जाणी तज्या, सुणी एक ही वखाण । धन २

मग पहुया नर, जन्म्या ही प्रमाण ॥ ३ ॥ इण काले नाना विधे दें मुनिवर उपदेश । तो हीन हुवे तुच्छ रिद्ध, अरूप नार अल्प रेस ॥ ४ ॥ सर्व मनो वांछित रिद्धने, छोड़ी सांच जी काम । तो क्यों नहीं पाम करो, शिव मपलमरूप ठाम ॥ ५ ॥

॥ढाल ११ मी॥ (मोहन सिंहासण रेवती–ए देशी) जय २ प्रदुम्न ऋषीजी मुनिवरो

॥ टेक ॥ श्री नेमी प्रभूजी सर्व साधूने, शुभजी गणधर ने दीपवो । सर्व सतीयों ने तप सारतो । प्रद्युम्ना शिक्षा चारित्र की, दोई में प्रवीन हुवा अपार वो ॥ ज० २ ॥ करणी प्रभूजी, राजमती की सुप्रत कीपवो ॥ज०१॥ विनय मक्ति कर सीखीया, असेवना ज्ञान शिक्षा मांही अति आकरी, सुण कायर कंपायतो । महाव्रत सुमति गुप्ती विशुद्ध, ब्रह्मचय में दृढ़ सबाय तो ॥ ज० ३ ॥ राज्या पहरया संसार में, कनक मुक्ता एकावली हार तो । तिण समाधे सजम लिये, तपस्या मांही सांडा धारतो ॥ज० ४॥ श्री मदन ऋषजी सांब ऋषजी ने, धर्म प्रीती भर पूर तो । श्री मानू सुमानू ऋषजी, ए युग जोड़ दीर्घ तप घरतो ॥ज०५॥ तप करें कई प्रकारना पारणा दिन करें तुच्छ आहार तो । ज्ञान ध्यान में सदा मगन रहें, धांत हुया कषाय न मारतो ॥ ज० ६ ॥ सम भावी अप्रमादी चित्त सदा, धर्म शुक्ल ध्यावत तो । घणा देश फरसी करी, गढ़ गिरनार आवंत वो ॥ ज ७ ॥ एकदा ध्यान

घ्यावंता, आयो अपूर्व करण तो। क्षपक श्रेणी आदरी मोह प्रकृती नो कृता मरण तो ॥ज० ८॥ सूक्षम संपराय रही करी, क्षीण मोहनी ने कीध तो। घन घाती कर्म खपाइया, प्रगटी अनोपम रिद्ध तो ॥ ज० ९ ॥ अक्षय अखंड निरामय, संपूर्ण लोका लोक भास तो। केवल ज्ञान केवल दर्शन हुयो कामजी ने प्रकाश तो ॥ ज० १० ॥ सुरेंद्र खगेंद्र नरेंद्र नों, मिल्यो तिहां बहू ठाठ तो। केवल महिमा करी घणी, वर्त्यो आनंद गहगाट तो ॥ ज० ११ ॥ देशना दीधी केवली, अनित्य छे एह शरीर तो। वैभव नहीं छे शाश्वता, धर्म छे सागे पीर तो ॥ ज० १२ ॥ इम देशना सांभली जी, बूझा घणा भव्य लोकतो। किताइ संजम आदर्यो, व्रत सम्यक्त किता रोकतो ॥ ज० १३ ॥ किताक काल तिहां रही, कीधो तिहां थी विहार तो। सांब भानूजी पण पामीया, केवल ज्ञान श्रेयकार तो ॥ ज० १४ ॥ अंत अवसर अनशन करी, पाया शिव सुख सार तो। भामा जी रुक्मणी जी जांबूवती जी, पहुंची तीनूं मोक्ष मंझार तो ॥ ज० १५ ॥ सुभानू अने बीजी राणीया, जासी भवकर मोक्ष मंझार तो। इत्यादी प्रद्युम्न चरित्र को, अधिकार हुयो सुख दातार तो ॥ ज० १६ ॥ इम जाणी सुणी निरवद्य पुण्य में, करो उद्यम निशदीश तो। तो श्री मदन कुंवर परे, पूरसे थारी जगीश तो ॥ ज० १७ ॥ देखो रुक्मणी मोरड़ी अंतराय थी, पाई पुत्र वियोग तो। इम

आणी अंतराय न दीजिय, वो पाप सो दुःख भोगवो ॥ ज० १८ ॥ हेमरथ मधुराय ने दुःख दिया, तिम हरण हुयो मदन वो । इम जाणी परजीव को, कदी मत दुःखाओ मनवो ॥ ज० १९ ॥ कनक मालाने छन्द कियो, मदन को मन नहीं चलियो लगार वो । तिम नारी वशमें मत पड़जो, पापसो दुःख अपार वो ॥ ज० २० ॥ इत्यादि सारांस मही, भवी आदरजो शुभ लोकतो । वो भी काम कुंवर पर पामसो वांछित थोकतो ॥ज०२१॥ छेनट संजम आदरी पाया परम आराम वो । तिम संजम लेवो अवसर पाई, सिद्ध होवे निवित कामतो ॥ ज० २२ ॥ श्री वर्द्धमान स्वामी पाट, सुधर्मा स्वामी जाणतो । इम पाटानुपाट चालतो, हुआ लवजी ऋषजी भागवान वो ॥ ज० २३ ॥ तस पाटे श्री सोम जी ऋषजी, पूज्य कान जी ऋषजी महाराज वो । श्री तारा ऋषजी विचरया गुजरात में, ऋषजी तारण जहाज वो ॥ ज० २४ ॥ पूज्य श्री धनजी ऋषजी दादा गुरू श्री खूबा ऋषजी महाराज वो । क्रिया ज्ञान क्षमा के सागरू, तस्य शिष्य श्री चेना ऋषजी गुरूराज वो ॥ ज० २५ ॥ श्री रत्न ऋषजी पासे रही, बालक ख्याल समान वो । पुण्य कल्पद्रुम प्रद्युम्न कुंवर को, चरित्र कियो पुण्य प्रमाण वो ॥ ज० २६ ॥ पिंगल पुराण नहीं आवू मैं, अल्पमती सुवस चणाय वो । चारी तीर्थ ने लोले मेरुं, कृपा कर सुधारो कवीराय वो

॥ज० २७॥ जिनाज्ञा विरुद्ध जो जोड़ीयो, तीर्थ सिद्ध आत्म साख तो। मिच्छामी दुकडं मुजने होज्यो, कर्ता इण पर भाख तो ॥ज० २८॥ श्री वीर सम्वत चोवीस से उगणती-से, विक्रम उन्नीमसे गुण साठतो। आसोज सुद सातम वुधवारे, पूर्ण कीधो यो पाठतो ॥ ज० २९ ॥ दक्षिण देशे पेठ शोभती, कोकाना ग्राम की जाणतो। स्थानक मांहे कियो चौमासो, सुखे रह्या तीन ठाण तो ॥ ज० ३० ॥ जय २ सदा जैन धर्म की, वक्ता श्रोता सदा जयकार तो। ह्रीं श्रीं संपदा कृता पामे, मनोवांछित फल पावे श्रेकार तो ॥ज० ३१॥ पुण्य प्रभाविक मदन चरित्र की, एह हुई पचावन ढालतो। वक्ता बांच जो यथातथ रसे, श्रोता सुणजो होइ ने उजमाल तो ॥ ज० ३२ ॥ वाग देवी गुरु देव प्रसादसें, अमोलक ऋष कहे छे एम तो। पुण्य कल्पवृक्षरस प्रासता, सदावर्ते सवने सुख खेम तो ॥ज०३३॥

॥ हरी गीत छंद ॥ श्री प्रद्युम्न कुंवार के मित्र अवतार, सांब कुवर को भयो। भामा सुभानूनंद, सभाके मध्य हुइ सांब की जयो। राग थी मोही नर नार वेदर्भी दारसं प्रणय थयो! आप लियो संजम भार तर्यो परवार छेवटे शिवपुर गयो ॥ १ ॥ पुण्य कल्पद्रुम समंद दाता आनंद ढाल सागरे बांचयो। तम अनुसार रच अपार श्रेकार ग्रंथ जाणी कयो॥ पांच खंड बहु रस मंड ढाले पचावन भयो। मदन वा सांब भानू सुभान रुक्मणी भामा

जांपूरती जगा ॥ २ ॥ इत्यादिक को समाम शुभ हुलास सार २ लीजीये । शक्ती मुजब
करो धम त्यागन मम मन ए दीजिये ॥ ध्यान में राख्व जो भाव हिये रमाव इम धरती
जीवे । सो पारग निति नैन जिनवर वेन में निष रीझीय ॥ ३ ॥ समकित रूप दृढ मूल
धम को गूढ चउ धर्म ध मासा करी । संजम रूपी प्रति साख क्रिया शुभ पत्र तप पुष्प
मिन्न मही ॥ लाग मोक्ष रूप फल निरोग सुख अचल मरयो तिणमें गेह गही । इणतरे ए
कल्पद्रुम कयो सुख म्हम आराध मन्न मही ॥ ४ ॥ देव अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ धर्म केवली
परूपियो । ए आराध आतम माघ धन २ तेनो जियो ॥ ए गावे गवावे सुणे सुणावे वस
सुख धरते किपो । कहे अमोलक श्रप देव गुरू प्रशाद परम सुख मेळियो ॥ ५ ॥

इति पुण्य कल्पद्रुम धर्म अधिकार पंचम स्कंध:

अस्मिन् हुलास ढाल ११ दोहा ९२ पंचम खंड संपूर्ण ।

इति श्री मधुस चरित्र समाप्तम् ।